THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

# स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 185 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) भाद्रपद शु.7 2080 शुक्रवार, 22 सितंबर-2023

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये


# विदेश मंत्रालय ने आरोपों को राजनीति से प्रेरित बताया

## निलंबित वीजा सेवाओं पर कही बड़ी बात

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। कनाडा मसले के बीच विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को साप्ताहिक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने कनाडा में निलंबित वीजा सेवाओं से लेकर हर सवाल का जवाब दिया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा कि मामले में कुछ हद तक पूर्वाग्रह है। कनाडा सरकार ने आरोप लगाए हैं और उन पर कार्रवाई की है। हमें ऐसा लगता है कि कनाडा सरकार के ये आरोप मुख्य रूप से राजनीति से प्रेरित हैं।

**कनाडा मामला**

भारत-कनाडा राजनयिक विवाद पर बागची ने कहा कि कनाडा के ज्यादा राजनयिक हमारे यहां है। इस मामले में हमारी संख्या काफी कम है। आने वाले दिनों में दूतावास के और कर्मचारी कम किए जाएंगे। हमने कनाडा सरकार को सूचित किया है कि हमारी पारस्परिक राजनयिक उपस्थिति में समानता होनी चाहिए। उनकी संख्या कनाडा में हमारी तुलना में बहुत अधिक है।

**कनाडा में भारतीय वीजा सेवाएं निलंबित**

इससे पहले कनाडा में भारतीय वीजा सेवाएं निलंबित कर दी गईं। अब कानाडा के नागरिकों वीजा सेवा का लाभ नहीं उठा पाएंगे, यानी वे भारत नहीं आ पाएंगे। इस पर अरिंदम बागची ने बताया कि अगले आदेश तक वीजा सेवाएं निलंबित रहेंगी। कनाडा के नागरिक फिलहाल भारत नहीं आ सकेंगे। कनाडा में रहने वाले भारतीय छात्रों के बारे में विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि हमने सावधानी बरतने के लिए एक एडवाइजरी जारी की है। हमारा वाणिज्य दूतावास वहां काम कर रहा है। हमने कहा है कि अगर उन्हें कोई समस्या आती है, तो वे हमारे वाणिज्य दूतावास से संपर्क करें। हमारी वीजा पॉलिसी से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए, क्योंकि वे भारत के नागरिक हैं।

**कनाडा के और राजनयिक वापस जाएंगे :**

उन्होंने कहा कि कनाडा के राजनयिक ज्यादा संख्या में भारत में है, जबकि भारत के राजनयिक उतनी संख्या में कनाडा में नहीं हैं। ऐसे में कनाडा के और राजनयिक वापस जाएंगे, ये संख्या बराबर हो सके। कनाडा में वीजा सेवाओं की मौजूदा स्थिति पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा कि आप कनाडा में हमारे उच्चायोग और वाणिज्य दूतावासों द्वारा सामना किए जा रहे सुरक्षा खतरों से अवगत हैं। इससे उनका सामान्य कामकाज बाधित हो गया है। हमारे उच्चायोग और वाणिज्य दूतावास अस्थायी रूप से वीजा आवेदनों पर काम करने में असमर्थ हैं। हम नियमित आधार पर स्थिति की समीक्षा करेंगे।

**कनाडा से कोई विशेष जानकारी नहीं मिली :**

भारत-कनाडा विवाद पर बागची ने कहा कि हमें उपलब्ध कराई गई किसी भी विशिष्ट जानकारी पर गौर करने के लिए तैयार हैं, लेकिन अभी तक हमें कनाडा से कोई विशेष जानकारी नहीं मिली है। हमारी ओर से कनाडा में रहकर कुछ लोगों के द्वारा आपराधिक गतिविधियों के बारे में विशिष्ट सबूत कनाडा के साथ साझा किए गए हैं, लेकिन उन पर कार्रवाई नहीं की गई है।

**भारतीय वाणिज्य दूतावास में सुरक्षा बढ़ाने पर यह बोले :**

कनाडा में भारतीय वाणिज्य दूतावास में सुरक्षा बढ़ाने के सवाल के जवाब में अरिंदम बागची ने कहा कि हमारा मानना है कि सुरक्षा प्रदान करना मेजबान सरकार की जिम्मेदारी है। कुछ जगहों पर हमारी अपनी सुरक्षा व्यवस्था भी है, लेकिन इस पर सार्वजनिक रूप से चर्चा नहीं करना ठीक नहीं है। यह उचित स्थिति नहीं है।

**आरोप राजनीति से प्रेरित :**

बागची ने यह भी कहा कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने जो भी आरोप लगाए हैं, उनके संबंध में उन्होंने कोई सबूत नहीं दिए गए हैं। इन सबके विपरीत भारत ने कई लिखित दस्तावेज कनाडा को सौंपे हैं।

## कनाडाई उच्चायोग का बयान : भारत में खुले हैं दूतावास, जारी रहेंगी सेवाएं

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। भारत में कनाडाई उच्चायोग, वाणिज्य दूतावास खुले हैं और ग्राहकों को सेवा देना जारी रखेंगे। उच्चायोग ने गुरुवार को सूचित करते हुए बताया कि ग्लोबल अफेयर्स कनाडा हमारे मिशनों और कर्मियों की सुरक्षा और संरक्षा की लगातार निगरानी करता है, क्योंकि हम किसी भी घटना पर प्रतिक्रिया देने के लिए एक सख्त सुरक्षा प्रोटोकॉल बनाए रखते हैं।

इसमें कहा गया है कि मौजूदा माहौल के मद्देनजर जहां तनाव बढ़ गया है, हम अपने राजनयिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कार्रवाई कर रहे हैं। कुछ राजनयिकों को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर धमकियां मिलने के बाद, ग्लोबल अफेयर्स कनाडा भारत में अपने कर्मचारियों का आकलन कर रहा है । ग्लोबल अफेयर्स कनाडा एक कनाडा सरकार का विभाग है जो कनाडा के राजनयिक और कांसुलर संबंधों का प्रबंधन करता है। कनाडाई उच्चायोग ने कहा कि उसने भारत में मौजूद कर्मचारियों को अस्थायी रूप से समायोजित करने का फैसला किया है। इसमें कहा गया है कि व्यापार और परिचालन की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए हमारे सभी स्थानों पर राजनयिकों और स्थानीय स्तर पर लगे कर्मचारियों की तैनाती है।

## एल्गार परिषद केस : ज्योति जगताप को सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं

*जमानत रद्द होने के खिलाफ याचिका पर सुनवाई स्थगित*

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट से एल्गार परिषद-माओवादी संबंध मामले में गिरफ्तार कार्यकर्ता ज्योति जगताप की मुश्किलें बरकरार हैं। कोर्ट ने उनकी जमानत से इनकार करने के बॉम्बे उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका को गुरुवार को चार सप्ताह के लिए स्थगित कर दिया। जगताप ने उच्च न्यायालय के 17 अक्टूबर, 2022 के आदेश को चुनौती देते हुए शीर्ष अदालत का रुख किया है, जिसने उसे जमानत देने से इनकार कर दिया था, यह कहते हुए कि उसके खिलाफ राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) का मामला "प्रथम दृष्टया सच" था और वह किसी बड़ी साजिश का हिस्सा थी, जो कि प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) संगठन द्वारा रची गई। न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस और न्यायमूर्ति बेला एम त्रिवेदी की पीठ ने जगताप की ओर से अदालत में पेश वकील अपर्णा भट्ट द्वारा एनआईए के हलफनामे पर प्रत्युत्तर दाखिल करने के लिए समय मांगने के बाद मामले को स्थगित कर दिया। शीर्ष अदालत ने जगताप को अपना प्रत्युत्तर दाखिल करने के लिए तीन सप्ताह का समय दिया। 28 जुलाई को, न्यायमूर्ति बोस की अध्यक्षता वाली पीठ ने एल्गार परिषद-माओवादी संबंध मामले में कार्यकर्ता वर्नोन गोंसाल्वेस और अरुण फरेरा को जमानत दे दी, यह देखते हुए कि वे पांच साल से हिरासत में थे।

## भारत ने कनाडाई नागरिकों के लिए वीजा बंद किया

*सरकार ने कहा-हमारे डिप्लोमेट्स को धमकी मिल रही, सुरक्षा कारणों से फैसला किया*

ओटावा, 21 सितंबर (एजेंसियां)। खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के मुद्दे पर भारत और कनाडा के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है। कनाडा में मौजूद भारत के वीजा एप्लिकेशन सेंटर ने गुरुवार को कनाडा के लोगों के लिए वीजा सेवाएं सस्पेंड कर दीं। भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि कनाडा में हमारे डिप्लोमैटिक यूनिट को धमकियां मिल रही हैं।

वे अपना काम नहीं कर पा रहे हैं। यही वजह है कि वीजा सर्विसेज सस्पेंड की गई हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, हमें काफी समय से पता है कि पाकिस्तान आतंकवाद का मददगार है और उन्हें पैसे भी देता है। वहीं, कनाडा आतंकियों को रहने और उनके मंसूबों को अंजाम देने की जगह दे रहा है। इससे पहले, भारत के विदेश मंत्रालय ने बुधवार को कनाडा में रहने वाले अपने नागरिकों के लिए एडवाइजरी जारी की थी। जिसमें कहा गया था-, कनाडा में जारी भारत विरोधी एक्टिविटीज के मद्देनजर वहां रहने वाले या वहां की यात्रा पर जाने वाले नागरिकों को सलाह दी जाती है कि वो बहुत सतर्कता बरतें। एडवाइजरी में कहा गया था, हालिया वक्त में देखा गया है कि कनाडा में मौजूद इंडियन डिप्लोमैट्स और इंडियन कम्युनिटी के एक खास तबके को धमकियां दी जा रही हैं। ये वो लोग हैं जो भारत विरोधी एजेंडे का विरोध करते हैं। कनाडा में बिगड़ते हुए सुरक्षा हालात के मद्देनजर वहां मौजूद इंडियन स्टूडेंट्स को सबसे ज्यादा सतर्क रहने की सलाह दी जाती है। भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा था कि इंडियन कम्युनिटी और स्टूडेंट्स हाईकमीशन और कॉन्स्युलेट्स की वेबसाइट पर शिकायत दर्ज करा सकते हैं। मंगलवार को कनाडा ने भी अपने नागरिकों को भारत के कुछ खास हिस्सों में न जाने के लिए एडवाइजरी जारी की थी।

## राहुल ने कुली की यूनिफॉर्म पहनी, सिर पर सामान उठाया

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी गुरुवार सुबह दिल्ली के आनंद विहार आईएसबीटी पहुंचे और कुलियों से मिले। यहां उन्होंने कुली की लाल यूनिफॉर्म पहनी और बैज भी लगाया। इसके बाद उन्होंने सिर पर सामान उठाया। इस दौरान उनके साथ मौजूद कुली राहुल गांधी जिंदाबाद के नारे लगाते नजर आए। राहुल ने इसके बाद कुलियों से बातचीत की और उनकी परेशानियों के बारे में पूछा। इसे लेकर कांग्रेस ने ट्वीट किया, जननायक राहुल गांधी जी आज दिल्ली के आनंद विहार रेलवे स्टेशन पर कुली साथियों से मिले। पिछले दिनों एक वीडियो वायरल हुआ था जिसमें रेलवे स्टेशन के कुली साथियों ने उनसे मिलने की इच्छा जाहिर की थी। आज राहुल जी उनके बीच पहुंचे और इत्मीनान से उनकी बात सुनी।

## चांद पर उतरने वाले देश में मैला ढोने की प्रथा कैसे

*कार्ति चिदंबरम का सरकार पर तंज, भाजपा का पलटवार*

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। संसद के विशेष सत्र के चौथे दिन लोकसभा में चंद्रयान-3 मिशन की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में अन्य उपलब्धियों पर चर्चा की गई। इस दौरान कांग्रेस सांसद कार्ति चिदंबरम ने जहां चंद्रयान की सफलता के लिए इसरो को बधाई दी वहीं, मैला ढोने की प्रथा को लेकर सरकार पर निशाना भी साधा। उन्होंने कहा कि चंद्रमा पर अंतरिक्ष यान उतारने वाला देश अब भी मैला ढोने की प्रथा कैसे अपना सकता है। देश में वैज्ञानिक सोच बनाए रखना जरूरी है।

आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि लोगों के मन में अक्सर आस्था और अध्यात्मवाद के बीच भ्रम पैदा हो जाता है। हमारे देश में अध्यात्मवाद और विज्ञान पर सवाल उठाया जा सकता है, लेकिन आस्था पर सवाल नहीं उठाया जा सकता। ऐसे में यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम भारत के वैज्ञानिक स्वभाव को बनाए रखें, जिसे इसरो ने प्रदर्शित किया है।

**हम विरोधाभास कैसे रख सकते हैं :**

अपने संबोधन में मैला ढोने की प्रथा और सड़कों में गड्ढों की समस्या की ओर उन्होंने सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने कहा कि यह आश्चर्यजनक है कि एक ओर भारत चंद्रमा पर उतर रहा है, वहीं, दूसरी ओर देश में अभी भी मैनुअल स्कैवेंजिंग और गड्ढों जैसी समस्याएं हैं। उन्होंने कहा कि हम हर किसी के लिए उपग्रह कैसे लॉन्च कर सकते हैं, जब मानसून में सड़कों का प्रबंधन नहीं कर सकते। हम यह विरोधाभास कैसे रख सकते हैं? अगर हम अपने द्वारा की जा रही वैज्ञानिक प्रगति का लाभ खुद के लिए नहीं उठा सकते, तो निश्चित ही हमारे समाज में कुछ गंभीर रूप से गलत है। उन्होंने यह भी कहा कि मैं पूरी तरह से समझता हूं कि हमारी विरासत और इतिहास विज्ञान और खगोल विज्ञान के साथ बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है। हमें अनुसंधान करने, परीक्षण करने और अपनी जड़ों में वापस जाने की जरूरत है ताकि यह पता लगाया जा सके कि हमारे पास जो विज्ञान था उसे हमने कहां खो दिया। इस दौरान कार्ति चिदंबरम ने सरकार से सरकारी स्कूलों के अधिक से अधिक छात्रों को इसरो में शामिल होने में सक्षम बनाने के लिए फेलोशिप और छात्रवृत्ति शुरू करने का भी आग्रह किया। इस बीच, भाजपा सांसद जयंत सिन्हा ने उनको जवाब दिया। उन्होंने कहा कि विज्ञान और 'संस्कार' (संस्कृति) भारतीयों के लिए एक साथ चलते हैं। इसमें कोई विरोधाभास नहीं है।

## लीडर को लीडर बनना पड़ेगा, राहुल गांधी पर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कसा तंज

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। राहुल गांधी द्वारा पूछे गए सवाल पर बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने राहुल गांधी पर तंज कसते हुए कहा, लीडर को लीडर बनना पड़ेगा। ट्यूटर से काम नहीं चलता है। एनजीओ को लेकर आ जाते हैं। वो आपको समझाते हैं और आप बोलकर निकल जाते हैं। ऐसे तो नहीं चलेगा। राहुल गांधी ने लोकसभा में अपने भाषण के दौरान सरकार पर सीधा हमला करते हुए पूछा था कि सरकार में कितने कैबिनेट सेक्रेटरी ओबीसी है। इस सवाल पर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने प्रतिक्रिया दी।

उन्होंने कहा कि पहले वे ये बताएं 2004 से 2014 के बीच कितने सेक्रेटरी ओबीसी थे और कहां थे। उन्होंने कहा, नेहरू कार्यकाल में काका कालेलकर की रिपोर्ट आई थी। इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के समय में मंडल कमीशन की रिपोर्ट आई थी।

*रजाकार के टीजर पर भड़के ओवैसी*

## लोगों की भावनाओं को भड़काने की कोशिश

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। फिल्म रजाकार विवादों में घिर गई है। हाल ही में इसका टीजर जारी किया गया था, जिसके बाद इस पर राजनीतिक दलों के बीच जुबानी जंग छिड़ गई है। बहुभाषी फिल्म का टीजर ने तेलंगाना में भाजपा और सत्तारूढ़ भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के बीच एक नए विवाद को जन्म दे दिया है। विधानसभा चुनाव से कुछ महीने आए इस टीजर पर दोनों दलों के बीच मामला शांत होता नहीं दिख रहा है।

**बीआरएस ने साधा भाजपा पर निशाना :**

तेलुगु फिल्म 'रजाकर' के टीजर रिलीज पर अब बीआरएस एमएलसी के कविता और एआईएमआईएल सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने प्रतिक्रिया दी हैं। कविता ने इस पर बात करते हुए कहा, बीजेपी ने उन मुद्दों पर फिल्में बनाने का नया चलन शुरू किया है जो लोगों के बीच दूरियां बढ़ाएंगी। जब भी कोई चुनाव आता है कोई भी राज्य हो, वे लोगों की भावनाओं को भड़काने की कोशिश करते हैं, दुर्भाग्य से, इस बार यह हमारा तेलंगाना है। भाजपा नेता ने इस फिल्म का निर्माण किया है।

उन्होंने आगे कहा, मैं अपने तेलंगाना के लोगों से आह्वान करती हूं कि पिछले दस वर्षों में, हम शांति से रहे और बहुत अच्छी तरह से प्रगति की। हम एक ऐसा राज्य हैं जो शून्य सांप्रदायिक गड़बड़ी, सद्भाव और शांति के लिए जाना जाता है। इस देश के हर राज्य से लोग काम करने के लिए यहां रहने के लिए हैदराबाद आते हैं। इसलिए शांति की रक्षा की जानी चाहिए। इसलिए मेरी तेलंगाना के लोगों से अपील है कि वे ऐसी विवादास्पद फिल्मों को अस्वीकार करें।

**ओवैसी ने फिल्म को बताया काल्पनिक :**

वहीं, ओवैसी ने कहा, आजकल कल्पना पर आधारित फिल्में बन रही हैं, तथ्यों पर आधारित नहीं। हिन्दू मुस्लिम नफरत को फैलाने के लिए फिल्में बनाई जा रही हैं। चुनाव से पहले जो सरकार अपनी कामयाबी नहीं दिखा सकती, इसलिए नफरत फैलाना चाहती है। चुनाव आ रहे हैं, इसलिए खेल चल रहा है।

**हाल ही में जारी हुआ था टीजर :**

बता दें कि हाल ही में इस फिल्म का टीजर जारी किया गया था, जिसमें कई जिसमें कई रूह कंपा देने वाले सीन भी हैं। एक मिनट 43 सेकेंड के टीजर में ऐसे दिखाया गया है कि कैसे निजाम के शासन को कायम रखने के लिए कासिम रिजवी ने हर घर पर इस्लामी झंडा लगाने का आदेश दिया। ट्रेलर में 'रजाकार' बार-बार यह कहते हुए दिखते हैं कि हैदराबाद इस्लामी राज्य है।

## शशि थरूर : चंद्रयान-3 की सफलता में कई सरकारों का प्रयास शामिल

*वैज्ञानिक सोच के पीछे पंडित नेहरू*

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने लोकसभा में 'चंद्रयान-3 की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में हमारे राष्ट्र की अन्य उपलब्धियां' विषय पर अपना विचार रखा। इस विषय पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि चंद्रयान-3 की सफलता कई सरकारों की सफल प्रयास के बाद ही संभव हुआ है। इसलिए सफलता का श्रेय किसी एक व्यक्ति या सरकार को नहीं जाता है। थरूर ने कहा, भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान के लंबे कालखंड में पंडित जवाहर लाल नेहरू के योगदान को कौन नहीं मानेगा। आज भारत की वैज्ञानिक सोच पंडित नेहरू की वजह से है।

शशि थरूर ने इस चर्चा में अपने संसदीय क्षेत्र तिरुवनंतपुरम स्थित विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि महान वैज्ञानिक विक्रम साराभाई ने वैज्ञानिक अनुसंधान से संबंधित महत्व को समझकर ही देश में अंतरिक्ष अनुसंधान की नींव यहां रखी थी। कांग्रेस सांसद ने 1960 के दशक में विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र की स्थापना से लेकर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना के इतिहास और आंतरिक्ष में भारत की सफलताओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि देश के युवा भले ही आईआईटी जैसे संस्थानों की तरफ आकर्षित होते हैं, लेकिन चंद्रयान-3 की सफलता के पीछे शामिल वैज्ञानिक किसी भी 'ग्लैमरस' पृष्ठभूमि से नहीं आते हैं। ये सभी वैज्ञानिक तमिलनाडु, केरल और अन्य राज्यों के छोटे इंजीनियरिंग कॉलेजों से पढ़कर निकले हैं।

## चंद्रयान-3 के फिर जागने की उम्मीद

बेंगलुरू, 21 सितंबर (एजेंसियां)। चंद्रयान-3 के लैंडर और रोवर के एक बार फिर जागने की उम्मीद है। 14 दिनों की रात के बाद चांद के दक्षिण ध्रुवीय हिस्से पर एक बार फिर सूरज की रोशनी पहुंचने लगी है। इसरो स्लीप मोड पर डाले गए विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर से 22 सितंबर को संपर्क करने की कोशिश करेगा।

इसरो के मुताबिक, लैंडर और रोवर के सोलर पैनल पर सूरज की रोशनी पड़ते ही ये काम करना शुरू कर सकते हैं। इसरो ने 4 सितंबर को विक्रम लैंडर को स्लीप मोड में डाल दिया था। इससे पहले 2 सितंबर को प्रज्ञान रोवर को स्लीप मोड में डाला गया था। लैंडर ने स्लीप मोड में जाने से पहले पेलोड्स के जरिए चांद पर नई जगहों की जांच-पड़ताल की थी। उसके बाद ही विक्रम लैंडर को सोने का कमांड दिया गया। फिलहाल सारे पेलोड्स बंद हैं। सिर्फ रिसीवर ऑन है, ताकि वह बेंगलुरू से कमांड लेकर फिर से काम कर सके।

## हिमाचल और लेह-लद्दाख सीमा विवाद मामला विधानसभा में गूंजा

### विधायक रवि ठाकुर बोले-शिंकुला में 35किमी, सारचू में 14किमी अंदर घुसा पड़ोसी राज्य

शिमला, 21 सितंबर (एजेंसियां)। हिमाचल विधानसभा के मानसून सत्र में प्रदेश और लेह-लद्दाख के सीमा विवाद का मामला गूंजा। लाहौल स्पीति के विधायक रवि ठाकुर ने कहा कि शिंकुला में 35 किलोमीटर और सारचू में 14 किलोमीटर हिमाचल की सीमा में घुस चुका है। इसे गंभीरता से लेने की जरूरत है। विधानसभा में राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी की गैर-मौजूदगी में शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने इसका जवाब देते हुए कहा कि जल्द लेह-लद्दाख के साथ सीमा विवाद मामले को जल्द सुलझाया जाएगा। इसके लिए शीघ्र मीटिंग बुलाई जाएगी। इसमें स्थानीय विधायक को भी बुलाया जाएगा। लेह-लद्दाख के साथ पहले भी कई बार सीमा विवाद का मसला उठता रहा है। हिमाचल के लाहौल स्पीति में कभी लेह लद्दाख तो कभी चीन के साथ सीमा विवाद का मसला उठता रहा है।

दरअसल, रवि ठाकुर ने लाहौल स्पीति में बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग को लेकर सवाल पूछा था। उन्होंने कहा कि लाहौल स्पीति में ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की क्या तैयारी है। उन्होंने बताया कि लाहौल स्पीति से हर दिन 65 हजार से ज्यादा लोग लद्दाख जा रहे हैं। उन्होंने सरकार से मांग उठाई कि क्या लाहौल स्पीति में अलग से पुलिस फोर्स रखी जाएगी। सदन में इससे पहले भांग की खेती को वैध करने को लेकर चर्चा हुई। मुख्यमंत्री सुखविंदर सुक्खू ने कहा कि इसे लेकर सरकार ने राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी की अध्यक्षता में कमेटी गठित कर रखी है, जो प्रदेश व स्टेट से बाहर उत्तराखंड और राजस्थान का दौरा कर चुकी है। अब यह कमेटी चार देशों का दौरा करेगी।

## राष्ट्रपति आदिवासी इसलिए संसद के उद्घाटन में नहीं बुलाया

**उदयनिधि बोले-डीएमके पार्टी सनातन को खत्म करने के लिए ही बनी**

चेन्नई, 21 सितंबर (एजेंसियां)। तमिलनाडु के मंत्री और डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिन ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को नए संसद भवन के उद्घाटन कार्यक्रम में न बुलाए जाने को लेकर सवाल किया। उन्होंने कहा, राष्ट्रपति मुर्मू को इसलिए नहीं बुलाया गया, क्योंकि वो विधवा हैं और आदिवासी समुदाय से आती हैं।

उन्होंने तंज करते हुए पूछा, क्या इसे ही हम सनातन धर्म कहते हैं? सनातन को लेकर की गई अपनी पूर्व टिप्पणी पर उन्होंने कहा, लोगों ने मेरे सिर पर इनाम रख दिया है, लेकिन मैं इन सब चीजों से डरने वाला नहीं हूं। डीएमके पार्टी की स्थापना ही सनातन के खात्मे के लिए हुई थी और हम तब तक नहीं रुकेंगे जब तक अपने लक्ष्य को नहीं हासिल कर लेते हैं।

## हिंद महासागर को सुरक्षा देगा आईएनएस-विक्रांत जैसा दूसरा एयरक्राफ्ट कैरियर

**नौसेना ने प्रस्ताव रक्षा मंत्रालय को भेजा, 40 हजार करोड़ में बनेगा**

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। नौसेना ने रक्षा मंत्रालय को देश का दूसरा स्वदेशी एयरक्राफ्ट कैरियर-2 के निर्माण का प्रस्ताव दिया है। रक्षा मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक, यह एयरक्राफ्ट केरल के कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) ही से बनवाया जाएगा।

45 हजार टन के एयरक्राफ्ट कैरियर को बनाने में 40 हजार करोड़ से ज्यादा का खर्च आएगा। प्रस्ताव को पहले रक्षा खरीद बोर्ड, रक्षा अधिग्रहण परिषद और आखिर में पीएम की अध्यक्षता वाली सुरक्षा कैबिनेट समिति फाइनल करेगी। भारतीय नौसेना ज्यादा ताकतवर और न्यूक्लियर ऑपरेटेड 65 हजार टन का जहाज चाहती थी, जो 30 से ज्यादा एयरक्राफ्ट ले जाने में सक्षम हो। लेकिन कम बजट ने छोटे और इलेक्ट्रिक प्रोपल्शन आईएसी-2 को चुनने पर मजबूर कर दिया। सुरक्षा कैबिनेट कमेटी की मंजूरी मिलने और कॉन्ट्रैक्ट साइन होने के बाद कोचीन शिपयार्ड को आईएसी-2 बनाने में 8-10 साल लगेंगे।

# कनाडा में गैंगस्टर सुक्खा दुन्नेके की गोली मारकर हत्या

**आतंकी निज्जर के साथी अर्श डल्ला का राइट हैंड था; लॉरेंस गैंग ने ली जिम्मेदारी**

अमृतसर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। खालिस्तान टाइगर फोर्स के आतंकी हरदीप निज्जर के कत्ल को लेकर भारत-कनाडा के बीच तनाव के बीच कनाडा में भारत के ए कैटेगरी गैंगस्टर सुखदूल सिंह गिल उर्फ सुक्खा दुन्नेके का कत्ल कर दिया गया है। वह पंजाब से साल 2017 में जाली पासपोर्ट तैयार करवा कनाडा फरार हुआ था।

शुरुआती जानकारी के अनुसार सुक्खा दुन्नेके को कनाडा के विनीपिग में गोलियां मारी गई हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक दुनेके पर करीब 15 राउंड फायरिंग हुई है। मौके पर ही उसकी मौत हो गई। यह उन 41 आतंकियों व गैंगस्टरों की सूची में शामिल था, जिसे एनआईए ने भी जारी किया था। कनाडा में खालिस्तानी आतंकी निज्जर के कत्ल के बाद यह दूसरी बड़ी वारदात है। कत्ल किया गया गैंगस्टर सुक्खा को खालिस्तानी आतंकी-गैंगस्टर अर्शदीप सिंह उर्फ अर्श डल्ला का राइट हैंड माना जाता था। अर्श डल्ला आतंकी हरदीप निज्जर का करीबी साथी था। डल्ला उसके साथ मिलकर केटीएफ के आतंकी मॉड्यूल को हैंडल कर रहा था।

लॉरेंस गैंग ने गैंगस्टर सुक्खा दुन्नेके के कत्ल की जिम्मेदारी ली है। लॉरेंस गैंग ने सोशल मीडिया पोस्ट पर लिखा- हांजी सत श्री कॉल, राम राम सारेयां नूं। ये सुक्खा दुन्नेके, जो बंबीहा ग्रुप का इंचार्ज बना फिरता था उसका मर्डर हुआ है कनाडा के विनिपेग सिटी में, उसकी जिम्मेदारी लारेंस बिश्नोई ग्रुप लेता है। इस हेरोइन एडिक्टेड नशेड़ी ने सिर्फ अपने नशे को पूरा करने के लिए पैसों के लिए बहुत घर उजाड़े थे।

हमारे भाई गुरलाल बराड़, विक्की मिड्डूखेड़ा के मर्डर में इसने बाहर बैठकर सब कुछ किया था। संदीप नंगल अंबिया का मर्डर भी इसने करवाया था। पर अब इसके किए हुए पापों की सजा इसे मिल गई है। बस एक ही बात कहनी है, जो दुक्कियां-तिक्कियां अभी रह गई हैं, जहां मर्जी भाग लो, दुनिया में किसी भी देश में चले जाओ, ये न सोचो हमारे साथ दुश्मनी लेकर बच जाओगे, टाइम जरूर कम-ज्यादा लग सकता है लेकिन एक-एक को अपने किए कामों की सजा मिलेगी।

सुक्खा दुन्नेके पंजाब के मोगा के गांव दुन्नेके कलां का रहने वाला है। कैटेगरी 'ए' गैंगस्टर सुक्खा दुन्नेके अपराध की दुनिया में प्रवेश करने से पहले मोगा डीसी कार्यालय में काम करता था। वह 2017 में पुलिस की मदद से जाली दस्तावेजों पर पुलिस क्लीयरैंस सर्टिफिकेट प्राप्त करने के बाद कनाडा भाग गया था। तब उसके खिलाफ सात आपराधिक मामले लंबित थे। ये सभी मामले स्थानीय गिरोह की गतिविधियों से जुड़े थे।

काफी समय सुक्खा दुन्नेके ने फरीदकोट जेल में भी गुजारा और वह जमानत पर बाहर आने के बाद विदेश भागा। इतना ही नहीं, नंगल अंबिया कत्लकांड में भी दुन्नेके का नाम सामने आया था और आरोप लगा था कि इसने हथियार व शूटर उपलब्ध करवाए हैं।

# लैंड फॉर जॉब्स मामला..तीन अफसरों पर भी चलेगा केस

## सीबीआई को गृह मंत्रालय ने दी परमिशन; अब तेजस्वी के खिलाफ सुनवाई आज

पटना, 21 सितंबर (एजेंसियां)। लैंड फॉर जॉब्स मामले में बिहार के डिप्टी सीएण तेजस्वी यादव पर सुनवाई टल गई है। दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट में सीबीआई के स्पेशल कोर्ट में इस मामले की सुनवाई अब कल होगी।

इधर सीबीआई ने कोर्ट को बताया है कि तीन रेल अधिकारियों के खिलाफ केस चलाने की इजाजत गृह मंत्रालय से मिली है। रेल अधिकारी मनदीप कपूर, मनोज पांडे, डॉ. पीएल बंकर के खिलाफ केस चलाने की परमिशन मिली है। वहीं लालू यादव पर केस चलाने की गृह मंत्रालय ने पहले ही इजाजत दे दी है।

वहीं कल की सुनवाई में अगर कोर्ट सीबीआई की ओर से दायर चार्जशीट को एक्सेप्ट कर लेती है और तेजस्वी के खिलाफ एफआईआर चलाने की अनुमति देती है तो तेजस्वी यादव की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। उन्हें जमानत लेनी होगी। लैंड फॉर जॉब्स का ये पूरी तरह से नया केस है। पुराने केस में पहले ही राजद सुप्रीमो लालू यादव, बिहार की पूर्व सीएम राबड़ी देवी और बेटी और सांसद मीसा भारती जमानत पर हैं।

नए केस में भी लालू और राबड़ी को आरोपी बनाया गया है। इनके साथ तेजस्वी यादव को भी दोषी बताया गया था। सीबीआई ने 3 जुलाई को तेजस्वी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की थी।

12 सितंबर को केंद्र सरकार की ओर से सीबीआई को पूर्व रेल मंत्री लालू यादव पर केस चलाने की अनुमति मिल चुकी है। 1 महीने पहले सीबीआई ने केंद्र से लालू के खिलाफ मुकदमा चलाने की इजाजत मांगी थी।

सीबीआई ने कोर्ट को बताया है कि पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव के खिलाफ कथित लैंड फॉर जॉब्स केस में ताजा आरोप पत्र के संबंध में गृह मंत्रालय से मंजूरी मिल गई है। सीबीआई के मुताबिक उनकी तरफ से लालू यादव के अलावा रेलवे के 3 अधिकारियों के खिलाफ भी केस चलाने की अनुमति मांगी थी, जो मिल गई है। बता दें कि लैंड फॉर जॉब्स मामला तब का है, जब लालू यादव रेल मंत्री थे। इसलिए गृह मंत्रालय से अनुमति लेना जरूरी था। लैंड फॉर जॉब्स मामले में जांच के बाद ईडी लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार की 6 करोड़ 2 लाख रुपए की संपत्ति अटैच कर चुकी है। इसमें गाजियाबाद और बिहार की संपत्ति शामिल हैं। अटैच की गई संपत्तियों में नई दिल्ली के न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी स्थित डी-1088 है, जो आवासीय परिसर है। इसका स्वामित्व मेसर्स एबी एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड के पास है। आरोप है कि इस 4 मंजिल बंगले को साल 2011 में मात्र 4 लाख रुपए में अधिग्रहित किया गया था। इस पता पर लालू परिवार की कई कंपनियां रजिस्टर्ड है। इसका खुलासा इसी साल 10 मार्च को ईडी की तलाशी में हुआ था।

पटना के महुआबाग (दानापुर) की दो जमीन। इनमें एक का स्वामित्व राबड़ी देवी के पास और दूसरे का मेसर्स एके इंफोसिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड के पास है। पटना के बिहटा में एक जमीन। यह लालू यादव की बेटी राज्यसभा सांसद मीसा भारती के नाम पर है।

# रेलवे ने एक्सीडेंट मुआवजा राशि 10 गुना बढ़ाई

**अब मृतक के परिजन को 5 लाख और घायल को 2.5 लाख मिलेंगे**

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। रेलवे बोर्ड ने रेल दुर्घटना से जुड़ी राहत राशि में 10 गुना वृद्धि की है। इसके तहत ट्रेन हादसे में किसी की मौत होने पर सहायता राशि 50 हजार रुपए से बढ़ाकर 5 लाख रुपए कर दी गई है। गंभीर चोट के लिए सहायता राशि 25 हजार रुपए से बढ़ाकर 2.5 लाख रुपए कर दी गई है।

साथ ही मामूली चोट की स्थिति में सहायता राशि 5 हजार से 50 हजार रुपए की गई है। राहत राशि के अलावा यात्रियों को दुर्घटना के बाद अस्पताल का खर्चा भी विभाग उठाएगा। अस्पताल में 30 दिन से अधिक भर्ती रहे मरीज कितने गंभीर रूप से घायल हुआ है, उस आधार पर प्रतिदिन 3,000, 1,500 और 750 रुपए का खर्च मिलेगा। रेलवे बोर्ड ने 18 सितंबर 2023 को एक सर्कुलर जारी करके राहत राशि में वृद्धि की जानकारी दी है। नई राहत राशि इसी तारीख से लागू होगा। इससे पहले 2012-2013 में इस राशि में संशोधन किया गया था।

रेलवे क्रॉसिंग पर हुई दुर्घटना के लिए भी मिलेगी राहत राशि

सर्कुलर के मुताबिक, सड़क से चलने वाले वे लोग जो रेलवे की गलती की वजह से मैन्ड रेलवे क्रॉसिंग गेट एक्सीडेंट का शिकार हुए हैं, वे भी राहत राशि पाने के लिए मान्य होंगे। ट्रेन दुर्घटनाओं में मरने वाले लोगों के परिजन और मैन्ड लेवल क्रॉसिंग में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों को अब पांच लाख रुपए मिलेंगे, जबकि गंभीर रूप से घायलों को 2.5 लाख रुपए मिलेंगे। मामूली चोट लगने पर लोगों को 50 हजार रुपए मिलेंगे। इसके पहले तक यह राशि 50 हजार, 25 हजार और 5 हजार थी। सर्कुलर में ये भी लिखा है कि आतंकी हमला, हिंसक हमला या चोरी जैसी कोई अप्रिया घटना होने पर मृतक, गंभीर रूप से घायल और मामूली रूप से घायलों के आश्रितों को 1.5 लाख, 50 हजार और 5 हजार रुपए दिए जाएंगे। इससे पहले तक ये राशि 50 हजार, 25 हजार और 5 हजार रुपए थी।

# गोल्डी बराड़ के साथियों पर पंजाब पुलिस की रेड

## सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड का मास्टरमांइड गैंगस्टर सीक्रेट ऑपरेशन चला संदिग्ध पकड़े जा रहे

अमृतसर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। कनाडा और यूके में बैठकर अपना नेटवर्क चला रहे गैंगस्टर गोल्डी बराड़ के करीबियों को पकड़ने के लिए पंजाब पुलिस एक्शन में आ गई है। पंजाब भर में सुबह 7 बजे से सीक्रेट ऑपरेशन शुरू किया गया है। सभी जिलों में बड़े स्तर पर छापेमारी जारी है।

फिलहाल पुलिस का कहना है कि ऑपरेशन खत्म होने के बाद इस बारे में जानकारी दी जाएगी।

गौरतलब है कि गोल्डी बराड़ जेल में बंद कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई का खास है। लॉरेंस के कहने पर उसी ने पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला की हत्या कराई थी। जिस वक्त उसने कत्ल कराया, वह कनाडा में था। हालांकि बाद में उसके कनाडा से अमेरिका के कैलिफोर्निया भागने की भी खबरें आई।

वह कनाडा में बैठ लॉरेंस बिश्नोई के नेटवर्क को फैलाने, हथियारों की तस्करी, रंगदारी और हत्या जैसी घटनाओं को अंजाम देता रहा है। पंजाब में गोल्डी बराड़ की आपराधिक की घटनाओं के बाद एनआईए की तरफ से उस पर यूएपीए लगाया गया है। हर जिले में एक साथ उतरी टीमें, संदिग्ध राउंडअप कर रहेयह ऑपरेशन सुबह 7 बजे पूरी तरह से कॉन्फिडेंशियल रखते हुए शुरू किया गया। हर जिले एक साथ पुलिस टीमों ने रेड शुरू की।

इसमें गोल्डी बराड़ या लॉरेंस गैंग से जुड़े सभी संदिग्धों को पंजाब पुलिस राउंडअप कर रही है। गुरुवार शाम 5 बजे एडीजीपी इस पूरे मामले के बारे में विस्तृत जानकारी सांझा करेंगे।

पंजाब पुलिस की यह कार्रवाई राष्ट्रीय जांच एजेंसी द्वारा भारत में गतिविधियां चलाने वाले खालिस्तानी आतंकवादियों के खिलाफ अपनी जांच तेज करने के एक दिन बाद आई है। एजेंसी ने पाकिस्तान से एक्टिव हरविंदर सिंह संधू उर्फ 'रिंदा' और लखबीर सिंह संधू उर्फ 'लंडा' सहित आतंकवादी समूह बब्बर खालसा इंटरनेशनल के पांच सदस्यों के बारे में जानकारी देने के लिए नकद इनाम की घोषणा की थी।

# छत्तीसगढ़ में चुनावी साल में बड़े हमले की तैयारी

## आंध्र-तेलंगाना के माओवादी लीडर्स का बस्तर में जमावड़ा, कमांडर चैतू दे रहा नए युवाओं को ट्रेनिंग

दंतेवाड़ा, 21 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में इस साल अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। चुनावी साल है लिहाजा नक्सली किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में हैं। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के बड़े माओवादी लीडरों ने पिछले 2 महीने से बस्तर में डेरा जमा रखा है। दंतेवाड़ा, बीजापुर और सुकमा जिले के सरहदी इलाकों में नए युवाओं को तैयार किया जा रहा है। दरअसल, एक दिन पहले दंतेवाड़ा डीआरजी और बस्तर फाइटर्स फोर्स जिले के ककाड़ी, नहाड़ी, हिड़मा और छोटे हिड़मा के जंगल में घुसी थी। यहां नक्सलियों के साथ जवानों की मुठभेड़ हुई। करीब आधे घंटे तक हुई इस मुठभेड़ में जवानों ने 2 महिला नक्सलियों को ढेर कर दिया था।

जब जवानों ने घटना स्थल की सर्चिंग की तो पता चला कि यहां नक्सलियों का ट्रेनिंग कैंप था। 40 लाख का इनामी खूंखार नक्सली कमांडर चैतू, डीवीसीएम, एसीएम कैडर के हथियारबंद नक्सली भी मौजूद थे। चैतू की निगरानी में संगठन में शामिल नए युवाओं को ट्रेनिंग दी जा रही थी। चैतू समेत अन्य नक्सली जंगल का सहारा लेकर भाग निकले। मौके पर कई दस्तावेज बरामद किए गए हैं। पुलिस ने ट्रेनिंग कैंप को ध्वस्त कर दिया।

लंबे समय बाद दिखी मूवमेंट

पुलिस का दावा है कि, नक्सली कमांडर चैतू हाल ही में इस तरफ आया है। लंबे समय बाद उसका मूवमेंट देखने को मिला। अगस्त में नक्सलियों ने सुकमा-बीजापुर जिले के सरहदी इलाकों में शहीदी सप्ताह मनाया था।

सूत्रों के अनुसार, बड़े नक्सली लीडर आज भी बस्तर के जंगलों में डेरा जमाए बैठे हैं। मीटिंग ली जा रही है। नए कैडर्स की भर्ती कर रहे हैं। चुनाव से पहले बस्तर में बड़े नक्सली हमले की आशंका के बीच फोर्स अलर्ट मोड पर है। दक्षिण बस्तर के जिलों में जवानों को लगातार ऑपरेशन पर भेजा जा रहा है। बताया जा रहा है कि कुछ दिन पहले गोगुंडा के जंगल में नक्सलियों के ट्रेनिंग कैंप तक जवान पहुंच गए थे। यहां भी नक्सली कमांडर चैतू मौजूद था।

# हिमाचल से मानसून की विदाई का समय

## 30 सितंबर तक विड्रा होने के संकेत; 3-4 दिन में कुछेक स्थानों पर बारिश की संभावना

शिमला, 21 सितंबर (एजेंसियां)। हिमाचल के अधिक ऊंचे क्षेत्रों से 3 से 4 दिन बाद मानसून विड्रा होना शुरू हो जाएगा। पूरे प्रदेश से मानसून जाने में अभी 8 से 10 दिन लगेंगे। इससे पहले मानसून धीमा पड़ा है और बारिश की गतिविधियां भी ज्यादा नहीं हैं। बीते 25 अगस्त तक भारी बारिश ने हिमाचल में जरूर तबाही मचाई है। मगर, इसके बाद से मानसून सुस्त पड़ा हुआ है।

आमतौर पर प्रदेश में 23 सितंबर तक मानसून की वापसी होती है, लेकिन इस बार मानसून जल्दी जाने के संकेत नहीं है। बीते साल भी 2 सप्ताह देरी से 3 अक्टूबर को मानसून विदा हुआ। प्रदेश में अमूमन एक से 20 सितंबर तक 91.9 मिलीमीटर बारिश होती है, लेकिन इस बार 66.7 मिलीमीटर पानी बरसा है। जो नॉर्मल से 27 फीसदी कम है।

सोलन जिले में नॉर्मल से 65 प्रतिशत कम बारिश सितंबर में हुई है। शिमला में नॉर्मल से 57%, लाहौल स्पीति में 77%, किन्नौर में 54%, सिरमौर में 24%, ऊना में 7%, चंबा में 12% और बिलासपुर में नॉर्मल से 1% कम बारिश हुई है। इस दौरान कांगड़ा और हमीरपुर 2 ही जिलों में नॉर्मल से क्रमशः 26% और 5% ज्यादा पानी गिरा है।

5 दिन बारिश के आसार नहीं

मौसम विभाग की मानें तो 25 सितंबर तक प्रदेश के मैदानी व मध्यम ऊंचाई वाले ज्यादातर भागों में मौसम साफ या आसमान में हल्के बादल छाए रहेंगे। इस दौरान कुछेक स्थानों पर ही हल्की बारिश हो सकती है। वहीं अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में मौसम पूरी तरह साफ रहेगा।

प्रदेश में एक जून से अब तक नॉर्मल से 25 प्रतिशत ज्यादा बारिश हुई है। लाहौल स्पीति को छोड़कर अन्य सभी जिलों में नॉर्मल से ज्यादा मेघ बरसे है। यही तबाही का कारण है। सोलन जिले में नॉर्मल से सबसे ज्यादा 77 प्रतिशत बादल बरसे।

शिमला में भी नॉर्मल से 70 प्रतिशत ज्यादा, बिलासपुर में 66 प्रतिशत, मंडी में 46 प्रतिशत, हमीरपुर में 47 प्रतिशत, कुल्लू में 53 फीसदी, कांगड़ा में 14 प्रतिशत, किन्नौर में 22, सिरमौर में 46 और ऊना में नॉर्मल से 5 प्रतिशत ज्यादा बरसात हुई है। लाहौल स्पीति इकलौता ऐसा जिला है जहां पूरे मानसून सीजन में नॉर्मल से 38 प्रतिशत कम बरसात हुई है। प्रदेश में अब तक की बारिश से 8,666 करोड़ रुपए की सरकारी व निजी संपत्ति तबाह हो चुकी है। इस मानसून सीजन में 458 लोगों की जान चली गई है, जबकि 352 घायल और 39 व्यक्ति लापता चल रहे हैं।

मौसम विज्ञान केंद्र शिमला के निदेशक डॉ. सुरेंद्र पाल ने बताया कि अधिक ऊंचे क्षेत्रों से अगले कुछ दिन में मानसून विड्रा होना शुरू हो जाएगा।

# पानीपत में 4 महिलाओं से गैंगरेप-लूटपाट

## हथियारों के बल पर परिवार को बंधक बनाया पूरी रात की दरिंदगी, एक पीड़िता की मौत

पानीपत, 21 सितंबर (एजेंसियां)। हरियाणा के पानीपत जिले में 5-6 बदमाशों ने बड़ी वारदात को अंजाम दिया। मतलौडा थाना क्षेत्र के एक गांव स्थित डेरा और मछली फॉर्म हाउस पर काम करने वाली महिलाओं को बदमाशों ने अपनी हवस का शिकार बनाया।

बदमाशों ने हथियारों के बल पर एक गांव में रात को खेत में रह रहे प्रवासी मजदूरों के साथ मारपीट कर पैसे छीने और परिवार के पुरुष, बच्चों को बंधक बनाकर महिलाओं के साथ गैंगरेप किया।

अचानक घुस गए डेरे में पीड़ित परिवार की महिला ने बताया कि गांव से दूर डेरे में परिवार सहित रहते हैं। रात लगभग एक बजे चार नकाबपोश युवक उनके डेरे में घुस गए। उनके पास चाकू व पिस्तौल थी। उन्होंने हथियार के बल पर परिवार के तीन पुरुषों व बच्चों को हाथ पैर बांधकर एक कमरे में बंद कर दिया। उसके बाद महिलाओं को जबरदस्ती खींचकर बाहर बरामदे में ले आए। चारों ने हथियार के बल पर पूरी रात महिलाओं के साथ गैंगरेप किया। शोर मचाने पर पिस्तौल से जान से मारने की धमकी दी। सुबह 4 बजे तक महिलाओं के साथ दरिंदगी की। उसके बात जाते हुए महिलाओं को भी कमरे में बंद कर दिया। घर पर रखी नकदी भी लूट कर ले गए। सुबह 5 बजे महिला ने जानकर किसान को फोन करके घटना के बारे में बताया तो उन्होंने मौके पर पहुंचकर बंधक परिवार को कमरे से बाहर निकाला और पुलिस को सूचना दी।

सूचना मिलते ही मतलौडा थाना प्रभारी इंस्पेक्टर विजय व डीएसपी कृष्ण कुमार घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस महिलाओं को मेडिकल के लिए पानीपत के सामान्य अस्पताल में लेकर गई। एफएसएल की टीम द्वारा भी घटनास्थल पर पहुंचकर जांच की जा रही है।

# पूर्व सीएम भूपेंद्र हुड्डा ने दी कांग्रेस छोड़ने की धमकी

**इनेलो की इंडिया गठबंधन में एंट्री को लेकर भड़के; सांसद बेटे समेत दिल्ली में डेरा डाला**

चंडीगढ़, 21 सितंबर (एजेंसियां)। हरियाणा में आम आदमी पार्टी के बाद इंडियन नेशनल लोकदल से कांग्रेस के गठबंधन की चर्चाओं पर पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा भड़क गए हैं। पार्टी सूत्रों की मानें तो हुड्डा ने इसे लेकर पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व के सामने अपनी नाराजगी जताई है और पार्टी छोड़ने की धमकी भी दी है। पूर्व सीएम अपने बेटे और राज्यसभा सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा के साथ दिल्ली में डेरा डाले हुए हैं। हालांकि प्रत्यक्ष तौर पर हुड्डा खेमा इस बारे में कुछ भी कहने से बच रहा है। दरअसल ओमप्रकाश चौटाला की पार्टी, इनेलो पूर्व उपप्रधानमंत्री ताऊ देवीलाल की जयंती पर 25 सितंबर को हरियाणा के कैथल में सम्मान दिवस रैली करने जा रही है। इनेलो ने इस रैली के लिए इंडिया गठबंधन में शामिल जनता दल (यू), राष्ट्रीय जनता दल राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के अलावा तृणमूल कांग्रेस के नेताओं को भी न्योता भेजा है। इनमें से कई दलों ने रैली में आने की हामी भी भर दी है। बीजेपी की घेराबंदी के इसी क्रम में इनेलो ने कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी को भी रैली का निमंत्रण दिया है। हालांकि हुड्डा ने इस रैली में शामिल नहीं होने के संकेत दिए हैं।

वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में हरियाणा की सभी 10 लोकसभा सीटें हार जाने वाली कांग्रेस पार्टी की कमान राज्य में इस समय हुड्डा कैंप के पास है। पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा का मानना है कि इस बार वह सबसे मजबूत स्थिति में है।

ऐसे में वह एएपी, इनेलो या किसी भी अन्य दल के लिए लोकसभा की एक भी सीट छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। 12 सितंबर को ही चंडीगढ़ पहुंचे हुड्डा ने खुद कहा था कि राज्य में लोकसभा सीट पर दावा करने वालों के पास इसका आधार भी तो होना चाहिए।

हुड्डा ने इशारों-इशारों में स्पष्ट कर दिया था कि आम आदमी पार्टी और इनेलो की राज्य की किसी लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ने की दावेदारी ही नहीं बनती और सभी 10 सीटों पर कांग्रेस खुद चुनाव लड़ेगी।

हरियाणा में लोकसभा की 10 सीटें हैं और अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच सीट बंटवारा आसान नहीं दिख रहा। ऐसे में अगर 25 सितंबर को कैथल में रैली कर रही ओमप्रकाश चौटाला की पार्टी इनेलो भी इंडिया का हिस्सा बन जाती है तो यह घमासान और ज्यादा बढ़ जाएगा।

इनेलो नेता अभय चौटाला स्पष्ट संकेत दे चुके हैं कि अगर राज्य की 10 लोकसभा सीटों के बंटवारे की बात आई तो उनकी पार्टी सिरसा, हिसार और भिवानी लोकसभा सीट पर दावा करेगी। एएपी की ओर से भी सिरसा और अंबाला लोकसभा सीट मांगी जा सकती है। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भूपेंद्र सिंह हुड्डा खुद सोनीपत से मैदान में उतरे थे जबकि उनके बेटे दीपेंद्र हुड्डा ने रोहतक से चुनाव लड़ा था। दोनों बाप-बेटा बीजेपी के हाथों हार गए थे।

# आरक्षण तुरंत लागू करने की मांग पर नड्डा बोले

**वायनाड रिजर्व कर दें; राजनाथ बोले- चीन पर चर्चा करने तैयार हूं**

नई दिल्ली,21 सितंबर (एजेंसियां)। महिला आरक्षण बिल यानी नारी शक्ति वंदन अधिनियम के लोकसभा से पास होने के बाद गुरुवार को राज्यसभा में चर्चा हो रही है। संसद के विशेष सत्र का आज चौथा दिन है। चर्चा के दौरान पक्ष-विपक्ष के नेताओं ने अपनी बात रखते हुए एक-दूसरे पर कटाक्ष भी किए। सबसे ज्यादा मजेदार बात जेपी नड्डा ने कही, जब महिला आरक्षण बिल तुरंत लागू न करने पर विपक्ष ने सवाल उठाया तो नड्डा ने तंज कसते हुए कहा- वायनाड, अमेठी और रायबरेली को भी रिजर्व कर दें? उधर, लोकसभा में अधीर रंजन चौधरी ने रक्षामंत्री से चीन पर सवाल किया, जिस पर राजनाथ सिंह ने कहा- चीन पर चर्चा करने की पूरी हिम्मत है और सीना चौड़ा करके इसके लिए तैयार हैं। जेपी नड्डा पंचायतों में आरक्षण के बारे में बोल रहे थे, तब जगदीप धनखड़ ने नड्डा को रोकते हुए कहा- जब नई-नई पंचायत व्यवस्था आई थी, तो गांव में जाता था तो पूछता था कि आप कौन तो पता चलता था कि मैं सरपंच पति, मैं प्रधान पति। ये कल्चर चालू हुआ था। आज ये कल्चर खत्म हो गया है। राहुल गांधी पर तंज कसते हुए नड्डा बोले-एक लीडर को लीडर बनना पड़ता है, ट्यूटर बनने से काम नहीं चलता। राहुल गांधी पर तंज कसते हुए नड्डा बोले-एक लीडर को लीडर बनना पड़ता है, ट्यूटर बनने से काम नहीं चलता।

जेपी नड्डा ने बिल में देरी के सवाल पर जवाब दिया- मैं स्पष्ट करना चाहता हूं, संवैधानिक व्यवस्थाएं हैं। काम करने का तरीका होता है। महिला को किस सीट पर रिजर्वेशन मिले, इसका फैसला सरकार नहीं, ज्यूडीशियल बॉडी करती है। मैं सरकार में हूं और वायनाड को रिजर्व कर दूं तो?

# पूर्व सीएम चन्नी ने गोल्डन टेंपल में टेका माथा

अमृतसर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने गुरुवार को गोल्डन टेंपल में माथा टेका। वह अपने कुछ खास समर्थकों के साथ गोल्डन टेंपल पहुंचे थे।

अपनी इस विजिट के बारे में उन्होंने लोकल कमेटी को भी कोई जानकारी नहीं दी। वहीं, जाते हुए चरणजीत सिंह चन्नी ने संसद में पास किए गए महिला आरक्षण बिल को जुमला करार दे दिया। पूर्व सीएम चन्नी ने कहा- संसद में पास किया गया महिला आरक्षण बिल जुमले से कम नहीं है। यह तो वे बात है, एक व्यक्ति अपनी पत्नी के लिए गहने लेकर आया। गहने उसने महिला को दिखाए और लॉकर में रख दिए। साथ ही कह दिया जब बच्चे होंगे और वे बड़े होंगे और उनकी शादी पर तुम पहन लेना। चन्नी ने कहा कि महिला आरक्षण बिल का भी यही हाल है। महिलाओं को आरक्षण बिल पास कर दिया गया है, लेकिन उन्हें अभी हक नहीं देंगे। अभी 8-10 साल और लगेंगे। जबकि इसे तुरंत प्रभाव से लागू होना चाहिए। भारत को अपना पक्ष रखना चाहिए

वहीं, कनाडा में मारे गए आतंकी निज्जर की हत्या को लेकर कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की तरफ से दिए गए बयान पर भी पूर्व सीएम ने प्रतिक्रिया दी है। चन्नी ने कहा कि अगर विदेश की संसद में यह बात उठी है तो भारत को उसे क्लियर कर देना चाहिए।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

# मेरा हैदराबाद

शुक्रवार, 22 सितंबर, 2023



सुविचार

भय को दूर भगाने के लिए ज्ञान व विवेक की प्राप्ति ही एकमात्र उपाय है

## राज्य को हर प्रकार से विकसित करने के लिए सरकार प्रयासरत : धर्मस्व मंत्री

### मंत्री इंद्रकरण व सत्यवती ने मुलुगु में विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी

मुलुगु, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। धर्मस्व मंत्री ए. इंद्रकरण रेड्डी और जनजातीय कल्याण मंत्री सत्यवती राठौड़ ने गुरुवार को मुलुगु में नवनिर्मित कृषि विभाग के कार्यालय परिसर का उद्घाटन करने के अलावा जिले में कई शिलान्यास समारोहों में भाग लिया। बाद में, उन्होंने इंचेर्ला गांव में गट्टम्मा मंदिर के पास जनजातीय कल्याण बालक आवासीय विद्यालय के लिए पांच करोड़ रुपये की लागत से अतिरिक्त कक्षाओं के निर्माण की आधारशिला रखी।

उन्होंने अगले साल फरवरी में आयोजित होने वाले सम्मक्का-सरक्का द्विवार्षिक जतारा की प्रत्याशा में मेदाराम में विभिन्न विकास परियोजनाओं की आधारशिला भी रखी।

जिन विकास कार्यों का शिलान्यास किया गया उनमें 2.15 करोड़ रुपये की लागत से धर्मस्व विभाग का गेस्ट हाउस परिसर और कुल 13.24 करोड़ रुपये के विभिन्न अन्य विकास कार्य शामिल हैं। इन परियोजनाओं में जम्पन्नावगु के पास एक स्कूल भवन निर्माण के लिए प्रशासनिक मंजूरी के साथ एक प्रशासन भवन/वीवीआईपी गेस्ट हाउस, छात्रावास हॉल, पुजारी गेस्ट हाउस, सुभदा मंडपम और पूजा मंदिरम शामिल हैं। मंत्रियों ने आदिवासी देवताओं सम्मक्का-सरक्का के निवास का भी दौरा किया। मंत्री इंद्रकरण रेड्डी ने 'तुलाभरणम' अनुष्ठान किया और देवताओं को सोने और रेशम के कपड़े भेंट किए।

इसके बाद, उन्होंने मेडारम महाजातरा 2024 के विकास और व्यवस्था योजनाओं पर चर्चा करने के लिए मेदाराम में आईटीडीए गेस्ट हाउस में विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ एक समीक्षा बैठक की। बैठक में बोलते हुए, मंत्री रेड्डी ने विकास कार्य जल्दी शुरू करने और किसी भी चुनौती का तुरंत समाधान करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने उनसे समस्या उत्पन्न होने पर उसके समाधान के लिए अस्थायी समाधान अपनाने को कहा।

जिला कलेक्टर इला त्रिपाठी ने मेडारम विकास परियोजनाओं का एक सिंहावलोकन प्रदान किया, और आश्वासन दिया कि बारिश से क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत अक्टूबर में शुरू होगी। सभी संबंधित विभागों के समन्वय से मेले के प्रबंधन के लिए बजट की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई है। कार्यक्रम के दौरान अतिरिक्त राजस्व कलेक्टर डीएस वेंकन्ना, आरडीओ के सत्यपाल रेड्डी और डीआरडीओ नागा पद्मजा भी उपस्थित थे।

## सुरेश चन्द्र अग्रवाल सर्वसम्मति से अग्रवाल शिक्षा समिति ट्रस्ट बोर्ड के चेयरमैन मनोनीत

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सुरेश चन्द्र अग्रवाल दिल्ली वाले अग्रवाल शिक्षा समिति ट्रस्ट बोर्ड के चेयरमैन के रूप में सर्वसम्मति से मनोनीत किए गए। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुरेश चन्द्र अग्रवाल कई वर्षों से अग्रवाल शिक्षा समिति से जुड़े हुए हैं और समाजसेवा के क्षेत्र में काफी सक्रिय हैं। इसके पहले अग्रवाल शिक्षा समिति में छह वर्षों तक ट्रस्टी के रूप सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने अपनी सेवा दी है और अग्रवाल समाज बंजारा हिल्स के अध्यक्ष भी रहे हैं। अग्रवाल समाज सहायता ट्रस्ट के ट्रस्टी भी हैं। वह बीएसएनएल में एडवाइजरी बोर्ड के मेंबर भी रह चुके हैं। श्री अग्रवाल के चेयरमैन बनाए जाने पर अग्रवाल शिक्षा समिति के अध्यक्ष प्रमोद केडिया, मानद मंत्री नवीन कुमार अग्रवाल, मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. मोहन गुप्ता, ट्रस्टी करोड़ीमल अग्रवाल आदि ने उन्हें बधाई देते हुए सम्मानित किया है।

## बिचौलियों की भागीदारी के बिना रैंडमाइजेशन पद्धति से डबल बेडरूम घरों का वितरण : विजयलक्ष्मी

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। ग्रेटर नगर निगम की महापौर गदवाल विजयलक्ष्मी ने कहा कि डबल बेडरूम घरों का वितरण भ्रष्टाचार और बिचौलियों की भागीदारी के बिना रैंडमाइजेशन पद्धति से किया जाएगा। वे इब्राहिमपटनम विधायक मंचिरेड्डी किशन रेड्डी के साथ इब्राहिमपटनम विधायक मंचिरेड्डी किशन रेड्डी के साथ गुरुवार को याकूतपुरा विधानसभा क्षेत्र के लाभार्थियों को इब्राहिमपटनम निर्वाचन क्षेत्र के तिम्मैदा में बने 864 डबल बेडरूम घरों में से 500 घरों को वितरण के दूसरे चरण के हिस्से के रूप में वितरित किया। इस मौके पर महापौर गदवाल विजयालक्ष्मी ने कहा कि केसीआर गरीबों को आत्मसम्मान के साथ जीने में मदद करने के लिए सभी सुविधाओं से युक्त डबल बेडरूम घर मुफ्त दे रहा है।

उन्होंने कहा कि जिन लोगों को इस चरण में डबल बेडरूम का घर नहीं मिला, उन्हें निराश नहीं होना चाहिए, आने वाले दिनों में और भी लोगों को डबल बेडरूम का घर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि तेलंगाना राज्य में जिस तरह विकास और कल्याणकारी योजनाएं लागू की जा रही हैं, वैसा देश में कहीं और नहीं किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हैदराबाद शहर आईटी, उद्योग और निर्माण क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। मेयर ने कहा कि तेलंगाना सरकार गरीबों के लिए शादी मुबारक, कल्याण लक्ष्मी, आसरा पेंशन, रैतू बधु और रैतू बीमा योजनाएं लागू करके सभी के साथ खड़ी रहेगी। डबल बेडरूम घरों के अलावा, सरकार ने रुपये प्रदान किए हैं। उन्होंने कहा, 3 लाख की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि लगभग सभी मण्डलों में लाभार्थियों का चयन हो चुका है। विधायक मंचिरेड्डी किशन रेड्डी ने कहा कि आजकल घर बनाना और शादी करना गरीबों के लिए आर्थिक बोझ है, इसलिए माननीय मुख्यमंत्री गरीबों के पक्ष में हैं और कल्याण लक्ष्मी और शादी मुबारक के माध्यम से लड़कियों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। कार्यक्रम में तालाब चंचलम नगरसेविका समीना बेगम, एमपीपी बुर्रा रेखा महेंद्र गौड़, जेडपीटीसी बिंगी देवदासु गौड़, वाईएस एमपीपी कोलानु श्रीधर रेड्डी, एमपीटीसी बीमागौनी भास्कर गौड़, कुथबुल्लापुर गांव के सरपंच स्वरूप वीरस्वामी यादव, उपसरपंच गोधू मंगा, वार्ड सदस्य पैतला नरेंद्र गौड़ और अन्य उपस्थित थे।

## मेरे कोई दुश्मन नहीं : इटेला राजेंदर

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भाजपा विधायक इटेला राजेंदर ने आज टिप्पणी की कि कुछ लोग उनके बारे में बुरी बातें लिख रहे हैं और उन्होंने कहा कि ऐसी बातें लिखना बहुत दर्दनाक है। उन्होंने स्पष्ट किया कि राज्य में उनका कोई दुश्मन नहीं है। गुरुवार को यहां भाजपा पार्टी कार्यालय में मीडिया से बात करते हुए, राजेंद्र ने पूछा कि मुख्यमंत्री केसीआर अपने द्वारा किए गए वादों को लागू क्यों नहीं कर रहे हैं? उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान वोट के लिए वादे किये गये और फिर भुला दिये गये। उन्होंने पूछा कि दलित बंधु योजना को पूरी तरह लागू क्यों नहीं किया गया? उन्होंने यह भी पूछा कि राज्य सरकार के बेरोजगारी भत्ते के वादे का क्या हुआ? उन्होंने आरोप लगाया कि बीआरएस सरकार ने वाइन टेंडर के नाम पर व्यापारियों की जेब काटी है और कहा कि कर्ज माफी न होने से किसानों को परेशानी हो रही है। 57 वर्ष की आयु में पेंशन और विधवा पेंशन भी नहीं दी जा रही है। पैसे के अभाव में ये योजनाएं क्रियान्वित नहीं हो पा रही हैं। कांग्रेस यह प्रचार कर रही थी कि राज्य दिवालिया हो गया है। हमें सोचना होगा कि बीआरएस सरकार ने जो वादे किये थे, वे लागू होंगे या नहीं। अतीत में वित्त मंत्री के रूप में कार्य करने के अनुभव के साथ मैं कांग्रेस नेताओं से कह रहा हूं कि वे बिना विचार किए किसी भी योजना की घोषणा न करें। उन्होंने कांग्रेस नेताओं से यह भी स्पष्ट करने को कहा कि उनके छह वादों को कैसे लागू किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि भाजपा को राज्य में होने वाले राजस्व की अच्छी समझ है। हम भाजपा आलाकमान के अध्ययन के बाद घोषणा करेंगे कि वंचितों के लिए कल्याणकारी योजनाओं को कैसे लागू किया जाए। हम बहुत जल्द एक अच्छे घोषणापत्र की घोषणा करेंगे। हम सामुदायिक नेतृत्व से बात करेंगे और उन योजनाओं की घोषणा करेंगे जो लोगों के लिए अच्छा होगा।

## जीएचएमसी ऑयुक्त ने निरीक्षण किया

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम के कमिश्नर रोनाल्ड रोज़ ने कहा कि लोगों के आराम के लिए जुबली हिल्स रोड नंबर 45 की खाली जगह पर एक पार्क स्थापित किया जाना चाहिए। कमिश्नर ने गुरुवार की सुबह केबीआर पार्क से रोड नंबर 45 तक औचक निरीक्षण किया। इस खाली जगह में पार्क के विकास के हिस्से के रूप में, अधिकारियों को वर्षा वन, फूलों वाला पार्क, आगंतुकों के शौचालय, बोलार्ड लाइटिंग, जल निकाय, पुलिया निर्माण, ग्रिल, एम्फीथिएटर आदि जैसी सुखद संरचनाएं बनाने के लिए कदम उठाने का आदेश दिया गया। कमिश्नर ने कहा कि पार्क के विकास के लिए प्रस्तावित कार्यों को सीएसआर पद्धति से करने के लिए वे आगे आए हैं।

धम्माईगुडा वैष्णव धाम राम मंदिर तेलंगाना वैष्णव समाज बन्धुओं द्वारा आयोजित 9वें वार्षिकोत्सव में पूजा-अर्चना, प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान, युवक-युवती परिचय सम्मेलन, नवनिर्वाचित महिला मंडल अध्यक्षा किरनलता वैष्णव के पदभार ग्रहण व महाप्रसादी कार्यक्रम में उपस्थित अध्यक्ष विष्णु रामावत, भंवरलाल, रामाकिशन, सम्पतदास, किशनगोपाल, जगदीशप्रसाद, बाबुलाल, संतोष टीलावत, ओमप्रकाश, राजुदास, किशोरदास, प्रवीणकुमार, लक्ष्मण, सीताराम, सुरेश, प्रकाश, रेखा रामावत, समाज बन्धु व महिलाएँ।

## पुलिस का टॉलीवुड अभिनेता नवदीप को नोटिस, पेश होने को कहा

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। गुड़ीमल्कापुर पुलिस ने टॉलीवुड अभिनेता पल्लापोलु नवदीप को एक नोटिस जारी किया और उन्हें उनके सामने पेश होने और हाल ही में उजागर हुए ड्रग मामले की जांच में शामिल होने के लिए कहा। टीएसएनएबी ने गुडिमल्कापुर पुलिस के साथ मिलकर शहर में ग्राहकों को ड्रग्स रखने और बेचने के आरोप में तीन नाइजीरियाई नागरिकों और चार अन्य को गिरफ्तार किया। पुलिस ने बेंगलुरु और हैदराबाद से काम कर रहे लोगों के पास से कोकीन, एक्स्टसी गोलियां और एमडीएमए सहित विभिन्न दवाएं जब्त की थीं।

जांच के दौरान हमें पता चला कि नवदीप ड्रग तस्करों के संपर्क में था। उन्हें एक नोटिस जारी किया गया है जिसमें उन्हें शनिवार को जांच अधिकारी के सामने पेश होने के लिए कहा गया है, टीएसएनएबी के एक अधिकारी ने कहा। गुड़ीमलकापुर थाने में दर्ज मामले में पुलिस द्वारा सौंपी गई रिमांड रिपोर्ट में नवदीप को ग्राहक बताया गया है। अभिनेता ने तेलंगाना उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था और पुलिस को उन्हें गिरफ्तार न करने का निर्देश देने की मांग की थी और निचली अदालत में अग्रिम जमानत के लिए आवेदन किया था। पुलिस ने मामले में 10 अन्य लोगों को ग्राहक बताया था, जिनमें कुछ हाई प्रोफाइल व्यवसायी और फिल्म उद्योग से जुड़े व्यक्ति शामिल हैं।

## गणेश पंडालों में महिलाओं को छेड़ने वाले 55 लोग रंगे हाथों पकड़े गए

### शीटीम पंडालों में बारीकी से रख रही है नजर

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद शहर की महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों के साथ-साथ पारगमन के दौरान सुरक्षित वातावरण प्रदान करने के लिए शी टीमें सतर्कता में काम करती हैं और नियमित रूप से भीड़-भाड़ वाले और एकांत इलाकों में घूमती हैं जहां महिलाओं के उत्पीड़न या छेड़छाड़ की संभावना होती है।

जहां भी इस तरह का उत्पीड़न या छेड़छाड़ देखा जाता है। आरोपियों को वीडियो साक्ष्य के साथ पकड़ा जाता है और दोषियों के खिलाफ प्रासंगिक मामले दर्ज किए जाते हैं। गणेश उत्सव, 2023 के दौरान गणेश पंडालों और अन्य भीड़-भाड़ वाले इलाकों का निरीक्षण करने के लिए तैनात की गई टीमों ने गणेश पंडालों और कतार रेखाओं के पास ऐसे लोगों को रंगे हाथों पकड़ा, जो वीडियो साक्ष्य के साथ अश्लील हरकतें कर रहे थे, महिलाओं को अनुचित तरीके से छू रहे थे या उनका पीछा कर रहे थे। तीन दिन के अंदर टीमों ने वीडियो साक्ष्य के साथ बड़ा गणेश, खैरताबाद में 55 मामले रंगे हाथ पकड़े। जब महिलाएं भक्ति गतिविधियों में शामिल होती हैं और भीड़भाड़ वाले क्षेत्र में कतार में चलती हैं, तो ये लोग स्थिति का फायदा उठाते हैं और अनुचित कृत्यों में शामिल होते हैं। उत्तरदाता अलग-अलग व्यवसायों से हैं जैसे ऑटो चालक, निजी कर्मचारी और यहां तक कि सरकारी कर्मचारी भी, जो महिलाओं को अनुचित तरीके से छूकर, भद्दे कमेंट और इशारे करके उन्हें शर्मिंदा कर रहे थे। संबंधित प्रकरण पंजीबद्ध कर उनकी समझाइश की गई तथा न्यायालय में पेश किया जा रहा है। तीनपहाड़, साहेबगंज, झारखंड के 28 वर्षीय श्याम बिहारी महतो पुत्र बेचन महतो नाम के एक व्यक्ति को भी संदिग्ध परिस्थितियों में घूमते हुए पकड़ा गया और उसके पास से चोरी के 4 मोबाइल फोन बरामद किए गए। आगे की आवश्यक कार्रवाई के लिए उसे खैरताबाद थाने में सौंप दिया गया। वह टीमें एक कॉल या क्लिक की दूरी पर हैं। उत्पीड़न या छेड़छाड़ से संबंधित कोई भी शिकायत हैदराबाद सिटी पुलिस के व्हाट्सएप नंबर, 9490616555 और आपातकालीन स्थिति में डायल 100 पर साझा की जा सकती है।

## तेलंगाना में एक मॉडल शहर के रूप में उभरा खम्मम : पुव्वाड़ा

खम्मम, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। परिवहन मंत्री पुव्वाड़ा अजय कुमार ने कहा कि खम्मम शहर को पिछले नौ वर्षों में राज्य सरकार द्वारा बड़ी मात्रा में धनराशि स्वीकृत करके एक मॉडल शहर के रूप में विकसित किया गया है।

मंत्री ने गुरुवार को खम्मम में 2.95 करोड़ रुपये की लागत से होने वाले कई विकास कार्यों की आधारशिला रखी. एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि खम्मम शहर राज्य के अन्य नगर निकायों के लिए एक उदाहरण बन गया है और जनता से सरकार का समर्थन करने का आह्वान किया। अजय कुमार ने कहा कि एक समय खम्मम शहर उचित सड़कों, सीवेज नालियों, पेयजल आपूर्ति की कमी और उचित विकास योजना के बिना उपेक्षित स्थिति में हुआ करता था। परिणामस्वरूप लोगों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ा। मंत्री ने कहा कि शहर ने अब जो विकास देखा है वह कई दिनों की कड़ी मेहनत और सरकार द्वारा दी गई करोड़ों रुपये की धनराशि के कारण संभव हो पाया है। उन्होंने कहा कि वह खम्मम के नागरिकों को अपने परिवार के सदस्यों के रूप में मानते हैं और उन्हें सभी सुविधाएं प्रदान करने का प्रयास करते हैं। सरकार लोगों की जरूरतों के मुताबिक खम्मम शहर के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। अजय कुमार ने कहा कि एमए एंड यूडी मंत्री केटी रामा राव के कारण किसी अन्य नगर निगम को खम्मम नगर निगम जितना धन नहीं मिला है। शहर में और विकास की जरूरत है और इसके लिए अगले चुनाव में बीआरएस की सरकार बननी चाहिए। उन्होंने आग्रह किया कि खम्मम में लोगों को आगामी चुनावों में बीआरएस उम्मीदवारों को आशीर्वाद देना चाहिए। इससे पहले दिन में अजय कुमार ने स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय कोंडा लक्ष्मण बापूजी को उनकी पुण्यतिथि पर खम्मम में लकाराम टैंक बांध पर बापूजी की प्रतिमा पर माला चढ़ाकर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि बापूजी ने जीवन भर अलग तेलंगाना के लिए संघर्ष किया और इस उद्देश्य के लिए बापूजी की निस्वार्थ सेवाओं को याद किया।

CLASSIFIEDS

LOST DOCUMENT

I, Pawan Goel S/o Shri. Ram Bharos Goel, a Resident of Hyderabad has purchased flat no. 1114, HSR layoyut, Hastinapuram and the seller of the flat Smt. T. Satyavani W/o Late. T. Bhanu Resident of Hyderabad has lost Original LINK sale deed 5356/2020 of Sy. No. 57/1, Door No. 8-6-998/HSR/1114, HSR SRI RAMCHANDRA MANOR, KARMANGHAT VILLAGE, RR Dist. If anyone finds the document please contact 9849223453

सावधान

पाठकों को सूचित किया जाता है कि वर्गीकृत विज्ञापन का प्रतिवादन करने से पहले उसकी पूरी तरह से जाँच पड़ताल कर लें। विज्ञापनदाता ने दावा कर रहे हैं या कह रहे हैं, उन बातों से दैनिक समाचार पत्र (स्वतंत्र वार्ता) का किसी भी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं है।

जीडिमेटला स्थित श्री आईमाता मंदिर में बीज महोत्सव के अवसर पर श्री आईजी सेवा समिति द्वारा समाज के प्रति किये जा रहे सराहनीय कार्यों के लिए संरक्षक बाबुलाल चोयल, महासचिव जगदीश सोलंकी, उपाध्यक्ष सोहनलाल, शिक्षा सचिव भीकाराम, सहसचिव दुर्गाराम मुलैवा, कार्यकारिणी सचिव भगवानराम राठौड़, सलाहकार अशोककुमार, चन्दाराम, गोविन्दराम, तेजाराम हाम्बड़, सचिवन सोलंकी का सम्मान करते हुए पदाधिकारी व समाज बन्धु।

# सीएम की सुरक्षा में बड़ी चूकः लखनऊ में फ्लीट 2 मिनट तक ठहरी रही, आरएसएस की बैठक में शामिल होने जा रहे थे; रिपोर्ट तलब

लखनऊ, 21 सितंबर (एजेंसियां)। लखनऊ में सोमवार को सीएम योगी आदित्यनाथ की सुरक्षा में बड़ी चूक सामने आई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की समन्वय बैठक में शामिल होने के लिए जाते वक्त सीएम की फ्लीट गड्ढे में फंस गई। यहां करीब 2 मिनट तक काफिला रुका रहा। मुख्यमंत्री ने खुद वजह पूछी, तो सड़क पर गड्ढे होने की बात सामने आई।

2 मिनट के बाद उनकी फ्लीट रवाना की गई। ये जगह मटियारी चौराहा से कार्यक्रम स्थल के बीच में बताया गया है। योगी के मुख्यमंत्री बनने के बाद लखनऊ में पहली बार उनकी सुरक्षा में चूक सामने आई। फिलहाल गृह विभाग ने पूरे मामले की रिपोर्ट तलब की है।

**जेड प्लस सुरक्षा में रहते हैं योगी**

सीएम की सुरक्षा में तैनात रहे एक अधिकारी ने बताया कि देश में प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सुरक्षा काफी हाईटेक है। योगी आदित्यनाथ दूसरी बार यूपी के CM बने हैं।

वह हिंदुत्व के लोकप्रिय नेता भी हैं। जिन्हें कट्टरपंथी संगठनों से कई बार जान से मारने की धमकी मिल चुकी है।

सीएम योगी के साथ हर समय नेशनल सिक्टयोरिटी गार्ड के 25 कमांडो रहते हैं। यानी यदि इनकी शिफ्ट 8 घंटे की है, तो कुल मिलाकर 75 कमांडो तैनात हैं। यह ब्लैक वर्दी में रहते हैं। ब्लैक वर्दी पर बैज लगा होता है। इनके पास हाईटेक हथियार के साथ बुलेट प्रूफ जैकेट भी रहती है। यह कमांडो सीआरपीएफ, आईटीबीपी के जवान होते हैं, जो हर स्थिति से निपटने के लिए ट्रेंड होते हैं। एनएसजी कमांडो के अलावा यूपी आर्म्ड पुलिस के जवान भी शामिल होते हैं।

**तो क्या रूट पहले से चेक नहीं हुआ**

इस घटना के बाद सवाल उठ रहे हैं कि आखिर गड्ढे की वजह से सीएम योगी आदित्यनाथ का काफ़िला रुका क्यों? तो क्या इससे पहले सीएम के काफिले को क्लियर करने का जो रूट तय किया गया, उसको चेक नहीं किया गया। उसमें लापरवाही क्यों बरती गई। गृह विभाग ने पूरे मामले की रिपोर्ट तलब की है।

प्रदेश के पूर्व डीजीपी का कहना है कि यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ के पास सुरक्षा का ऐसा चक्र है जो किसी अभेद किले से कम नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी के बाद सबसे मजबूत सुरक्षा उन्हें ही दी गई है। सीएम के पास जेड प्लस सुरक्षा है। सीएम योगी जिस गाड़ी से चलते हैं, वह बुलेट प्रूफ है।

सीएम की सुरक्षा में रहे एक अधिकारी का कहना है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सुरक्षा काफी हाईटेक है। देश के किसी भी राज्य के सीएम की ऐसी सुरक्षा व्यवस्था नहीं है।

**जौनपुर में काले झंडे दिखाए**

9 सितंबर 2022 : जौनपुर जिले में दौरे के दौरान सीएम योगी आदित्यनाथ की सुरक्षा में बड़ी चूक हुई थी। जौनपुर में मेडिकल कॉलेज के निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को काला झंडा दिखाया गया था। इसे सीएम योगी आदित्यनाथ की सुरक्षा में चूक मानते हुए दो दरोगा समेत आठ पुलिसकर्मी निलंबित कर दिए गए थे। जबकि काला झंडा दिखाने के दो आरोपी गिरफ्तार कर लिया गया था। पढ़ें पूरी घटना...

**बिजनौर में बीच शहर गाड़ी खराब हुई**

4 सितंबर 2022 : बिजनौर दौरे पर पहुंचे सीएम योगी आदित्यनाथ की फ्लीट की गाड़ी अचानक खराब हो गई। अंधेरे में गाड़ी खराब होने के बाद हड़कंप मच गया था।

सुरक्षाकर्मियों ने उनकी गाड़ी को घेर लिया और दूसरी गाड़ी में बैठाया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बिजनौर से दस किलोमीटर दूर महात्मा विदुर के ऐतिहासिक मंदिर में दर्शन करने करने पहुंचे थे। वहां पर दर्शन के बाद जब लौटकर वो डाक बंगला आ रहे थे, तभी बीच शहर में चौराहे के पास उनकी गाड़ी खराब हो गई थी।

**बस्ती में असलहा लेकर कार्यक्रम में घुसा था युवक**

19 अक्टूबर 2021 : बस्ती जिले में सीएम योगी के कार्यक्रम में एक युवक लाइसेंसी हथियार लेकर शामिल हुआ था। इस मामले में तत्कालीन बस्ती एसपी आशीष श्रीवास्तव ने चार पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया था। दरअसल, बस्ती के अटल बिहारी प्रेक्षागृह में योगी पहुंचे थे। 14 सितंबर को यूपी पुलिस व एनएसजी का संयुक्त ऑपरेशन गांडीव-5 देखा था। विभिन्न सर्जिकल ऑपरेशंस की तैयारियों को परखा।

# बीबीडी यूनिवर्सिटी की छात्रा की गोली मारकर हत्या

## लखनऊ में आधी रात के बाद फ्लैट में चल रही थी शराब पार्टी, दोस्त हॉस्पिटल में छोड़कर भागे

लखनऊ , 21 सितंबर (एजेंसियां)। लखनऊ में बीबीडी छात्रा की गोली मारकर हत्या कर दी गई। चिनहट के दयाल रेजीडेंसी अपार्टमेंट के फ्लैट में दारू पार्टी हुई। इसी दौरान संदिग्ध हालात में गोली चली। गोली निष्ठा को लगी, गंभीर हालत में निष्ठा को उसके दोस्त लोहिया अस्पताल ले गए। पुलिस के मुताबिक, लोहिया में छात्रा और उसके परिवार के बारे में लिखा-पढ़ी कराकर दोस्त भाग लिए।

डॉक्टर ने निष्ठा को मृत घोषित कर दिया। तड़के साढ़े तीन बजे हॉस्पिटल स्टॉफ ने पुलिस को सूचना दी। घटना की जानकारी पर हरदोई से पहुंचे पिता ने चिनहट थाने में दोस्त आदित्य पाठक पर हत्या का आरोप लगाते मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस ने आरोपी आदित्य को गिरफ्तार कर लिया है।

**बी.कॉम ऑनर्स की थी छात्रा, पिता बैंक मैनेजर**

हरदोई सदर कोतवाली निवासी यूपी सहकारी ग्राम विकास बैंक के

निष्ठा, मृतका

सीनियर मैनेजर संतोष तिवारी की बेटी निष्ठा (23) की मौत हुई है। पुलिस के मुताबिक, बीबीडी हॉस्टल छोड़कर दो महीने पहले ही निष्ठा पारस नाथ सिटी में किराए पर रहने लगी थी। निष्ठा कॉलेज में गणेश उत्सव से अपने दोस्त आदित्य पाठक के दयाल रेजीडेंसी स्थित फ्लैट पर पहुंची। जहां पर दोस्तों के साथ पार्टी चल रही थी। इसी दौरान गोली लगने से उसकी मौत हो गई।

किचन में मिली दारू की बोतलें

पुलिस जांच में सामने आया है कि छात्रा को जिस फ्लैट में गोली लगी, वह पुलिसकर्मी हिंमाशु श्रीवास्तव का है। जिसमें आदित्य पाठक किराए पर रहता है। किचन में खाने के सामान और दारू की बोतलें मिली हैं। जिससे लग रहा है कि यहां पर पार्टी हुई थी। इसी दौरान किसी बात पर विवाद या धोखे से गोली चलने से युवती की मौत हो गई। घटनास्थल से फोरेंसिक टीम ने सबूत जुटाए हैं।

**घर में असलहा कैसे पहुंचा**

छात्रा के पिता संतोष तिवारी का कहना है कि उनकी बेटी को धोखे से गोली नहीं लगी, उसकी हत्या हुई है। पढ़ने वाले बच्चों के पास पिस्टल कैसे पहुंची। इससे साफ है कि वह क्रिमिनल माइंडेड है, जिन्होंने मेरी बेटी को किसी गलत इरादे से मार डाला। पुलिस को इसकी गहनता से जांच करनी चाहिए।

एडीसीपी पूर्वी अली अब्बास ने बताया कि छात्रा की गोली लगने से मौत हुई है। छात्रा के पिता की तहरीर पर आरोपी आदित्य पाठक के खिलाफ हत्या की एफआईआर दर्ज की गई है। आरोपी आदित्य से पूछताछ की जा रही है। हत्या के कारणों के बारे में जानकारी की जा रही है। सबूतों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

# शिक्षा मंत्री बोले-मैं ईश्वर के खिलाफ नहीं

## मैंने कहा तो मेरी जीभ की कीमत दस करोड़ हो गई; भागवत तो बोलते रहते हैं

सीतामढ़ी, 21 सितंबर (एजेंसियां)। मैंने कहा है तो मेरी जीभ की कीमत दस करोड़ हो गई। मोहन भागवत तो इस तरह के बयान देते रहते है..उन्होंने दो बार तो मेरे बयानों का भी समर्थन किया है। ये कहना है बिहार के शिक्षा मंत्री प्रोफेसर चंद्रशेखर का। शिक्षा मंत्री सीतामढ़ी में श्री राधे कृष्ण गोयनका कॉलेज के कार्यक्रम में पहुंचे थे, जहां उन्होंने ये बयान दिया।

उन्होंने कहा कि मैं कब भगवान के खिलाफ हो गया। कहीं भी वक्तव्य में देखिए। मैं भगवान, ईश्वर के खिलाफ नहीं बोलता। उन्होंने चुनौती देते हुए कहा की भगवान और ईश्वर के खिलाफ कहीं भी बोला हूं तो वे मुझे दिखा दें। मैं भगवान के खिलाफ बिल्कुल नहीं हूं।

शिक्षा मंत्री ने रामचरितमानस की तुलना पोटेशियम साइनाइड से की थी। इसके बाद से बीजेपी लगातार उन पर हमलावर है।

उन्होंने आगे कहा कि मैं यहां आया हूं, शिक्षा के मंदिर में। मैंने जो बोला है आप लोगों ने सुना है।

शैक्षणिक वातावरण में शिक्षा का काम करने आया हूं। मुझे पता है पूरी मीडिया क्या चलाना चाहती है। कॉर्पोरेट घरानों के हाथ से बिकी हुई मीडिया क्या चलाना चाहती है इसलिए आपके पास कुछ बोलने से रहा।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि बिहार में दो-तीन महीने में होने वाली करीब ढ़ाई लाख शिक्षकों की बहाली विश्वस्तरीय कीर्तिमाकन होगा। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षकों की मी को पूरा करने के लिए कैबिनेट में अलग से लगभग 70 हजार शिक्षकों का बहाली की स्वीकृति की सहमति हुई है।

उन्होंने कहा कि सरकार ने पूरी पारदर्शिता के साथ बिना किसी शिकायत के बीपीएससी की माध्यम से शिक्षक भर्ती परीक्षा आयोजित कराई है। इसके लिए उन्होंने मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री की प्रशंसा की।

उन्होंने कहा कि उच्चत्तर संस्थानों में उच्चत्तर शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए सरकार प्रयासरत है, लेकिन मामला न्यायालय वादों में फंसा है। इसके कारण छह महीने से बहाली नहीं हो सकी है।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि थोड़ा सा धीरज रखें। उच्चतर संस्थानों में हजारों शिक्षकों की बहाली होनी है। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है इस लिए बेहतर शिक्षकों की बहाली कर ली है।

शिक्षा मंत्री ने किए बड़े ऐलान

उन्होंने कहा कि 90 के दशक के तहत फिर राज्य के उच्च शिक्षण संस्थानों में व्याख्याताओं की बहाली के लिए राज्य सरकार बेट की परीक्षा आयोजित करेगी। इसकी तैयारी चल रही है। राज्य में पहली बार मुख्यमंत्री के प्रयास से शोधार्थी छात्रों के आर्थिक कमी को दूर करने के लिए मुख्यमंत्री फेलोशिप योजना शुरू होने जा रही है।

इसकी स्वीकृति उच्च शिक्षा परिषद की बैठक में मिल गई है। वहीं अतिविशिष्ट अतिथि सूचना प्रावैद्यिकी विभाग मंत्री मो. इसराइल मंसूरी ने कहा कि भारत में शासन, लोकतंत्र और विकास, तीनों एक दूसरे के पूरक हैं।

# पूर्व आईएएस के दामाद पर 50 करोड़ के गबन का आरोप

## शिकायत दर्ज कराने पहुंचे 100 लोग, कहा- एक ही जमीन को 20 से ज्यादा लोगों को बेचा

पटना, 21 सितंबर (एजेंसियां)। पटना के कंकड़बाग पीसी कॉलोनी के रहने वाले चिरंजीवी शिवम के उपर लगभग 50 करोड़ के गबन का आरोप लगा है। लगभग 100 लोग यह आरोप लगाते हुए चिरंजीवी के घर पहुंच गए। बकाएदारों ने बताया कि चिरंजीवी के पिता सुनील कुमार वर्मा भी इसमें शामिल है। चिरंजीवी की पत्नी का नाम भव्या है। चिरंजीवी के ससुर IAS अधिकारी थे। अब उनकी मौत हो गई है। ससुर की नौकरी के दौरान मौत हुई थी, जिससे उनके बेटे किशलय राज को अनुकंपा से नौकरी मिली। राज एक सरकारी कर्मचारी हैं। बकाएदारों ने बताया कि राज भी लेन देन में शामिल रहता है। जब लोग चिरंजीवी के घर पहुंचे तो घर का दरवाजा बंद था। लोग एक घंटे तक इंतजार करने के बाद कंकड़बाग थाना पहुंचे और देर शाम तक वहीं जमे रहे। फिर आवेदन दे कर लौटे।

राघोपुर वैशाली से आए अरुण दास ने बताया कि चिरंजीवी शिवम मेरे 10 लाख लेकर फरार

हो गया है। उन्होंने बताया कि 3 साल पहले इससे मेरी मुलाकात हुई। इसने बताया कि इसकी ट्रेडिंग कंपनी है। थोड़ा-थोड़ा पैसा लगाइए और थोड़ा-थोड़ा कमाइए। जिस दिन भी लगाया हुआ पैसा वापस कैश करना हो, तो एक महीना पहले बोल दीजिए और एक महीने बाद पैसा निकाल लीजिए।

अरुण दास ने बताया कि झांसे में आकर मैंने थोड़ा पैसा लगाया उस पैसे का तुरंत अच्छा रिटर्न मिल गया। मैने चेक करने के लिए तुरंत पैसे निकाल लिए। उसके बाद मेरा लालच बढ़ता गया और मैं पैसा लगाता गया। लगभग 3 साल में मैने 1 लाख लगाए और वो 3 लाख हो चुका था, जिसको मैंने निकाल लिया। लगभग एक महीने बाद चिरंजीवी का फोन फिर आता है वो कहता है इस बार लगभग 3 से 4 महीना में पैसा सीधे 3 से 4 गुना बढ़ जाएगा। कुछ कंपनियां बिकने वाली हैं। उनके शेयर खरीदने हैं। वो दो महीने में ग्रोथ करेंगी। मैंने रिश्तेदारों से उधार लेकर, एक छोटी सी जमीन गिरवी रख कर, यहां तक की पत्नी के कुछ गहने भी रखने पड़े। ये सब कर के 10 लाख इसको दिया। इसने 6 महीने बाद 22 लाख का चेक भी दिया। चेक दिखाते हुए अरुण दास ने कहा चेक बाउंस हो गया और आरोपी गायब है। इसलिए इसके घर पर आएं हैं। हम सब मिलकर इसपर मुकदमा दर्ज कराएंगे।सुपौल से आए प्रकाश कुमार ने बताया कि शेयर मार्केट में पैसा लगाने के नाम पर 18 लाख लेकर फरार हो गया है। प्रकाश कुमार ने बताया कि 1 साल पहले आरोपी से मुलाकात हुई। पहले मेरा पैसा उसी ने लगाया। 1000 और उसके उसने 2500 बना दिया। उसने मुझे 500 दिया और कहा अगर तुम पैसा लगाते 2000 ले जाते। उसके बाद मैं हर चौथे दिन 1000 से शुरू हुई और लाखों में मामला चला गया। एक चेक दिया था लेकिन वह बाउंस हो गया। अब बात नहीं होती है। इसीलिए सब लोग इक्ट्ठा हुए है।

पटना के राजेश राम ने कहा कि शहर में जमीन खरीदने के लिए गांव की जमीन बेच कर पैसे ले कर आया था। आरोपी ने अपने घर के पीछे की खाली जमीन को अपना बता कर पैसे ठग लिए। आरोपी ने उस जमीन के नकली पेपर अपने नाम से भी बनवाया था। जो कई लोगों को दिखा चुका है। वह मेरा 60 लाख रुपए लेकर फरार हो गया। वहां मौजूद देव नारायण सहाय ने बताया कि अपने घर के पीछे की ही जमीन दिखाकर मुझसे 1 करोड़ 89 लाख ले लिया। बाद में कहा अब नही बेचेंगे। अब मूड बदल गया। मैने पैसा मांगा तो चेक दे दिया।

# कांशीराम परिनिर्वाण दिवस पर 3 बड़ी रैली करेंगे चंद्रशेखर

## पश्चिम से होगी शुरुआत, बहुजन नायक के बहाने मिशन 2024; बसपा पर टार्गेट

मेरठ, 21 सितंबर (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव 2024 में बसपा को टक्कर देने की तैयारी कर रही आजाद समाज पार्टी बहुजन नायक का परिनिर्वाण दिवस पूरे जोर-शोर से मनाएगी। भीम आर्मी के मुखिया चंद्रशेखर कांशीराम जी के परिनिर्वाण दिवस पर यूपी में 3 बड़ी रैलियां करेंगे। इन रैलियों में चर्चा कांशीराम की होगी, लेकिन इन रैलियों के 2 बड़े मकसद हैं। पहला मिशन 2024 फतह, दूसरा बड़ा मकसद बसपा को मात देकर यूपी में दलितों के बड़े नेता की पदवी हासिल करना।

चंद्रशेखर लगातार यूपी में दलित राजनीति का अहम चेहरा बनने के प्रयास में है।वो बेहतरी से जानते हैं कि बसपा को डाउन करके ही वो दलितों के मन में अपने लिए स्थान बना पाएंगे। इसलिए आजाद समाज पार्टी ने

दलितों को साधने के लिए अब संवेदनात्मक रुख अपनाया है। पार्टी ने दलितों के मसीहा, महापुरुष कांशीराम के परिनिर्वाण दिवस पर बड़ी प्लानिंग की है।

9 अक्तूबर को बहुजन नायक कांशीराम का परिनिर्वाण दिवस है। हर साल बसपा कांशीराम की जयंती और परिनिर्वाण दिवस पर उन्हें याद करती है। बसपा प्रमुख मायावती कांशीराम की जयंती पर भव्य आयोजन करती हैं। उसी तरह उनके परिनिर्वाण दिवस पर उन्हें याद किया जाता है। इसी राह पर चलते हुए आजाद समाज पार्टी मुखिया चंद्रशेखर ने कांशीराम परिनिर्वाण दिवस को दलित वोटर के बीच पहुंचने का जरिया बनाया है। पार्टी यूपी में 3 बड़ी रैलियां करेगी। इन रैलियो के लिए यूपी को 3 भागों में बांटा है।

इन रैलियो की शुरूआत पश्चिमी यूपी से होगी। 9 अक्तूबर कांशीराम परिनिर्वाण दिवस के दिन चंद्रशेखर पहली रैली करेंगे। यह रैली वेस्ट यूपी के बिजनौर की नगीना लोकसभा सीट पर होगी। दूसरी रैली 22 अक्तूबर को पूर्वांचल में होगी। आजमगढ़ को चुना गया है। तीसरी रैली मध्यांचल की होगी। इस रैली को कानपुर में रखा गया है। तीनो रैलियों में चंद्रशेखर खुद जाएंगे। पार्टी कार्यकर्ताओं को अभी से तीनों रैलियो में भारी भीड़ जुटाने का टार्गेट दिया गया है। भीड़ में भी प्रमुख फोकस युवाओं की भीड़ ज्यादा पहुंचाने पर रखा गया है।

# ढाबे में दीवार तोड़ घुसी डीसीएम, 4 की मौत

## 3 की हालत गंभीर; चपेट में आए सभी खाना खा रहे थे, तभी मची चीख-पुकार

हापुड़, 21 सितंबर (एजेंसियां)। हापुड़ में तेज रफ्तार डीसीएम दीवार तोड़ते हुए ढाबे में घुस गया। हादसे में ढाबे के अंदर खाना खा रहे 4 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। जबकि 3 लोग घायल हैं। सूचना मिलने पर एसपी समेत भारी संख्या में पुलिस फोर्स मौके पर पहुंची। पुलिस ने घायलों को अस्पताल में भर्ती करवाया। जबकि शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया। बताया जा रहा है कि चालक शराब के नशे में था।

हादसा धौलाना मसूरी रोड पर जुबेदा मैरिज होम के पास सड़क के किनारे बने एक ढाबे का है। हादसे के वक्त ढाबे पर लोग खाना खा रहे थे। तभी अचानक तेज आवाज हुई और ढाबे की एक दीवार गिर गई। कुछ लोग डीसीएम की चपेट में आए तो कुछ दीवार के नीचे दब गए। मौके पर चीख पुकार मच गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने क्रेन की मदद से डीसीएम को बाहर निकलवाया। वहीं, दीवार के नीचे दबे लोगों का रेस्क्यू किया गया। रात में कई घंटे तक रेस्क्यू ऑपरेशन चला।

मरने वालों में एटा के जैथरा के गंगापुर गांव का अरुण (28), कासगंज के कुंवरपुर का जितेंद्र (18) और 2 अज्ञात लोग है। जबकि शिवकुमार, सुधीर तथा सचिन की हालत गंभीर बनी हुई है। सूचना पर एसपी अभिषेक वर्मा, एएसपी राजकुमार और सीओ वरूण मिश्रा मौके पर पहुंचे। उन्होंने घटनास्थल का मौका मुआयना किया है।

वहां पर मौजूद लोगों ने बताया कि ढाबे में कुछ लोग खाने खा रहे थे। ढाबा संचालक व कर्मचारी भी वहां मौजूद थे। टक्कर इतनी जोरदार थी कि हादसा के बाद ढाबे की दीवार गिर गई।मौके पर अफरा-तफरी मच गई। खाने खा रहे लोग इधर उधर भागने लगे। कुछ लोग उसी में दब गए।

# इंजीनियर के ठिकानों पर रेड..ससुराल से मिले 25 लाख कैश

## 2 बैंक लॉकर, महंगी गाड़ी भी मिली;बांका से हिरासत में लेकर पटना ला रही निगरानी टीम

बांका, 21 सितंबर (एजेंसियां)। करीब 5 घंटे चली रेड के बाद बांका से बिजली विभाग के एग्जीक्यूटिव इंजीनियर संजीव कुमार गुप्ता को निगरानी की टीम ने हिरास में ले लिया है। उसे पूछताछ के लिए पटना लाया जा रहा है। गुरुवार सुबह इंजीनियर के ससुराल भागलपुर और घर पूर्णिया में भी टीम ने छापेमारी की।

ससुराल से 25 लाख कैश मिले हैं। बांका से भी करीब एक लाख कैश बरामद होने की सूचना है।आय से अधिक संपत्ति के मामले में ये कार्रवाई की ई। भागलपुर में उनका ससुराल है। टीम जब सुबह यहां रेड मारने पहुंची तो उनके ससुर मिले। टीम ने यहां छापा मारा तो 25 लाख कैश बरामद हुए हैं।

अधिकारियों ने ससुर से पूछा कि ये कैश किसका है तो उन्होंने कहा कि दामाद जी का। इंजीनियर की पत्नी पश्चिम बंगाल के रामपुरा

स्थित यूको बैंक में मैनेजर है।

ससुराल से ही अवैध कमाई से खरीदे गए कई जमीन के दस्तावेज, संपत्ति के कागजात और निवेश से जुड़े कागजात भी बरामद किए गए हैं। पूर्णिया में भी कई जमीन के कागजात, रजिस्ट्री के पेपर्स जब्त किए गए हैं। भागलपुर जिले के बबरगंज ओपी के अंतर्गत अलीगंज के गंगा बिहार कॉलोनी स्थित राज किशोर मंडल के दामाद संजीव कुमार गुप्ता के ठिकानों पर निगरानी की टीम की छापेमारी चल रही है। दो यूको बैंक के लॉकर और एक महंगी गाड़ी के साथ-साथ कई कागजात और जेवरात भी मिले हैं। संजीव कुमार के ससुर राजकिशोर मंडल भारतीय रेल में कार्यरत है। सुबह 7 बजे के करीब निगरानी की यहां रेड पड़ी है। 20 से ज्यादा अफसरों की टीम इस रेड में शामिल है। आय से अधिक संपत्ति के मामले में ये कार्रवाई की गई है। वहीं बांका में डोकानिया पेट्रोल पंप के अपोजिट, बिजली ऑफिस परिसर में स्थित आवास पर निगरानी की टीम पहुंची है। साउथ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी में सप्लाई डिवीजन के इलेक्ट्रिकल एग्जीक्यूटिव इंजीनियर के पद पर संजीव कुमार गुप्ता कार्यरत हैं।

एग्जीक्यूटिव इंजीनियर संजीव कुमार गुप्ता के पूर्णिया के गोआसी पंचायत के बनिया टोला गांव के वार्ड 12 के पैतृक आवास पर निगरानी की रेड चल रही है। सुबह साढ़े 7-8 बजे के बीच निगरानी की ये रेड पड़ी।

# समस्तीपुर में सड़क हादसा, दो की मौत

## अलग-अलग स्थानों पर हुआ हादसा, पुलिस ने जब्त किया शव

समस्तीपुर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। समस्तीपुर में दो अलग-अलग स्थानों पर हुए सड़क हादसों में मोबाइल दुकानदार समेत दो की मौत हो गई। घटना अंगाघाट थाना क्षेत्र के रेवाड़ी ढाला व सरायरंजन के पटेल चौक के पास रात घटी। दोनों थानों की पुलिस ने दोनों शव को जब्त कर पोस्टमार्टम के लिए गुरुवार सुबह सदर अस्पताल भेजा है। दोनों शवों की पहचान कर ली गई है। दोनों घटना को लेकर दोनों थाने में अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज कराई जा रही है।

घटना के संबंध में बताया गया है कि मध्य रात्रि जिले के सिंघिया थाने के अगरौल वार्ड 9 निवासी मोबाइल दुकानदार कुणाल कुमार झा 30 वर्ष समस्तीपुर से अकेले बाइक से सिंघिया जा रहे थे। इसी दौरान रात अंगारघाट थाने के रेबाड़ी गांव के पास अज्ञात वाहन ने उन्हें कुचल डाला जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। देर रात सड़क किनारे पुलिस ने शव देखा। मृतक के जेब से बरामद आधार कार्ड के आधार पर परिवार वालों को सूचना दी गई।

गुरुवार सुबह सिंघिया से पहुंचे परिजनों ने शव की पहचान की। जिसके बाद पुलिस ने पंचनामा बना कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। अंगारघाट थानाध्यक्ष प्रेम प्रकाश आर्य ने कहा कि घटना को लेकर अज्ञात वाहन पर प्राथमिकी दर्ज की जा रही है।

उधर, सरायरंजन थाने के पटेल चौक के पास ऑटो और अज्ञात वाहन के बीच हुई टक्कर में पटना के एक ऑटो चालक की मौत हो गई। मृतक की पहचान पटना जिले के शाहपुर थाने के पतलपुर के चंद्रिका सिंह के पुत्र उदय शंकर सिंह 45 के रूप में की गई है। आधार कार्ड के आधार पर मृतक की पहचान कर पुलिस ने परिवार को सूचना दी है।

# पटना में पिस्टल के बल पर 5.4 लाख की लूट

## बैंक में पैसा जमा करने जा रहे थे फोर्ड हॉस्पिटल के सिक्योरिटी इंचार्ज, बाइक पर सवार थे दो अपराधी

पटना, 21 सितंबर (एजेंसियां)। पटना में फोर्ड हॉस्पिटल के सिक्योरिटी इंचार्ज अर्जुन सिंह से 5 लाख 40 हजार की लूट हुई है। मोटरसाइकिल सवार अपराधियों ने पिस्टल के बल पर घटना को अंजाम दिया है। दरअसल अर्जुन एम्बुलेंस से पैसा जमा करने सेंट्रल स्कूल के नजदीक बैंक ऑफ बड़ौदा के लिए निकले थे। एंबुलेंस से उतरकर अर्जुन ने ऑटो पकड़ा फिर मुन्ना चक के पास ऑटो छोड़कर पैदल ही बैंक की ओर जाने लगे। इस दौरान एक बाइक पर सवार दो अपराधियों ने पिस्टल के बल लूट की घटना को अंजाम देकर मौके से फरार हो गए।

घटना की जानकारी मिलते ही पत्रकार नगर थाना अध्यक्ष गजेंद्र कुमार मौके पर पहुंचे और मामले की छानबीन में जुट गए हैं। गजेंद्र कुमार ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि सिक्योरिटी इंचार्ज अर्जुन सिंह फोर्ड हॉस्पिटल से पांच लाख चालीस हजार 370 रुपए लेकर एम्बुलेंस में सेंट्रल स्कूल के नजदीक बैंक ऑफ बडौदा के ब्रांच में पैसा जमा करने जा रहे थे। एम्बुलेंस से उतरकर उन्होंने ऑटो पकड़ लिए और मुन्ना चक के पास मोटरसाइकिल सवार दो अपराधियों ने पौने चार बजे के आसपास पिस्टल के बल लूट की घटना को अंजाम देकर फरार हो गए।

जानकारी के अनुसार फोर्ड हॉस्पिटल से सिक्योरिटी इंचार्ज अर्जुन सिंह पांच लाख चालीस हजार 370 रुपए बैग में लेकर एक मरीज के एम्बुलेंस में बैठ गए थे। ताकि बैंक में जमा किया सके, लेकिन अर्जुन सिंह कांटी फैक्ट्री मोड़ पर ही एम्बुलेंस से उतर कर ऑटो पकड़ लिया और मुन्ना चक के पास ऑटो छोड़कर पैदल ही बैंक की ओर जाने लगे।

# बीजद ने अपने दो विधायकों को पार्टी से निकाला, मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने दी जानकारी

भुवनेश्वर, 21 सितंबर (एजेंसियां)।ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने अपनी पार्टी बिजू जनता दल (बीजद) को लेकर एक बड़ी जानकारी दी है। सीएम पटनायक ने बताया कि बीजद ने अपने दो विधायकों को पार्टी से निकाल दिया है। उन्होंने पार्टी से निकाले गए विधायकों के नाम का भी जिक्र किया है।

मीडिया को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'बिजू जनता दल (बीजद) से दो विधायकों को निकाल दिया गया है। उनमें से एक रेमुला के विधायक सुधांशु शेखर परिडा और दूसरे खांदापाड़ा के विधायक सौम्य रंजन पटनायक हैं।' सौम्य रंजन पटनायक को 12 सितंबर को पार्टी के उपाध्यक्ष पद से हटाया गया था। दरअसल, सौम्य रंजन ओडिया डेली संवाद के मालिक और संपादक हैं। उन्होंने ओडिया डेली संवाद में अपनी ही पार्टी के खिलाफ दो संपादकीय लिखे थे, जिसमें उन्होंने सीएम के निजी सचिव वीके पांडियन की आलोचना की थी। हालांकि, सौम्य रंजन के खिलाफ कार्रवाई तक की गई जब उनके खिलाफ आर्थिक अपराध शाखा ने धोखाधड़ी के मामले में केस दर्ज किया था। ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने जानकारी देते हुए कहा, 'यह संगठित धोखाधड़ी का एक गंभीर मामला है, जिसमें संवाद के 300 से अधिक कर्मचारियों के नाम पर फर्जी दस्तावेजों का उपयोग करके करोड़ो रुपये का ऋण लिया गया है। वहीं रेमुना विधायक सुधांशु शेखर परिडा पर किसानों के लिए दी गई तीन करोड़ रुपये की सब्सिडी का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया गया है। राज्य के विजलेंस फिलहाल इस मामले की जांच की जा रही है।' जहां बीजद ने अपने दो विधायकों को पार्टी से निकाल दिया, तो वहीं ओडिशा की राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री प्रमिला मलिक ने गुरुवार को नवीन पटनायक मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। सूत्रों के अनुसार प्रमिला मलिक ने अपना इस्तीफा सीएम पटनायक को सौंपा और उन्होंने इसे राज्यपाल के पास भेज दिया। प्रमिला मलिक के इस्तीफा देने के बाद अब नवीन पटनायक मंत्रीमंडल में मुख्यमंत्री समेत कुल 20 मंत्री हैं। प्रमिला मलिक ने इस्तीफा देने के बाद विधानसभा अध्यक्ष पद के लिए अपना नामांकन दाखिल कर दिया है। उनका अध्यक्ष बनना लगभग तय माना जा रहा है, क्योंकि राज्य के 147 सदस्यी सदन में बीजद के 13 सदस्य, तो वहीं भाजपा के 22 और कांग्रेस के नौ सदस्य हैं। सूत्रों के अनुसार भाजपा और कांग्रेस की तरफ से इस पद के लिए किसी भी उम्मीदवार के खड़े होने की संभावना नहीं है। बता दें कि विधानसभा अध्यक्ष पद का चुनाव 22 सितंबर को सुबह साढ़े नौ बजे होगा। इस चुनाव के लिए नामांकन भरने की आखिरी तारीख 21 सितंबर है।

# एयर इंडिया सेफ्टी चीफ एक महीने के लिए निलंबित, जांच में मिलीं सुरक्षा संबंधी कई खामियां

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। देश की विमानन निगरानी संस्था डीजीसीए (डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन) ने गुरुवार को जानकारी दी है कि उन्होंने एयर इंडिया के फ्लाइट सेफ्टी प्रमुख को एक महीने के लिए निलंबित कर दिया है। डीजीसीए ने बताया कि कुछ खामियों की वजह से यह फैसला लिया गया है। 25 और 26 जुलाई को डीजीसीए की एक टीम ने एयर इंडिया की निगरानी की। इस दौरान एयर इंडिया का आंतरिक ऑडिट, दुर्घटना की रोकथाम के कार्य और जरूरी तकनीकी मैनपावर की उपलब्धता को लेकर जांच की।

ऑडिट में पाई गईं की खामियां

डीजीसीए ने एक बयान जारी कर बताया कि ऑडिट के दौरान एयर इंडिया के रोकथाम निवारण इंतजामों, अपेक्षित और जरूरी तकनीकी कर्मचारियों की कमी पाई गई है। इसमें कहा गया है कि कमियों की पुष्टि के लिए एयर इंडिया के मुख्य उड़ान सुरक्षा अधिकारी राजीव गुप्ता को एक महीने के लिए निलंबित कर दिया गया है।

ऑडिट में ये भी खुलासा हुआ है कि एयर इंडिया द्वारा किए जाने वाले आंतरिक ऑडिट लापरवाही से किए गए थे और तय मानकों के अनुसार नहीं थे। इस पर डीजीसीए ने संबंधित ऑडिटर को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। डीजीसीए ने एयर इंडिया को निर्देश दिया है कि वह संबंधित ऑडिटर को किसी ऑडिट, सर्विलांस और जांच की जिम्मेदारी ना दे। डीजीसीए की दो सदस्यीय जांच टीम ने एयर इंडिया के आंतरिक सुरक्षा ऑडिट में खामियां पाई हैं।

निगरानी टीम की रिपोर्ट में कई गंभीर चिंताएं पैदा की है, जिन पर आगे विचार किया जा रहा है।

पूर्व में भी एयर इंडिया के खिलाफ हो चुकी है कार्रवाई

अतीत में भी डीजीसीए ने एयर इंडिया के खिलाफ नियमों के उल्लंघन और खामियों लेकर कार्रवाई की थी। बीते महीने ही डीजीसीए ने सिम्युलेटर ट्रेनिंग में कुछ कमियों के चलते मुंबई और हैदराबाद में एयर इंडिया की प्रशिक्षण सुविधाओं को एटीओ अनुमोदन को 10 दिनों तक निलंबित कर दिया था। इसी साल फरवरी में भी डीजीसीए ने एयर इंडिया की सहायक कंपनी एआईएक्स कनेक्ट के प्रशिक्षण प्रमुख को भी तीन महीने के लिए उनके पद से हटाने का आदेश दिया था। आरोप है कि पायलटों के प्रशिक्षण से संबधित कुछ मानदंडों का उल्लंघन किया जा रहा था।

# कनाडाई लोगों के लिए वीजा सेवा बंद करने से लाखों पंजाबियों पर पड़ेगा असरः सुखबीर बादल

चंडीगढ़, 21 सितंबर (एजेंसियां)। भारत ने गुरुवार को ₹परिचालन कारणों₹ का हवाला देते हुए कनाडा में वीजा सेवाओं को निलंबित कर दिया, शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख सुखबीर बादल ने गुरुवार को कहा, यह पंजाबियों के लिए बड़ी बाधा, अनिश्चितता और चिंता पैदा करने वाला है।

यह कहते हुए कि वह भारत में कनाडाई नागरिकों के लिए वीज़ा सेवाओं के अनिश्चित काल के लिए निलंबन से बहुत चिंतित हैं, बादल ने कहा, ₹यह भारतीय मूल के विदेशी नागरिकों या उस देश में छात्रों के रूप में रहने वाले लाखों पंजाबियों को प्रभावित करता है। यह पंजाबियों के लिए बड़ी बाधाएं, अनिश्चितता और चिंता पैदा करने वाला है, खासकर सिखों के सबसे देशभक्त समुदाय के सदस्यों के लिए, जिन्होंने न केवल देश की आजादी के लिए बल्कि सीमाओं पर विदेशी आक्रामकता से लड़ने के लिए भी अद्वितीय बलिदान दिया है। वीज़ा सुविधा की बाधाएं विशेष रूप से हमारे युवाओं को प्रभावित करेंगी, जो हर साल हजारों की संख्या में छात्र के रूप में कनाडा जाते हैं और जो अब वहां रह रहे हैं। मेरे पास कनाडा में पंजाबियों और उनके परिवारों और रिश्तेदारों से कॉल और संदेशों की बाढ़ आ गई है।

वे अपनी मातृभूमि की सुरक्षित और सुगम यात्रा सुनिश्चित करने के लिए अकाली दल का हस्तक्षेप।"

स्थिति की गंभीरता को समझते हुए, शिरोमणि अकाली दल ने दोनों देशों की सरकारों से मामले का जल्द से जल्द समाधान खोजने का आग्रह किया। हालांकि, कनाडाई लोगों के वीज़ा आवेदनों की प्रारंभिक जांच के लिए नियुक्त निजी एजेंसी, बीएलएस ने अपनी वेबसाइट पर एक नोट पोस्ट किया, इसमें कहा गया, ₹परिचालन कारणों से, 21 सितंबर 2023 से, भारतीय वीज़ा सेवाओं को अगली सूचना तक निलंबित कर दिया गया है। कृपया आगे के अपडेट के लिए बीएलएस वेबसाइट चेक करते रहें। खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर भारत और कनाडा के बीच राजनयिक रिश्ते में खटास आ गई है।

# जम्मू में पहली बार भारतीय वायुसेना का एयर शो आज

## सूर्य किरण टीम हॉक एमके-132 के साथ बनाएगी फॉर्मेशन; आकाशगंगा स्काई डाइविंग टीम स्टंट करेगी

जम्मू, 21 सितंबर (एजेंसियां)। जम्मू एयरफोर्स स्टेशन में पहली बार भारतीय वायुसेना का एयर शो होने वाला है। यह शो 22 सितंबर को सुबह 9 बजे से 11 बजे तक चलेगा। इस दौरान लोगों के लिए एयर अवेयरनेस इवेंट भी होगा। जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय के 76 साल पूरे होने और जम्मू वायु सेना स्टेशन की डायमंड जुबली पर इस शो का आयोजन हो रहा है।

इस एयर शो में सूर्य किरण एरोबेटिक टीम हॉक एमके 132 विमान से देश की ताकत दिखाएगी। इसके अलावा, MI-17 हेलिकॉप्टरों के डिस्प्ले के साथ एयर वॉरियर ड्रिल टीम, आकाशगंगा डेयरडेविल स्काई डाइविंग टीम आसमान में अपने करतब दिखाएंगी।

शो में भारतीय वायुसेना के एयर वॉरियर सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा का भी प्रदर्शन किया जाएगा। सुखोई फाइटर जेट इसमें हिस्सा नहीं ले रहा है। इस शो को आम लोग भी देख सकेंगे। 20 सितंबर को भारतीय वायु सेना के जवानों ने इस शो को लेकर रिहर्सल भी की।

शो में क्या खास होगा...

सूर्यकिरण एरोबैटिक टीम के विंग कमांडर सिधेश कार्तिक ने बताया कि यह 25 मिनट का शो है। इसे दो भागों में परफॉर्म किया जाएगा। पहले भाग में 9 विमानों के साथ अलग-अलग फॉर्मेशन बनाए जाएंगे और अलग-अलग वॉरफेयर होगा। यह हिस्सा फ्लाइट्स की सटीकता को दर्शाएगा।

दूसरे भाग में एरोबैटिक टीम खुद को छोटी यूनिट्स में बांटकर और ज्यादा रोमांचक स्टंट करने के लिए जमीन के करीब आती है। इन स्टंट्स से बताने की कोशिश करते हैं कि एक आधुनिक लड़ाकू विमान क्या कर सकते हैं।

**पिछले हफ्ते एयर शो जयपुर में हुआ था**

इससे पहले, 15 सितंबर को राजस्थान के जयपुर में जलमहल के ऊपर भारतीय वायुसेना के 9 हॉक विमानों ने हैरतअंगेज करतब दिखाए थे। करीब एक घंटे तक सूर्य किरण एरोबेटिक टीम ने एयर शो किया था। इसमें तीन पायलट जयपुर के थे। सभी विमानों ने जयपुर एयरपोर्ट से उड़ान भरी थी।

# शिवसेना विधायकों की अयोग्यता का मामला : 'न देरी करेंगे और न ही जल्दबाजी', विधानसभा स्पीकर नार्वेकर का बयान

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। गुरुवार को शिवसेना विधायकों की अयोग्यता मामले पर महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने टिप्पणी की है। उन्होंने कहा, शिवसेना विधायकों की अयोग्यता मामले के फैसले में देरी नहीं करेंगे और न ही इस मामले में जल्दबाजी करेंगे। इसी के साथ ही उन्होंने जोर देते हुए कहा, वह जो भी निर्णय लेंगे वह संवैधानिक होगा। उन्होंने कहा, मैं केवल यह कह सकता हूं कि मैं इसमें देरी नहीं करूंगा और न ही जल्दबाजी करूंगा।

**क्या था मामला**

पिछले साल जून में एकनाथ शिंदे अपने समर्थक विधायकों के साथ शिवसेना से अलग हो गए थे। जिसके बाद भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से वह मुख्यमंत्री बने। उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाले गुट ने दलबदल विरोधी कानूनों के तहत शिंदे सहित बागी विधायकों को अयोग्य ठहराने की मांग करते हुए विधानसभा अध्यक्ष से शिकायत की थी। सुप्रीम कोर्ट ने 11 मई को स्पीकर को उचित समय के भीतर अयोग्यता मामले पर निर्णय लेने का निर्देश दिया था।

**शिवसेना(यूबीटी) का दावा, जानबूझकर कर रहे हैं देरी**

शिवसेना (यूबीटी) ने विधानसभा अध्यक्ष नार्वेकर पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा, अयोग्यता याचिकाओं पर निर्णय लेने में जानबूझकर देरी की जा रही है।

# चलती कार में नाबालिग के साथ दुष्कर्म; आरोपी गिरफ्तार

**आईपीसी और पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज**

मुंबई, 21 सितंबर (एजेंसियां)। मुंबई में एक व्यक्ति ने नाबालिक के साथ चलती कार में दुष्कर्म किया। वहीं एक अन्य मामले में बांद्रा वर्ली सी लिंग से एक व्यक्ति ने छलांग लगा दी। मुंबई पुलिस ने एक व्यक्ति को चलती कार में एक 14 वर्षीय लड़की के साथ दुष्कर्म करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। आरोपियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 376 और पॉक्सो अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। वहीं एक अन्य मामले में बांद्रा वर्ली सी लिंक से सुबह के करीब तीन बजकर 45 मिनट पर एक व्यक्ति ने छलांग लगा दी। तटरक्षक बल और दमकर की टीम व्यक्ति की तलाश में जुटी हुई है। यह घटना वर्ली पुलिस स्टेशन की सीमा में घटी।

# 'भाजपा और एआईएडीएमके के बीच कोई समस्या नहीं' मतभेद के दावों के बीच अन्नामलाई का बड़ा बयान

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने गुरुवार को कहा कि उनकी पार्टी और अन्नाद्रमुक के बीच कोई समस्या नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें एआईएडीएमके के किसी भी नेता से कोई दिक्कत नहीं है। मतभेद के दावों के बीच उनका यह बड़ा बयान सामने आया है। अन्नामलाई ने आगे कहा कि एनडीए में समान विचारधारा वाले दलों को जोड़ने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक माध्यम हैं और 2024 के लोकसभा चुनावों में पीएम पद के लिए उनकी उम्मीदवारी स्वीकार करने वाले सभी लोग एनडीए गठबंधन में हैं, एसे में क्या अन्नाद्रमुक इसे स्वीकार करती है? तो इसका उत्तर हां होगा।

यहां संवाददाताओं से उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने मोदी के नेतृत्व को स्वीकार किया है, उन्हें हाथ मिलाना चाहिए। भाजपा नेता ने दोहराया कि उन्होंने द्रविड़ आइकन और दिवंगत मुख्यमंत्री सीएन अन्नादुरई के बारे में बुरा नहीं कहा था और केवल 1956 की एक घटना का जिक्र किया था। इसलिए, माफी मांगने का कोई सवाल ही नहीं है।

अन्नामलाई आगे बोले कि दिवंगत द्रमुक संरक्षक एम करुणानिधि ने 1998 में मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उसी घटना को याद किया था।

उन्होंने कहा कि वैचारिक रूप से, अन्नाद्रमुक और भाजपा अलग-अलग हैं और वैचारिक दृष्टिकोण के संदर्भ में मतभेद असामान्य नहीं हैं और यह कोई बड़ी बात नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रधानमंत्री मोदी और अन्नाद्रमुक मजबूत नेतृत्व के साथ एकजुट देश के लिए खड़े हैं।

# 'आपको होमवर्क करके आना चाहिए'; जगदीप धनखड़ ने आखिर क्यों केसी वेणुगोपाल को दी ये सलाह?

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। ये तब हुआ जब राज्यसभा में महिला आरक्षण बिल को लेकर बहस चल रही थी। इस दौरान कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल ने नई संसद के उद्घाटन में राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति की अनुपस्थिति का ज़िक्र किया गया। जिसपर सभापति जगदीप धनखड़ भड़क गए। इस दिनों संसद के विशेष सत्र में महिला आरक्षण बिल को लेकर सदन में खूब गहमा-गहमी हो रही है। इस बिल पर लोकसभा में चर्चा के बाद गुरुवार को राज्यसभा में इस पर बहस हुई। इस दौरान कुछ ऐसा हुआ कि राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल को डांट लगा दी। उन्होंने केसी वेणुगोपाल से कहा कि आपको अपना होमवर्क करके आना चाहिए। दरअसल, ये तब हुआ जब राज्यसभा में महिला आरक्षण बिल को लेकर बहस चल रही थी। इस दौरान कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल ने नई संसद के उद्घाटन में राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति की अनुपस्थिति का ज़िक्र किया गया। जिसपर सभापति जगदीप धनखड़ भड़क गए। उन्होंने वेणुगोपाल को टोंकते हुए कहा कि कोई संवैधानिक उल्लंघन नहीं हुआ है, आपको अपना होमवर्क करना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा, 'हम कमियों पर समझौता नहीं कर सकते। हम दूसरों की अज्ञानता का व्यापार नहीं कर सकते। मैं यह स्पष्ट कर दूं कि उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति को देश में सर्वोच्च सम्मान दिया गया है। कोई संवैधानिक उल्लंघन नहीं हुआ है। राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति अथवा चेयरमैन का पद अपेक्षानुसार उनके स्तर का ही रखना होगा और वही किया गया। पिछले तीन दिनों में भी आपने यही देखा है। प्रमुख विपक्षी दल के सदस्य के रूप में मैं आपसे अपील करूंगा कि आप अपना होमवर्क अवश्य करें। पता लगाएं।'

उपराष्ट्रपति इतने पर ही नहीं रुके। उन्होंने आगे कहा, टजब आप राष्ट्रपति को बीच में लाते हैं तो इससे अच्छा संदेश नहीं जाता। संविधान पढ़ें तो आप पाएंगे कि भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित की गई है। राष्ट्रपति संसद के प्रत्येक सत्र को संबोधित करेंगे, यही संविधान में मूल निर्देश था। राष्ट्रपति को संविधान के अनुरूप कार्य करना होगा।

# जम्मू-कश्मीर पुलिस का डीएसपी भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, जबरन वसूली के आरोप में गिरफ्तार

श्रीनगर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने गुरुवार को यहां भ्रष्टाचार, जबरन वसूली और धोखाधड़ी के आरोप में एक पुलिस उपाधीक्षक (डिप्टी एसपी) को गिरफ्तार किया।

आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि पुलिस की एक टीम ने दो दिन श्रीनगर में पहले डिप्टी एसपी शेख आदिल मुश्ताक के घर की तलाशी ली।सूत्रों ने कहा, ₹गिरफ्तारी से बचने के लिए वह घर से बाहर कूद गया था। उसके आवास से एक लैपटॉप की तलाशी के दौरान कुछ आपत्तिजनक दस्तावेज, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण आदि बरामद किए गए थे।₹नौगाम पुलिस स्टेशन में अधिकारी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई और उसे आज गिरफ्तार कर लिया गया।₹उन्होंने बताया कि एसपी साउथ के नेतृत्व में गठित एक एसआईटी मामले की जांच करेगी।

# 7 क्विंटल से अधिक अवैध गाँजा से भरा आईसर ट्रक ज़ब्त, एक आरोपी गिरफ्तार

चित्तौड़गढ़ , 21 सितंबर (एजेंसियां)। सदर निम्बाहेड़ा थाना पुलिस ने गुरुवार को नाकाबंदी के दौरान अवैध मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्यवाही करते हुए नीमच की तरफ से आई एक आयशर ट्रक से 7 क्विंटल 06 किलो 500 ग्राम अवैध गांजा जब्त कर उत्तरप्रदेश के एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

जिले में अवैध मादक पदार्थों की खरीद-फरोख्त व परिवहन एवं भण्डारण करने वालों के खिलाफ कार्यवाही के तहत गुरुवार को थाना सदर निम्बाहेडा के ईन्चार्ज भगवतसिंह उप निरीक्षक मय जाप्ता द्वारा नीमच-चित्तौड़गढ हाईवे पर नाकाबन्दी की जा रही थी। नाकाबन्दी के दौरान नीमच की तरफ से एक आईसर ट्रक आते हुए नजर आया। जिसको चैक करने हेतु थाना इन्चार्ज ने हाथ का ईशारा किया तो चालक ने ट्रक की गति बढा नाकाबंदी पोईन्ट से आगे निकल कर भागने का प्रयास किया।

# बॉम्बे हाईकोर्ट: एल्गर परिषद-माओवादी संबंध मामले में आरोपी महेश राउत को मिली जमानत

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। एल्गार परिषद माओवादी संबंध मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट ने आरोपी महेश राउत को जमानत दे दी है। राउत ने जमानत की मांग करते हुए 2022 में उच्च न्यायालय का रुख किया था।

बॉम्बे हाईकोर्ट में गुरुवार को एल्गार परिषद-माओवादी संबंध मामले पर सुनवाई हुई। इस दौरान हाईकोर्ट ने आरोपी महेश राउत को जमानत दे दी है। पीठ ने कहा, वह एनआईए की इस दलील को स्वीकार करने में असमर्थ है कि राउत ने प्रतिबंधित संगठन में लोगों को भर्ती करने का अपराध किया है। जिन लोगों पर संगठन में भर्ती होने या शामिल होने का आरोप है,उनमें से किसी का भी कोई सबूत नहीं है।

सुनवाई के दौरान पीठ ने कहा, अधिक से अधिक यह कहा जा सकता है कि राउत सीपीआई (माओवादी) का सदस्य था। पीठ ने कहा, राउत पांच साल से अधिक समय से प्री-ट्रायल कैद में थे और उनका कोई आपराधिक इतिहास नहीं है। इसके साथ ही पीठ ने राउत को जमानत के तौर पर एक लाख रुपये की जमानत राशि भरने का निर्देश दिया। साथ ही कहा, राउत मुंबई छोड़कर बाहर नहीं जा सकते हैं, यदि वे बाहर यात्रा करना चाहते हैं तो उन्हें विशेष एनआईए अदालत से पूर्व अनुमति लेनी होगी।

राउत ने जमानत की मांग करते हुए 2022 में उच्च न्यायालय का रुख किया था। राउत ने विशेष एनआईए अदालत द्वारा उन्हें जमानत न देने के आदेश को चुनौती दी थी। राउत ने अपनी याचिका में कहा था कि उनकी हिरासत अनुचित थी।

एनआईए ने किया था जमानत देने का विरोध

एनआईए ने याचिका का विरोध करते हुए कहा था कि गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत दर्ज आरोपी को संवैधानिक आधार पर जमानत देना उचित नहीं है। इस मामले में 16 कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें से पांच फिलहाल जमानत पर हैं।

स्वतंत्र वार्ता

शुक्रवार, 22 सितंबर- 2023

# भाजपा का विधेयक के सहारे महिलाओं के वोटों पर नज़र



अशोक भाटिया

अगले 5 राज्यों व 2024 के लोकसभा चुनावों की तैयारियों में जुटी भारतीय जनता पार्टी ने महिला आरक्षण का बड़ा दांव चला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने संसद के विशेष सत्र में महिला आरक्षण से संबंधित नारी शक्ति वंदन विधेयक पेश किया। लोकसभा में लंबी चर्चा के बाद ये विधेयक पारित हो गया है। विधेयक के पक्ष में 454 वोट पड़े जबकि इसके विरोध में केवल दो वोट पड़े। विपक्षी कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी पार्टियों ने कुछ आपत्तियों, कुछ सुझावों के साथ बिल के समर्थन में मतदान किया, ऐसा नहीं लगता कि राज्यसभा में भी कोई बाधा आएगी। मोदी सरकार के इस कदम को 2024 चुनाव से पहले मास्टर स्ट्रोक बताया जा रहा है, वहीं जानकार इसे पांच राज्यों के चुनाव से जोड़कर देख रहे हैं। दरअसल महिला आरक्षण बिल भाजपा के कोर एजेंडे में रहा है। अटल बिहारी सरकार के समय भी इसे पास कराने की कोशिश की गई थी लेकिन तब बहुमत नहीं होने की वजह से यह अटक गया। मोदी सरकार में भी लंबे वक्त से इसे लागू करने की मांग उठ रही है।भारतीय जनता पार्टी ने 2019 के चुनावी घोषणापत्र में भी महिलाओं को संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण देने का वादा किया था। चर्चा इस बात की है कि भाजपा अपने सियासी समीकरण को दुरुस्त करने के लिए इस बिल का सहारा ले सकती है। गौरतलब है कि लोकसभा से पहले मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान समेत पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव हैं। विधानसभा चुनाव में लगभग दो महीने का समय बचा है। मध्य प्रदेश से लेकर छत्तीसगढ़ और राजस्थान तक यात्राओं की सियासत चल रही है। छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस राज्य सरकार की लोक लुभावन घोषणाओं के सहारे सत्ता छीनने की कोशिश में है तो वहीं भारतीय जनता पार्टी परिवर्तन यात्राओं के जरिए सत्ता में वापसी की। मध्य प्रदेश में सीएम शिवराज जन आशीर्वाद यात्रा पर निकले हैं तो कांग्रेस भी जनाक्रोश यात्रा निकाल रही है। राजनीतिक विश्लेषक बताते है कि लोकसभा चुनाव में अभी करीब छह महीने का समय बचा है और शीतकालीन सत्र में करीब दो महीने का। सरकार का फोकस अगर बस लोकसभा चुनाव ही होता तो ये बिल शीतकालीन सत्र में लाया जाता। तब तक समय चक्र की चाल चुनाव और तारीख की दूरी थोड़ी और कम कर चुकी होती लेकिन सरकार ये बिल विशेष सत्र में लेकर आई जो बताता है कि निगाहें भले ही 2024 पर हों, निशाना पांच राज्यों के चुनाव हैं। अब सवाल ये भी उठ रहे हैं कि राज्यों के चुनाव में ऐसा क्या है कि मोदी सरकार को महिला आरक्षण के जरिए एजेंडा सेट करना पड़ रहा है? ये समझने के लिए भाजपा और कांग्रेस की रणनीति के साथ ही नेतृत्व की चर्चा जरूरी है। भाजपा के लिए चुनावी राज्यों में कई चुनौतियां हैं। मध्य प्रदेश में सत्ता में रहकर भी पार्टी मुख्यमंत्री पद का चेहरा नहीं बता पा रही है। छत्तीसगढ़ में साढ़े चार साल तक भाजपा नेताओं की निष्क्रियता के साथ राजस्थान में वसुंधरा राजे की पार्टी की परिवर्तन यात्रा से दूरी को लेकर भी सवाल खड़े हो रहे हैं। दूसरी तरफ कांग्रेस जहां सत्ता में है, वहां लोकलुभावन योजनाओं के सहारे माहौल बनाने की रणनीति पर अमल शुरू कर दिया। पार्टी जहां विपक्ष में है, वहां स्थानीय समस्याओं के साथ ही महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर सरकार को घेरना शुरू कर दिया, प्याज और टमाटर की कीमतें याद दिलाई जाने लगीं। कांग्रेस ने मध्य प्रदेश में महिलाओं पर फोकस कर 500 रुपये में गैस सिलेंडर और हर महीने 1500 रुपये देने की गारंटी का कार्ड भी चल चुकी है। महिला मतदाता भाजपा की ताकत रही हैं और इस वोट बैंक में सेंध का परिणाम पार्टी कर्नाटक नतीजों में देख चुकी है। इंडिया टुडे एक्सिस माई इंडिया के एग्जिट पोल के मुताबिक कर्नाटक चुनाव में 44 फीसदी महिलाओं ने कांग्रेस को वोट किया तो वहीं भाजपा के पक्ष में 33 फीसदी महिला मतदाताओं ने। इसका इम्पैक्ट उत्तर प्रदेश के नतीजों से ऐसे समझा जा सकता है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की बड़ी जीत के बाद खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसके लिए खासतौर पर महिला मतदाताओं का धन्यवाद किया था। उत्तर प्रदेश चुनाव में इंडिया टुडे एक्सिस माई इंडिया के एग्जिट पोल के मुताबिक 48 फीसदी महिला मतदाताओं ने भाजपा के पक्ष में मतदान किया था वहीं सपा को 32 फीसदी महिलाओं के वोट मिले थे। महिला मतों में ये 16 फीसदी की लीड आधी आबादी के नजरिए से देखें तो करीब 8 फीसदी पहुंचती है जो बड़ा अंतर है। जानकारों का कहना है कि मध्य प्रदेश में कांग्रेस का स्थानीय समस्याएं उठाना, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सरकार की ओर से लगातार लोकलुभावन योजनाओं का ऐलान भाजपा के लिए मुसीबत बन रहा था। कांग्रेस की रणनीति चुनाव लोकलाइज करने की रही है और भाजपा शायद समझ रही है कि ऐसा हुआ तो उसकी संभावनाएं कमजोर होंगी। यही वजह है कि चुनावी राज्यों में पार्टी सनातन विवाद से लेकर जी 20 की सफलता तक की बात कर रही है, किसी को मुख्यमंत्री फेस बनाने से बचते हुए चुनाव अभियान को प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे पर लाने की कोशिश कर रही है। महिला आरक्षण सीधे-सीधे महिलाओं से जुड़ा है ही, राज्यों से भी जुड़ा है। ऐसे में विरोधियों के लिए भाजपा पर ये आरोप लगाना भी मुश्किल होगा कि पार्टी राष्ट्रीय मुद्दे के सहारे राज्य चुनाव में वोट मांग रही है। महिला आरक्षण के दांव को महंगाई की वजह से महिलाओं की भाजपा को लेकर नाराजगी दूर करने की कोशिश भी बताया जा रहा है। चुनाव आयोग के 2019 के डेटा के मुताबिक भारत में कुल 91 करोड़ मतदाता में महिला वोटर्स की संख्या करीब 44 करोड़ है।

आयोग के मुताबिक पिछले लोकसभा चुनाव में वोट डालने के मामले में पुरुषों के मुकाबले महिलाएं आगे रहीं। आयोग के मुताबिक लोकसभा चुनाव 2019 में 67.02 प्रतिशत पुरुष और 67.18 प्रतिशत महिलाओं ने मतदान किया था। तमिलनाडु, अरुणाचल, उत्तराखंड और गोवा समेत 12 राज्यों में महिलाओं वोटरों ने अधिक मतदान किया। वहीं बिहार, ओडिशा और कर्नाटक में दोनों के वोट करीब-करीब बराबर पड़े। इन 12 राज्यों में लोकसभा की करीब 200 सीटें हैं। भाजपा को तमिलनाडु, केरल छोड़कर बाकी के राज्यों में पिछले चुनाव में बंपर जीत मिली थी।2014 में महिलाओं के मुकाबले पुरुषों ने अधिक मतदान किया था। आयोग के मुताबिक पुरुषों के 67.09 तो महिलाओं के 65. 63 वोट पड़े थे। हालांकि, बिहार, उत्तराखंड, तमिलनाडु जैसे राज्यों में महिलाओं के वोट अधिक पडे.। 2019 में भाजपा की प्रचंड जीत के पीछे महिला वोटरों की मुख्य भूमिका मानी गई। सीएसडीएस के मुताबिक 2019 में भाजपा को कुल 37 प्रतिशत वोट मिले, जबकि उसे वोट देने वाली महिलाओं में से 36 फीसदी के वोट मिले। कांग्रेस को सिर्फ 20 प्रतिशत महिलाओं का समर्थन मिला। महिलाओं के 44 प्रतिशत वोट अन्य पार्टियों को मिले। अन्य पार्टियों में तृणमूल, बीजू जनता दल, बीआरएस और जेडीयू को सबसे अधिक महिलाओं का वोट मिला। सीएसडीएस के मुताबिक गुजरात में भाजपा को कुल 62 प्रतिशत वोट प्राप्त हुए, जबकि उसे महिलाओं के 64 प्रतिशत वोट मिले। इसी तरह बिहार, असम, ओडिशा और उत्तर प्रदेश में भाजपा के मिले कुल वोट में महिला मतदाताओं की संख्या अधिक था। उत्तर प्रदेश में भाजपा को कुल 49 प्रतिशत वोट मिला, लेकिन यहां उसे वोट देने वाली महिलाओं में से 51 फीसदी के वोट मिले।

तमिलनाडु और महाराष्ट्र में भाजपा को दोनों के बराबर वोट मिले। जिन राज्यों में भाजपा को महिलाओं के अधिक वोट मिले, वहां पार्टी ने बंपर जीत दर्ज की। उदाहरण के लिए- गुजरात में भाजपा को सभी 26 सीटों पर जीत मिली। इसी तरह बिहार में पार्टी ने 16, ओडिशा में 10 और असम में 9 सीटों पर जीत हासिल की।

# कनाडा को कड़ा संदेश

भारत और कनाडा के बीच छिड़ा राजनयिक तनाव अब किसी से छुपा नहीं रह गया है। इसलिए भारत ने सरकार ने कनाडा के खिलाफ कडा और बड़ा फैसला लिया है। भारत ने कनाडा के लोगों के लिए वीजा सेवाएं निलंबित कर दी है, जो अगली सूचना तक जारी रहेगी। बता दें कि खालिस्तानी चरमपंथ के मसले पर भारत और कनाडा के संबंध सबसे निचले स्तर तक पहुंच गए हैं। हालात की गंभीरता को देखते हुए भारत ने अपने नागरिकों को कनाडा के कुछ क्षेत्रों में यात्रा करने से बचने और अतिरिक्त सावधानी बरतने की सलाह दी है। बता दें कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने बीते सोमवार को संसद के आपातकालीन सत्र में चरमपंथी खालिस्तानी टाइगर फोर्स के प्रमुख रहे हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंटों का हाथ होने का आरोप लगा कर एक वरिष्ठ भारतीय राजनयिक को निष्कासित कर दिया। यही नहीं इस मामले को अंतरराष्ट्रीय मंच पर ले जाते हुए उन्होंने अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया और फ्रांस के समक्ष भी यह मुद्दा उठाया। महज आशंका के आधार पर कनाडा के इस कदम पर कडा एतराज जताते हुए भारत ने भी कनाडा के शीर्ष राजनयिक को निष्कासित कर पांच दिन में देश छोड़ने का फरमान सुना कर कड़ा संदेश दिया है। बताना जरूरी है कि भारत चरमपंथी तत्त्वों पर नरमी को लेकर कनाडा को कई बार समझाने की कोशिश की, लेकिन वह अपने अडियल रुख पर अडा रहा। वहां बैठे खालिस्तान समर्थक लगातार भारत के खिलाफ विष वमन करते रहे हैं। हद तो तब हो गई जब अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड में वहां की सरकार उनके प्रति नरम रुख अपनाती रही। लिहाजा आज भी वहां दर्जन भर से ज्यादा खालिस्तान समर्थक और भारत विरोधी संगठन अपने काम को अंजाम दे रहे हैं। निज्जर ऐसे ही एक संगठन में प्रमुख हैसियत रखता था, जो पंजाब को भारत से अलग स्वतंत्र खालिस्तान बनाने की मांग को लेकर कनाडा समेत कई देशों में जनमत संग्रह कराता था। जून माह में हरदीप सिंह निज्जर की कनाडा के सरे शहर में दो अज्ञात हमलावरों ने गोली मार कर हत्या कर दी थी। इसके बाद वहां भारतीय राजनयिकों, भारतवंशियों पर हमले तेज हो गए। मंदिरों में भी तोड़फोड़ की जाने लगी। लेकिन वहां की सरकार आंखें बंद किए बैठी रही। भारत लंबे समय से इन घटनाओं और कनाडा सरकार के रवैए पर सख्त रुख अपनाने से बचता आ रहा था, लेकिन हाल ही में संपन्न जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान दिल्ली से खरी-खरी सुनने के बाद स्वदेश लौटे ट्रूडो ने जैसे ही अक्तूबर में प्रस्तावित एक व्यापार समझौते को रद्द करने का एलान किया तो भारत ने भी मुक्त व्यापार समझौते को लेकर कनाडा के साथ चल रही बातचीत पर रोक कर कड़ा संदेश दिया। जाहिर है, कनाडा में यह मामला सीधे राजनीति से जुड़ा है। सिख फार जस्टिस जैसे संगठन ट्रूडो की लिबरल पार्टी को समर्थन देते हैं। ट्रूडो के मंत्रिमंडल में भी कई खालिस्तान समर्थक मंत्री हैं। यही वजह है कि ट्रूडो भारत की मांग को अनसुना करते आ रहे हैं। बता दें कि कनाडा में लगभग सोलह लाख भारतवंशी रहते हैं। अब तक दोनों देशों के कारोबारी-सामरिक रिश्ते आमतौर पर सौहार्दपूर्ण रहे हैं, लेकिन खालिस्तानी चरमपंथ के उभार और कनाडाई राजनीतिक नेतृत्व से उन्हें मिली शह के कारण संबंधों में खटास की गहरी खाई बन गई है। बता दें कि कनाडा भारत का दसवां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार भी है, लेकिन यह साझेदारी अपनी संप्रभुता, स्वतंत्रता एवं आंतरिक सुरक्षा की कीमत पर जारी नहीं रखी जा सकती। कनाडा को यह समझने की जरूरत है कि खालिस्तान चरमपंथियों की वजह से भारत में जो जटिलताएं खड़ी की जा रही हैं वह कितना संवेदनशील और गंभीर है।

# नैतिकता,सदाचार से कोसों दूर होती राजनैतिक विचारधाराएं



संजीव ठाकुर

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि सिद्धांतों के बिना राजनीति पाप है। भारतीय राजनीति का उद्भव प्राचीन काल से हुआ है,किंतु इसकी प्रकृति में परिवर्तन तब आया जब भारत विश्व स्तर पर एक आधुनिक राज्य के रूप में स्थापित हुआ। भारतीय राजनीति में स्वतंत्रता के पूर्व नैतिकता एवं संस्कृति की एकता के दम पर स्वतंत्रता संग्राम पर विजय प्राप्त की थी। विवेकानंद, सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री,सरदार वल्लभभाई पटेल, लाला लाजपत राय और ना जाने कितने महान व्यक्तियों ने नैतिकता और संस्कृति में एकजुट होकर ब्रितानी हुकूमत को देश से भगाया था। देश का स्वतंत्रता संग्राम जनप्रतिनिधियों को नैतिकता के पालन के लिए प्रोत्साहित करता रहा है। जब भारत में स्वतंत्र लोकतांत्रिक राजनीति का आरंभ हुआ तो नैतिकता का पतन, क्षरण आरंभ हो गया। राजनीति धीरे धीरे सिद्धांत से विमुख होती गई तथा इसकी दशा और दिशा मैं नैतिकता का क्षरण तथा पतन धीरे-धीरे प्रारंभ हो गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह माना जाता रहा है की राजनीति में अनैतिकता के पनपने के दो प्रमुख कारण माने गए धनबल और बाहुबल। राजनीति में ऐसा कहा जाता है कि जिसके पास धन होता है उसके पास बल भी होता है, और भारतीय राजनीति में और कई प्रदेशों के संदर्भ में यह बात सर्वथा उचित प्रतीत होती है। भारतीय राजनीति में धनबल और बाहुबल का नकारात्मक प्रभाव नैतिकता के पतन के रूप में सामने आया है। स्वतंत्रता के पश्चात राजनेताओं में स्वयं के लिए धन एकत्र करना एवं येन केन प्रकारेण सत्ता स्थापित करने के प्रयास के कारण नैतिकता धीरे-धीरे स्खलित होती गई है। नेताओं का बेईमानी और भ्रष्ट कार्य में लिप्त होना भी राजनीति में नैतिकता के पतन का प्रमुख कारण है,और यही कारण है कि आज अधिकतर भारतीय राजनेताओं पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए गए हैं, एवं उन पर मुकदमा भी चल रहा है। यह सर्व विदित है कि सार्वजनिक संपत्ति को अपनी स्वयं की संपत्ति बनाने की होड़ में राजनेताओं को कर्तव्य पथ से विमुख होते देखा गया है। राजनीति में राजनेताओं ने इसे संपत्ति कमाने का जरिया ही मान लिया है। सार्वजनिक संसाधनों का पूरा नियंत्रण राजनेताओं के पास होता है इसका उपयोग में अपने संसदीय, विधानसभा क्षेत्र के लिए करते हैं। इस तरह पूरे राज्य स्वदेश के संसाधनों का किसी एक क्षेत्र में निवेश करते जाते हैं, जो अनैतिकता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। राजनीति में भाई भतीजावाद एक सामान्य बहुत चर्चित लक्षण है, कोई भी राजनेता आज यह चाहता है कि योग्यता हो ना हो कोई भी बड़ा पद उसके भाई, भतीजे ,पत्नी ,बेटे आदि को मिल जाए, इतना ही नहीं कई बार सगे संबंधियों के अपराधी होते हुए भी राजनीतिक पद अथवा चुनावी टिकट दिलाने का प्रयास करते हैं। भारतीय राजनीति में क्रोनी कैपिटलिस्म यानी उद्योगपतियों एवं राजनीतिज्ञों का आपस में गठजोड़ को क्रोनी कैपिटलिस्म माना जाता है। इसमें उद्योगपति राजनीतिक चंदा का हवाला देते हुए राजनेताओं से देश की नीतियों को अपने पक्ष में करवा लेते हैं और इस तरह जनता का शोषण शुरू हो जाता है। भारतीय राजनीति में इस तरह के आरोप लंबे समय से लगते आ रहे हैं।

# कोचिंग सेंटरों को माफिया करार करके प्रतिबन्ध की जरूरत



डॉ प्रियंका सौरभ

आजकल हम आये रोज परीक्षाओं के लिए कोचिंग करने वाले छात्रों द्वारा आत्महत्या के बढ़ते मामलों को सुनते है। जैसे ही छात्र आत्महत्या बढ़ती है, हमारी सरकारें कोचिंग माफिया को शिक्षा ऋण के बोझ के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। माता-पिता पर शैक्षिक ऋण का बोझ छात्रों के बीच तनाव के कारणों में से एक है। और इसके लिए केंद्र को एक नीति बनानी चाहिए ताकि माता-पिता को शिक्षा के लिए पैसे उधार न लेना पड़े। कोचिंग संस्थान सस्ते नहीं हैं, और इनकी फीस माता-पिता, विशेषकर कम आय वाले परिवारों पर काफी वित्तीय बोझ हो सकती है। फीस के अलावा, अध्ययन सामग्री, परिवहन और आवास के लिए भारी अतिरिक्त शुल्क हो सकता है। माता-पिता को कोचिंग के खर्चों को कवर करने के लिए ऋण लेने के लिए भी मजबूर होना पड़ता है। यह वित्तीय भार तनाव और चिंता उत्पन्न कर सकता है और कई परिवारों के लिए यथार्थवादी नहीं हो सकता है। कोचिंग संस्थान केवल पैसा इकट्ठा करने में रुचि रखते हैं। इसलिए कोचिंग सेंटरों को माफिया करार करके सरकार को उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी होगी। जब हम बच्चे थे तो कोई कोचिंग नहीं होती थी। क्या तब छात्र आईएएस, आईपीएस नहीं बन रहे थे? कोचिंग के नाम पर आज के दौर में माफिया उपजे है और सरकार को इनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी होगी। गहराई से और विश्लेषणात्मक रूप से देखा जाए तो यह राष्ट्रीय संसाधनों का शुद्ध दुरुपयोग बन गया है। जो छात्र शैक्षणिक उपलब्धि के लिए पूरी तरह से कोचिंग सेंटरों पर निर्भर हैं, वे लंबी अवधि में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान का निर्माण करने में विफल हो सकते हैं। वे नियंत्रित सीखने के माहौल और कोचिंग सेंटर द्वारा दिए जाने वाले व्यक्तिगत ध्यान पर बहुत अधिक निर्भर हो सकते हैं, जिससे आत्मविश्वास और पहल की कमी हो सकती है। क्योंकि प्रतिस्पर्धा परीक्षाओं के लिए कोचिंग के घोषित बुनियादी उद्देश्य सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवारों के चयन की पूर्ति नहीं करते। कोचिंग सेंटर न होने पर भी सर्वश्रेष्ठ छात्रों का चयन किया जाएगा। वास्तव में कोचिंग सेंटरों की अनुपस्थिति में सर्वश्रेष्ठ छात्रों का चयन अधिक वास्तविक होगा। क्योंकि यह स्व- अध्ययन और कच्ची प्रतिभा पर आधारित होगा। कोचिंग सेंटर आंशिक रूप से देश में शिक्षा के गैर समाज पैटर्न का उत्पादन है। कोचिंग सेंटर अक्सर रटने और याददाश्त पर अधिक जोर देते हैं, जो एक छात्र के दीर्घकालिक शैक्षणिक विकास के लिए हानिकारक हो सकता है। परीक्षा-उन्मुख सीखने और निरंतर परीक्षण पर जोर देने से आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमताओं की उपेक्षा हो सकती है। जो छात्र मुख्य रूप से कोचिंग सेंटरों पर निर्भर रहते हैं, वे जो सीखा है उसका विश्लेषण, मूल्यांकन और वास्तविक जीवन में लागू करने का कौशल हासिल नहीं कर पाते हैं। दूसरी और इनका बाहरी खर्च अक्सर उन गरीब परिवारों की कमर तोड़ देता है जिन्हें इस डर की दौड़ में भाग लेना पड़ता है। संस्थानों में सीटों की सीमित संख्या और बढ़ती आबादी हर साल प्रतिस्पर्धा को और अधिक कठिन बना देती है। इससे छात्र शारीरिक और मानसिक रूप से तनावग्रस्त हो जाते हैं। उनमे से कई दुर्भाग्य से इस भारी तनाव से निपटने में असफल होकर अपने बहुमूल्य जीवन को समाप्त कर देते हैं। भारत में कोचिंग उद्योग हमारे छात्र समुदाय और बड़े पैमाने पर समाज को कोई शुद्ध मूल्य वर्धन प्रदान नहीं कर रहा है। हमें स्थापित औपचारिक स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों पर कोचिंग सेंटर के प्रतिकूल प्रभाव का आंकलन करना होगा। वे पीड़ित है क्योंकि उनके कई नियमित शिक्षक अपनी नौकरी की अपेक्षा करते हैं और अंशकालिक निजी ट्यूशन करते हैं। जो छात्रों को कोचिंग सेंटर के लिए तैयार करने के लिए तैयार करते हैं। कोचिंग केंद्रों के विकास के परिणामस्वरूप प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है जो अपने छात्रों को शीर्ष ग्रेड और सर्वोत्तम स्कूलों में प्रवेश के लिए एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस वजह से, कई छात्रों में ₹चूहा दौड़ मानसिकता₹ विकसित हो गई है, जिसमें वे सफल होने के लिए अपनी नैतिकता और सिद्धांतों को त्यागने के लिए तैयार हैं। प्रदर्शन की मांग बढ़ने के कारण धोखाधड़ी और साहित्यिक चोरी सहित शैक्षणिक बेईमानी बढ़ गई है। हमारा शिक्षा उद्योग समाज के सभी वर्गों के लिए उत्पादक रचनात्मक नवीन और प्रगतिशील होना चाहिए। ऐसे उद्योग जो मौजूदा स्थापित संस्थाओं के समानांतर चलते हैं उनके लिए हानिकारक है। जो बड़े पैमाने पर समाज और राष्ट्र के लिए अभिशाप है। कोचिंग उद्योग एक ऐसा उद्योग है जिसने मौजूद क्षेत्र संस्थाओं को अनगिनत नुकसान पहुंचा हैं और ऐसे बेकार की प्रतिस्पर्धा पैदा करके समाज पर आर्थिक बोझ डाला है। जो निराश छात्रों द्वारा आत्महत्या जैसे लक्षणों में प्रकट हो रहा है। लाभकारी शिक्षा उद्योग के उदय के साथ, कुछ संस्थानों ने अपनी कोचिंग सेवाओं के लिए अत्यधिक दरों की मांग करना शुरू कर दिया है। इससे शिक्षा का व्यावसायीकरण हो गया है, जहां छात्रों के कल्याण से ऊपर मुनाफे को प्राथमिकता दी जाती है। जैसे-जैसे शिक्षा अधिक विपणन योग्य हो गई है, वैसे-वैसे घटिया कोचिंग सेंटर भी बढ़ गए हैं, जिनमें से ज्यादातर शिक्षार्थियों को फायदे की बजाय नुकसान अधिक पहुंचाते हैं। हमारी सरकार को इस कटु सत्य को समझना चाहिए और हमारे समाज के साथ खिलवाड़ करने वाले कोचिंग माफिया पर कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। हमारे समाज ने पारंपरिक रूप से सहयोग और संतुलित प्रतिस्पर्धा का आर्थिक माहौल बनाए रखा है। लेकिन इन कोचिंग सेंटर ने केवल एक भयंकर अस्वस्थकर प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है जो धीरे-धीरे और निश्चित रूप से बड़ी संख्या में से प्रभावित छात्रों के बीच रचनात्मक और उधमशीलता की भावना को खत्म कर रहा है। हमारे अभिजात वर्ग को सरकार पर ऐसे कानून लागू करने के लिए दबाव डालना चाहिए। जो देश के सभी कोचिंग सेंटर को खत्म कर दें। कहने की जरूरत नहीं है सरकार को बढ़ती आबादी की जरूरत को पूरा करने के लिए अच्छे मानक के सार्वजनिक संस्थान स्थापित करने चाहिए। स्टार्टअप और उद्यमिता को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित करने से शैक्षणिक संस्थानों में सिमित सीटों और सरकारी संगठनों में सीमित पैसे और पदों के कारण उत्पन्न होने वाली भारी प्रतिस्पर्धा में भी कमी आएगी।

# पापी पेट का सवाल



डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

हिंदी ही नहीं दुनिया की सभी भाषाओं की कहावतों में भोजन का विशेष स्थान है। बित्ते भर का लगने वाला पेट इंसान से जो न करा दे वह कम है। पेट तो आखिर पेट है! भला भोजन से नहीं चलेगा तो खाक से चलेगा! भोजन की किल्लत हो तो कंगाली में आटा गीला, माँग अधिक आपूर्ति कम हो तो एक अनार सौ बीमार, ऊँट के मुँह में जीरा, बड़ी जमकर भूख लगी हो तो पेट में चूहे दौड़ना, कोई सिर खा रहा हो तो दिमाग का दही करना, किसी को उसकी औकात दिखानी हो तो छठी का दूध याद दिलाना, चारों तरफ लाभ ही लाभ दिखायी दे तो दसों उंगलियाँ घी में होना, बिगड़े हुए काम को दर्शाना हो तो पर गुड़-गोबर करना, किसी की देखा-देखी करने पर खरबूजा खरबूजे को देखकर रंग बदलना, मनचाहा काम पूरा न होने पर अंगूर खट्टे होना, किसी काम के विलंब को दर्शाना हो तो बीरबल की खिचड़ी पकाना, लालच पैदा होने पर मन में लड्डू फूटना, काम निकालना हो तो मस्का लगाना, किए कराए पर पानी फेरने की बात हो तो रायता फैलाना या फिर किसी को धोखा दिया हो तो जिस थाली में खाया उसी में छेद करना जैसी कहावतों का धड़ल्ले से उपयोग किया जाता है। इन सभी कहावतों में कहीं न कहीं खाने-पीने की बात का उल्लेख हुआ है। किंतु समस्या हमारे देश के प्रधान से है। वे कहते हैं – न खाऊँगा, न खाने दूँगा। अब उन्हें कौन समझाए कि इंसान पैदा ही खाने के लिए होता है, तो उसे खाने से रोकना सरासर नाइंसाफी नहीं तो और क्या है? अब भला घोड़ा घांस से दोस्ती करेगा तो खायेगा क्या? हमारे देश में लोग पेट के हिसाब से नहीं औकात के हिसाब से खाते हैं। जैसे गरीब है तो रूखा-सूखा, अमीर है तो मक्खन-पनीर। ठीक उसी तरह सबकी अपनी-अपनी भूख और अपना-अपना भोजन होता है। काम पिशाची वासना, कमीशनखोर कमीशन, टैक्सचोर टैक्स, पुलिस घूस, तो भ्रष्ट नेता-अधिकारी भ्रष्टाचार तो कभी-कभी गाय-गोरू का चारा खाते हैं। जो भी हो खाते जरूर हैं। ऐसे में अगर प्रधान कहें कि न खाऊँगा न खाने दूँगा तो यह बड़ी गलत बात है। अब उन्हें कौन समझाए कि खाना तो जन्म के साथ आने वाला गुण है। कुत्ते की दुम और खाऊ इंसान की फितरत जन्म से ही टेढ़ी होती है।

वैसे भी प्रकृति के नियमों के साथ छेड़छाड़ करना खुद के लिए और न समाज के लिए हानिकारक होता है। जब भूख की अति हो जाती है तो उसे 'चट करना' कहते हैं। सामान्य की भूख किसी मालगाड़ी सी और लालसा पिपासुओं की चट करने वाली भूख जापान की सूपरफास्ट ट्रेन सी होती है। अंग्रेजों से पहले भारत सोने की चिड़िया थी। अंग्रेज सोना सारा चट कर गए। बचे-खुचे भारत में पहाड़, पठार, रेगिस्तान, मिट्टी और थोड़े-बहुत जंगल छोड़ गए।

# चीनी: इस मीठे ज़हर से बचें



रजनीश कपूर

हद से ज़्यादा हर चीज़ का सेवन करना हमारे शरीर के लिये हानिकारक होता है। यह बात हर उस चीज़ पर लागू होती है जिसका हम अपने जीवन में ज़रूरत से ज़्यादा सेवन करते हैं। ऐसी ही एक चीज़ है चीनी। यह एक ऐसा मीठा ज़हर है जिसे हम जाने-अनजाने अपने शरीर में बेवजह बढ़ाते जाते हैं। परंतु इस बात से हम अभिज्ञ रहते हैं कि जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है हमारे शरीर में रोगों से लड़ने की ताक़त भी कम होने लगती है। यदि हम हर चीज़ का सेवन एक संतुलित मात्रा में करें तो कभी कोई परेशानी नहीं होगी। हर घर में आसानी से मिलने वाली सफ़ेद चीनी हमारे शरीर के लिए कितनी नुक़सानदेह हो सकती है, इसका अंदाज़ा लगाना भी मुश्किल है। बीते कई दशकों से कम उम्र में डायबिटीज, मोटापा, किडनी व लिवर के रोग, कोलेस्ट्रॉल बढ़ने जैसी समस्याएं होना सामान्य बात हो गई है। इसका एक कारण अधिक मात्रा में चीनी का उपयोग भी है। हम अक्सर ऐसे कई प्रोसेस्ड खाद्य उत्पादों का सेवन करने लगते हैं जिनमें केमिकल रिफाइंड शुगर या सफ़ेद चीनी पाई जाती है। इन पदार्थों में चीनी की मात्रा का पता नहीं चलता और अनजाने में हम अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करते हैं। जब तक हमें एहसास होता है तब तक काफ़ी देर हो चुकी होती है। अधिक मात्रा में चीनी का सेवन करने से हमें ऐसी कई ख़तरनाक बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है जिनका इलाज लंबा चलता है और काफ़ी महँगा भी होता है। विश्व भर में आजकल हृदय रोग, मौत का सबसे बड़ा कारण बना हुआ है। अधिक मात्रा में चीनी युक्त खाद्य पदार्थ खाने से हृदय रोग होने की संभावना भी बढ़ जाती है। एक शोध के अनुसार अधिक मात्रा में चीनी युक्त आहार से मोटापा, सूजन, उच्च ट्राइग्लिसराइड, रक्त शर्करा और रक्तचाप का स्तर हो सकता है। ये सभी दिल की बीमारी के खतरे को बढ़ाने वाले कारण होते हैं। एक अध्ययन में पाया गया है कि जो लोग ज़्यादा चीनी का सेवन करते हैं वे 17-21% अतिरिक्त कैलोरी लेते हैं। इन लोगों में हृदय रोग से मौत का खतरा लगभग 38% अधिक होता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि अधिक चीनी के उपयोग से इंसुलिन पर पड़ने वाला हानिकारक प्रभाव जैसे शरीर में सूजन आना, कैंसर का भी कारण बन सकता है। कई शोधों में यह साबित भी हो चुका है कि अधिक चीनी लेने वाले लोगों को कैंसर होने का खतरा अधिक होता है। इतना ही नहीं ज़्यादा मीठा खाने से हमारे खून में यूरिक एसिड बढ़ाते हैं। इस कारण ब्लडप्रेशर और गठिया जैसी परेशानी भी हो सकती है। इसके साथ ही चीनी को अधिक मात्रा में लेने से शरीर में भूख और वजन नियंत्रित करने वाले सिस्टम पर भी बुरा असर पड़ता है। डॉक्टरों के अनुसार मीठा या शक्कर 'ग्लूकोज' के रूप में हो तो वह ठीक है। परंतु यही जब 'फ्रुक्टोस' के रूप में होता है वह हमें दिक्कत दे सकता है। इसका हमारे शरीर, दिमाग और हार्मोन पर अलग प्रभाव पड़ सकता है। ग़ौरतलब है कि शराब व अन्य नशीली चीजों की तरह चीनी भी दिमाग में 'डोपामाइन' नामक हार्मोन का स्राव बढ़ाती है। ऐसे में चीनी की लत लग जाती है, जो मानव शरीर के लिए काफ़ी हानिकारक है। संतुलित मात्रा में मीठा लेने पर हमारा लीवर उसे 'ग्लाइकोजेन' में बदलकर जमा कर लेता है। ज़रूरत पड़ने पर लीवर में जमा ग्लाइकोजेन काम में लिया जाता है। इसी तरह ज्यादा मात्रा में फ्रुक्टोस लेने पर लीवर को इसे फैट में बदलना पड़ता है। ऐसा करने से हमारे लीवर पर अधिक भार पड़ता है। जैसे ही अधिक फ्रुक्टोस फैट का रूप ले लेता है, इसकी कुछ मात्रा हमारे खून में भी चली जाती है। जो हृदय रोग या हार्ट अटैक का कारण भी बन जाती है। अधिक फैट का लिवर में जमा होने के कारण 'फैटी लिवर' जैसी बीमारी भी हो सकती है, जिसे समय पर ठीक नहीं किया जाए तो वो आगे चल कर 'लिवर सिरोसिस' का रूप भी ले सकती है। एक संतुलित आहार में मीठा ख़ाना भी आवश्यक है। इसलिए हमें केमिकल से प्रोसेस की जाने वाली सफ़ेद चीनी से जहां तक हो सके बचने कि ज़रूरत है। इसके साथ ही हमें अपने शरीर में मीठे की पूर्ति के लिए गुड़ या ताज़े फलों का सेवन करना चाहिए। यदि हम खाना खाने के बाद गुड़ का एक टुकड़ा खाते हैं तो ये ना सिर्फ़ ख़ाना पचाने में मदद करता है बल्कि शरीर से अधिक विषाक्त पदार्थों यानी टॉक्सिन्स को भी आसानी से बाहर निकाल देता है। चीनी और गुड़ दोनों ही शरीर में कैलोरी को बढ़ाते हैं, लेकिन यदि आपको दोनों में से किसी एक को चुनना हो तो आप गुड़ का चुनें। क्योंकि केमिकल द्वारा रिफाइन की गई सफ़ेद चीनी से इसके फायदे कहीं ज्यादा होते हैं।

गुड़ में आयरन, कैल्शियम, जिंक, पोटैशियम, मैग्नीशियम और सेलेनियम की मात्रा अधिक होती है जो 'खून की कमी' जैसी बीमारी में बहुत फायदेमंद होता है। समय रहते अगर हम अपने जीवन में बदलाव लाएँगे तो हम लंबी और स्वस्थ ज़िंदगी जियेंगे। इसलिए जहां तक हो सके हमें कैमिकल द्वारा रिफाइन की गई चीनी का सेवन कम कर देना चाहिए।

# ये 3 राशियां हैं भगवान गणेश की प्रिय

## अगले 9 दिन चमकेगी इनकी किस्मत

19 सितंबर से गणेश चतुर्थी का उत्सव आरम्भ हो चुका है तथा इसका समापन 28 सितंबर को अनंत चतुर्दशी के दिन होगा। ज्योतिषियों के अनुसार, गणेश जी की कुछ प्रिय राशियां हैं, जिनको गणेश चतुर्थी की इस 10 दिनों की अवधि में सबसे अधिक फायदा होगा। श्री गणेश को सुख समृद्धि का देवता कहा जाता है। कहते हैं कि प्रभु श्री गणेश की पूजा करने से सभी ग्रह दोष भी दूर होते हैं। आइए जानते हैं कि प्रभु श्री गणेश की कौन सी प्रिय राशियां हैं।

**मेष राशिः-** गणेश जी की सबसे प्रिय राशि में आती हैं मेष राशि। इस राशि पर प्रभु श्री गणेश सबसे अधिक मेहरबान रहते हैं। गणेश जी की कृपा से लोग सबसे अधिक बुद्धिमान होते हैं। मेष राशि वालों की गणपति बप्पा सभी समस्या हर लेते हैं। श्री गणेश मेष राशि वालों को हमेशा लाभ देते हैं। मेष राशि के लोगों को गणेश चतुर्थी के चलते छुआरा एवं गुड़ के लड्डू का भोग बप्पा को लगाना चाहिए।

**मिथुन राशिः-** गणेश जी की दूसरी प्रिय राशि में से मिथुन राशि। ये लोग प्रभु श्री गणेश के आशीर्वाद से करियर, बिजनेस एवं शिक्षा में कामयाबी हासिल करते हैं। मिथुन राशि वाले लोग गणेश चतुर्थी के दिन गणपति बप्पा को मूंग से बने लड्डू का भोग लगाएं।

**मकर राशिः-** गणपति महाराज की तीसरी प्रिय राशि है मकर। प्रभु श्री गणेश के आशीष से ये लोग काफी मेहनती तथा ईमानदार होते हैं। हार मान लेना इनकी प्रवृत्ति नहीं है। श्री गणेश की कृपा से ये लोग करियर में बड़ी कामयाबी प्राप्त करते हैं। इनकी यश एवं कीर्ति बढ़ती है। इन लोगों को तिल के लड्डू का भोग प्रभु श्री गणेश को चढ़ाना चाहिए।

# श्री महागणपति मंदिर रांजणगांव

भगवान श्री गणेश जी के सभी आठ प्रमुख मंदिरों में से एक महागणपति जी का मंदिर भी है। यह मंदिर पुणे के रांजणगांव में स्थित है। श्री महागणपति जी का मंदिर पुणे अहमदनगर राजमार्ग पर 50 किलोमीटर की दूरी पर है। महागणपति जी मंदिर का इतिहास 9वीं व 10वीं सदी के बीच का जाना जाता है। महागणपति जी के मंदिर का प्रवेश द्वार कि बहुत विशाल और सुन्दर है। भगवान श्री गणपति की मूर्ति को माहोतक नाम से भी जाना जाता है क्योंकि भगवान श्री गणपति जी की मूर्ति के 10 सूंड़ और 20 हाथ हैं।

प्रचलित मान्यता है कि मंदिर की मूल मूर्ति तहखाने में की छिपी हुई है। जब मुगलों ने आक्रमण किया था तो उन लोगो से मूर्ति बचाने के लिए उसे तहखाने में छिपा दिया गया था। जब शिव जी ने त्रिपुरासुर के साथ युद्ध करने से पूर्व गणेश जी की पूजा की थी तत्पश्चात मंदिर का निर्माण करवाया। शुरुआत इस स्थान को मणिपुर के नाम से जाना जाता था पर आज इसे लोग रांजणगांव कहते हैं।

महागणपति मंदिर को त्रिपुरारी महागणपति के रूप में भी जाना जाता है। क्योंकि भगवान शिव जी ने दैत्यराज त्रिपुरासुर को गणेश जी की पूजा करने के बाद ही पराजित किया था। इसलिए मंदिर में विराजित इनका स्वरूप हथियारों से सुसज्जित है। इस मूर्ति में महागणपति जी को आठ ,दश या बारह हथियारों के साथ में दिखाया गया है।

यह आठवां गणपति यानी आठवां अष्टविनायक मंदिर है। गणेश जी की प्रतिमा बैठे आसन में दिखाई देती हैं और उनके ईर्द-गिर्द रिद्धी-सिद्धी की प्रतिमाएं हैं। महागणपति मंदिर पूर्वमुखी है। भव्य प्रवेश द्वार पर दो द्वारपाल जय और विजय है। जिनकी प्रतिमाएं मुख्य द्वार पर स्थित हैं। सूरज की पहली किरण सर्वप्रथम महागणपति जी की प्रतिमा पर पड़ती है। श्री अष्टविनायक गणपति स्वरूपों में महागणपति गणेश जी का सबसे शक्तिशाली स्वरूप है।

**कथा**

कथा के अनुसार त्रिपुरासुर नामक एक दानव ने शिव के वरदान से तीन शक्तिशाली क़िलों का निर्माण किया था, जिससे वह स्वर्ग में और पृथ्वी पर सभी प्राणियों को कष्ट पंहुचा था। भगवान शिव ने भक्तों की प्रार्थना सुनने के बाद दानव का नाश करना चाहा, किंतु वे असफल रहे। इस पर नारदमुनी की सलाह पर शिवजी ने गणेश जी को नमन किया और तीनों क़िलों को मध्यम से छेदते हुए एक एकल तीर से भेद दिया। इन्ही शिव का मंदिर पास ही भीमाशंकरम में स्थित है।

# यहां विराजे हैं 10 भुजाओं वाले 5 फीट ऊंचे महागणपति; देशभर में केवल 2 ऐसे मंदिर

यूं तो भगवान गणपति विश्व के कई कोनों में विराजमान है, लेकिन जब बात गणेश जी के स्वरूपों की है, तो महागणपति या महागणेश का स्वरूप सबसे दिव्य माना जाता है। भोपाल के 10 नंबर में प्रदेश का एक मात्र महागणेश मंदिर स्थित है। खास बात है कि देशभर में गणपति के इस स्वरूप के लिए मान्यता है कि इन्हें बड़े कारखानों और फैक्ट्री में स्थपित करना शुभ माना जाता है। कैसे पहुंचे- मंदिर में बस या ट्रेन किसी भी माध्यम से आ सकते हैं। यह मंदिर देश के पहले प्राइवेट स्टेशन रानी कमला पति से कुछ ही मीटर की दूरी पर है।

## एमपी में एक मात्र महागणेश मंदिर

महागणपति के मंदिर केवल 2 जगह ही है। पहला महागणपति मंदिर महाराष्ट्र में पुणे के पास रांझण गांव में स्थित है (यह मंदिर अष्टविनायक यानी गणेश जी के अष्ट मंदिरों में से एक है)।

भोपाल के मंदिर में रखी प्रतिमा का निर्माण और प्रतिष्ठा परामर्श श्री पंडित ब्रजेश प्रसाद तिवारी द्वारा किया गया है। इनकी आस्था थी कि मंदिर में भगवान श्री गणेश के पूर्ण स्वरूप की स्थापना की जाए। मंदिर के पुजारी पुष्पेंद्र द्विवेदी ने बताया कि प्रदेश में यह स्वरूप के गणपति नहीं होने की वजह से समिति ने निर्णय लिया कि यहां श्री महागणेश जी मंदिर बनवाया जाए। इस तरह शताब्दी पूर्व पुणे के महाराज पेशवा द्वारा सतारा महाराष्ट्र में प्रतिष्ठित महागणपति का पहला मंदिर है। वहीं, दूसरी प्रतिमा इस मंदिर में है। यहां भगवान गणपति की प्रतिमा की ऊंचाई 5 फीट है। वजन तकरीबन 13 क्विंटल है।

**भोपाल स्थित मंदिर की विशेषता**

इस वर्ष मंदिर को 50 साल हो चुके हैं। मंदिर की आधारशिला 22 अगस्त 1982 को रखी गई थी। गणेश जन्मोत्सव पर हर साल यहां कई कार्यक्रम होते हैं। लोग यहां भगवान गणपति को मनोकामना पूर्ण करने वाले भगवान के रूप में पूजते हैं।

**महागणपति की मान्यता**

# दूर्वा अष्टमी आजः इस दिन दूब से की जाती है गणेशजी की विशेष पूजा

## सबसे पहले कश्यप ऋषि ने गणपति को चढ़ाई थी दूर्वा

गणेश चतुर्थी के 4 दिन दूर्वाष्टमी व्रत होता है। जो कि भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की अष्टमी पर होगा। इस बार ये 22 सितंबर को किया जाएगा। इस दिन दूर्वा चढ़ाकर गणेशजी की विशेष पूजा करनी चाहिए। मान्यता है कि इस दिन दूर्वा से गणेश पूजा करने से हर तरह की परेशानियां दूर होती हैं और मनोकामनाएं भी पूरी होती हैं। पुराणों में कथा है। जिसके मुताबिक गणेशजी ने अलनासुर राक्षस को मारा और उसके बाद से उन्हें दूर्वा चढ़ाई। तब से परंपरा चली आ रही है।

गणेश जी को दूर्वा चढ़ाने के पीछे अनलासुर नाम के असुर से जुड़ी कथा है। कथा के मुताबिक अनलासुर के आतंक की वजह से सभी देवता और पृथ्वी के सभी इंसान बहुत परेशान हो गए थे। देवराज इंद्र, अन्य देवता और प्रमुख ऋषि-मुनि महादेव के पास पहुंचे। शिवजी ने कहा कि ये काम सिर्फ गणेश ही कर सकते हैं। इसके बाद सभी देवता और ऋषि-मुनि भगवान गणेश के पास पहुंचे।

देवताओं की प्रार्थना सुनकर गणपति अनलासुर से युद्ध करने पहुंचे। काफी समय तक अनलासुर पराजित ही नहीं हो रहा था, तब भगवान गणेश ने उसे पकड़कर निगल लिया। इसके बाद गणेश जी के पेट में बहुत जलन होने लगी।

जब कश्यप ऋषि ने दूर्वा की 21 गांठें बनाकर गणेश जी को खाने के लिए दी। जैसे ही उन्होंने दूर्वा खाई, उनके पेट की जलन शांत हो गई। तभी से भगवान गणेश को दूर्वा चढ़ाने की परंपरा शुरू हो गई।

**दूर्वा के बिना अधूरे हैं कर्मकांड और मांगलिक काम**

हिन्दू संस्कारों और कर्मकाण्ड में इसका उपयोग खासतौर से किया जाता है। हिन्दू मान्यताओं में दूर्वा घास प्रथम पूजनीय भगवान श्रीगणेश को बहुत प्रिय है। इसलिए किसी भी तरह की पूजा और हर तरह के मांगलिक कामों में दूर्वा को सबसे पहले लिया जाता है।

इस पवित्र घास के बिना, गृह प्रवेश, मुंडन और विवाह सहित अन्य मांगलिक काम अधूरे माने जाते हैं। भगवान गणेश की पूजा में दो, तीन या पाँच दूर्वा अर्पण करने का विधान तंत्र शास्त्र में मिलता है।

# सभी चिंताओं को हर लेते हैं मंशामन गणेश

## भगवान राम भी यहां कर चुके हैं पूजा

मध्यप्रदेश के उज्जैन को धार्मिक नगरी कहा जाता है। यहां कई ऐसे देवी देवता विराजमान हैं जिनके अलग-अलग महत्व है। एक ऐसा ही मंदिर उज्जैन से विश्व प्रसिद्ध बाबा महाकाल से तीन किलोमीटर की दूरी पर है, अवंतिका खंड में भी इस मंदिर का उल्लेख किया गया है। यह मंदिर मंशामन गणेश के नाम से प्रसिद्ध है, यहां दूर- दूर से श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं।

यहां भगवान मंछामन गणेश, रिद्धि सिद्धि के साथ यहां पर विराजित है। श्री मंछामन गणेश यहां मूषक पर सवार हैं और यह कमल के ऊपर विराजित भी माने जाते हैं। इसलिए भगवान यहां पर लक्ष्मी स्वरूप में नजर आते हैं। मंदिर में अष्टविनायक सूर्य यंत्र है।

**पांच बुधवार दर्शन करने से होती है मनोकामना पूरी**

भगवान गणेश की महिमा अपरंपार है। सभी मंदिरों में पूजा का अलग-अलग विधान है, यहां की ऐसी मान्यता है कि यहां पर जो श्रद्धालु प्रति पांच बुधवार बाबा के दर्शन करने आता है, उनकी समस्त मनोकामना पूर्ण हो जाती है। बुधवार को यहां भक्तों की भारी संख्या भीड़ देखने कों मिलती है।

**सूर्य कुंड है अति प्रसिद्ध**

श्री मंछामन गणेश के सामने सूर्य कुंड है, राजा महाराज के टाइम से ये कुंड है। ऐसा भी कहा जाता है, जिसमें सूर्योदय के समय सूर्य की किरणें सीधे प्रतिमा पर परावर्तित होती है। भगवान मंछामन बहुत सिद्ध गणपति माने जाते हैं, जो भी श्रद्धालु या सच्चे मन से आते है उनकी समस्त मनोकामना पूर्ण होती है।

**पंडित जी ने दी गणेश यंत्र की जानकारी**

शहर के प्राचीन मंदिरों में गऊघाट क्षेत्र में स्थित मंछामन गणेश है। मंदिर में श्रीगणेश के साथ रिद्धि – सिद्धि भी विराजित हैं। हर बुधवार को यहां भक्तो का तांता लगता है। मंछामन के दर्शन से मनोकामना पूरी होती है। यह मंदिर अति प्राचीन है। जिसकी छत में गणेश यंत्र स्थापित है। इस कारण सिद्ध विनायक हैं। यहां गणेश जी से संबंधित सभी अनुष्ठान किए जाते है।

# राजामौली पर खफा हुए दादा साहेब फाल्के के नाती

## बोले- बिना पूछे फिल्म की अनाउंसमेंट कर दी, आमिर खान से बातचीत चल रही थी

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के दिग्गज फिल्ममेकर एसएस राजामौली ने नई फिल्म 'मेड इन इंडिया' की घोषणा की है। 'बाहुबली' और आरआरआर की सफलता के बाद उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी नई फिल्म का टाइटल और बाकी डिटेल्स की घोषणा की। इस बार वे भारतीय सिनेमा के पिता दादा साहेब फाल्के की बायोपिक लेकर आए हैं। हालांकि इस अनाउंसमेंट के बाद दादा साहेब फाल्के के नाती चंद्रशेखर पुसालकर ने नाराजगी जताई है। चंद्रशेखर ने कहा कि बिना उनकी फैमिली से पूछे ऐसी अनाउंसमेंट कर दी गई।

**हमारे लिए ये अनाउंसमेंट बहुत शॉकिंग- चंद्रशेखर पुसालकर**

चंद्रशेखर पुसालकर ने बातचीत के दौरान कहा, मेरे लिए ये अनाउंसमेंट बहुत ही शॉकिंग है। राजामौली और टीम ने बिना हमसे या किसी भी परिवार के सदस्य से बिना पूछे ये फिल्म बना रहे हैं। उन्हें अगर बायोपिक बनाना ही था तो वे कम से कम एक बार तो हमसे पूछ सकते थे ना? बिना हमारे परमिशन वो ऐसा नहीं कर सकते। साथ ही वो इस फिल्म में क्या दिखाने वाले हैं, इस बारे में हमें कोई जानकारी नहीं।

चंद्रशेखर पुसालकर ने आगे कहा, मैं तकरीबन पिछले 3 सालों से फिल्ममेकर हिंदुकुश भारद्वाज और आयुष्कार भारद्वाज के साथ इसी कांसेप्ट पर रिसर्च कर रहा हूं। हम एक बड़े प्रोडक्शन के साथ मिलकर दादा साहेब फाल्के पर बायोपिक बना रहे हैं। इस प्रोजेक्ट के लिए हमारी आमिर खान से बातचीत चल रही है, सब कुछ सही रहा तो अगले दो महीने इसकी घोषणा करेंगे। अब हमारे इस प्लान के बीच राजामौली का यूं घोषणा करना हमारे लिए सही नहीं है। हम उनकी टीम से जरूर इस बारे में बातचीत करेंगे।

**राजामौली ने कहा- हमारी टीम फिल्म बनाने को तैयार**

एसएस राजामौली ने कल यानी मंगलवार को 'मेड इन इंडिया' का टीजर शेयर किया। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, 'जब मैंने पहली बार कहानी सुनी, तो इसने मुझे इमोशनली प्रभावित कर दिया। एक बायोपिक बनाना अपने आप में मुश्किल काम है, लेकिन भारतीय सिनेमा के पिता के बारे में कल्पना करना और भी ज्यादा चैलेंजिंग है। मेरी टीम इसके लिए तैयार है और कमर कस चुकी है। बेहद गर्व के साथ 'मेड इन इंडिया' प्रेजेंट कर रहा हूं'। इस फिल्म का प्रोडक्शन राजामौली के बेटे एसएस कार्तिकेय और वरुण गुप्ता कर रहे हैं और वहीं डायरेक्शन नितिन कक्कड़ करेंगे।

# अनिल शर्मा ने मेरी क्रिएटिविटी ले ली, बिना परमिशन दो गाने यूज करने का है मामला : म्यूजिक कम्पोजर उत्तम सिंह

**म्यूजिक कम्पोजर** उत्तम सिंह ने हालिया रिलीज फिल्म 'गदर-2' के मेकर्स पर बिना परमिशन उनके गाने यूज करने के आरोप लगाए थे। उन्होंने कहा था कि डायरेक्टर ने उन्हें कॉल करके सिर्फ इस बात की जानकारी दी थी कि वे फिल्म 'गदर- एक प्रेम कथा' को री-रिलीज कर रहे हैं। इन आरोपों का जवाब देते हुए डायरेक्टर अनिल शर्मा ने जवाब दिया था कि उन्होंने इन गानों को यूज करने से पहले कम्पोजर से अनुमति ली थी।

अब एक बार फिर से उत्तम सिंह ने डायरेक्टर के दावों को गलत ठहराया है। उन्होंने कहा कि अनिल जी ने मुझे कुछ नहीं बताया था। उन्होंने सिर्फ ऑफिस बुलाकर मुझसे री-रिलीज की बात कही थी।

उन्हें सिर्फ इतनी जानकारी देकर मुझसे फिल्म के म्यूजिक पर फिर से काम करने के लिए कहा था। पूरा मामला फिल्म के दो गानों 'उड़ जा काले कावां..' और 'मैं निकला गड्डी लेके' से जुड़ा हुआ है। उत्तम के मुताबिक इन गानों को यूज करने से पहले अनिल ने उनसे परमिशन नहीं ली और इनका क्रेडिट भी दूसरी म्यूजिशियंस को दिया है।

**मेरा बजट सुनकर वो खुश नहीं थे**

उत्तम ने कहा, 'अनिल जी ने मुझे स्टूडियो बुलाया और फिर के म्यूजिक पर फिर से काम करने की बात कही। मैंने कहा ठीक है, मैं इस पर बिल्कुल काम करूंगा। अगली मुलाकात में मैंने उन्हें म्यूजिक पर फिर से काम करने का फाइनल बजट बताया। वे और वहां मौजूद जी म्यूजिक के लोग इस बजट को सुनकर खुश नहीं थे। बाद में अनिल मुझे दूसरे रूम में लेकर गए और उन्होंने मुझे 'गदर 2' का गाना 'खैरियत..' सुनाया। मुझे वो थोड़ा अनट्यून्ड लगा मैं उस पर थोड़ा सा काम करके वहां से चला आया। 'गदर-2' के म्यूजिक को लेकर तो हमारे बीच कोई बात ही नहीं हुई।'

**एथिक्स नाम की भी एक चीज होती है**

अनिल के एथिक्स पर सवाल उठाते हुए उत्तम ने कहा, 'अगर अनिल ऐसा दावा कर रहे हैं कि उन्होंने मुझे गाना सुनाया तो यह गलत है।

मुझसे कोई परमिशन नहीं ली गई। आपने गाना लिया, जो आपको करना था वो किया। अब आप कह रहे हैं कि आपने राइट्स दिए थे? ठीक है मान लिया, पर एथिक्स नाम की भी एक चीज होती है। उन्होंने मेरी क्रिएटिविटी ले ली। आपकी पहचान क्या है ? गदर ? तो गदर, सिर्फ एक फिल्म नहीं है.. '

**अभी तक नहीं देखी फिल्म**

उत्तम ने अभी तक यह फिल्म नहीं देखी है। वे मिथून और मॉन्टी शर्मा को फिल्म के म्यूजिक क्रेडिट दिए जाने को लेकर नाराज हैं। इसी बीच सनी देओल स्टारर गदर-2 ने 41 दिनों में 521 करोड़ रुपए की कमाई कर ली है। बुधवार को इसने 35 लाख रुपए का कलेक्शन किया।

# टीवी सीरियल इमली के सेट पर लाइट मैन की मौत

## शूटिंग के दौरान लगा करंट, ऑल इंडियन सिने वर्कर्स एसोसिएशन ने की मेकर्स और चैनल पर एक्शन की मांग

मंगलवार को टीवी शो 'इमली' के सेट पर करंट लगने से एक लाइटमैन की मौत हो गई। गोरेगांव फिल्मसिटी में चल रही इस सीरियल की शूटिंग के दौरान शाम 5 बजे महेंद्र यादव नाम के इस शख्स को करंट लगा। महज 23 वर्षीय महेंद्र को तुरंत नजदीकी सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस बात की जानकारी देते हुए ऑल इंडियन सिने वर्कर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष सुरेश गुप्ता ने एक वीडियो शेयर किया है। इसे शेयर करते हुए सुरेश ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से मांग की है कि शो के प्रोडूसर और प्रोडक्शन हाउस व चैनल पर मनुष्यवाद का मुकदमा दर्ज हो। साथ ही लाइटमैन महेंद्र के परिवार को 50 लाख रुपए की राशि दी जाए। फिल्मसिटी में इससे पहले भी कई हादसे हो चुके हैं। हाल ही में यहां एक सेट पर आग लगी थी। इसके अलावा सेट पर अजगर भी मिला और तेंदुआ भी हमला कर चुका है।

वीडियो में सुरेश ने कहा- 'फिल्मसिटी में आए दिन कोई-ना-कोई हादसा हो रहा है। ऐस इसलिए क्योंकि सेट पर कोई सेफ्टी रखी नहीं जा रही है। कल से ही इस मामले को दबाने की बहुत कोशिश की जा रही थी। हमारी इंडस्ट्री में कई हादसों को दबा दिया जाता है क्योंकि प्रशासन का पूरा सहयोग रहता है।'

सुरेश ने आगे कहा, 'आगे कई और जानें जाएंगी। ऐसे कई हादसे होते आए हैं और होते रहेंगे क्योंकि प्रशासन कोई ठोस कदम नहीं उठा रहा है। प्रोडक्शन हाउस, प्रोड्यूसर्स और चैनल भी सेट पर सेफ्टी नहीं रखते हैं। कई अधिकारी इनका पूरा सपोर्ट भी करते हैं।'

**ऑल इंडियन सिने वर्कर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष की 3 मांगें**

ऑल इंडियन सिने वर्कर्स एसोसिएशन का अध्यक्ष होने के नाते सुरेश ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से 3 मांगें की हैं। शो के प्रोड्यूसर गुल खान, प्रोडक्शन हाउस 4 लॉयन फिल्म्स और चैनल पर एक्शन लें। जिस मजदूर की जान गई है उसके परिवार को 50 लाख रुपए दिए जाएं। फिल्म सिटी के मैनेजिंग डायरेक्टर और आयुक्त का तत्काल प्रभाव से इस्तीफा दें। मुंबई स्थित इस फिल्म सिटी में हर रोज कई शोज की शूटिंग होती है। ये जगह संजय गांधी नेशनल पार्क से लगी हुई है।

# सिंगर मास्टर सलीम की मुश्किलें बढ़ी

## जालंधर कोर्ट में पहुंचा मामला; केस दर्ज न करने पर एसएचओ रिकॉर्ड समेत तलब

जालंधर में बाबा मुराद शाह मेले के दौरान माता चिंतपूर्णी पर विवादित बयान देकर विवादों में घिरे गायक मास्टर सलीम की मुश्किलें बढ़ गई हैं। उनके विवादित बयान का यह मामला अब कोर्ट में पहुंच गया है। जालंधर के थाना कैंट में मास्टर सलीम के खिलाफ दी गई शिकायत पर केस दर्ज न करने पर शहर के ही दिवान नगर निवासी गौरव ने अदालत में एसएचओ के खिलाफ CrPC की धारा 156 (3) के तहत शिकायत दी है। उन्होंने अपनी शिकायत में थाना प्रभारी को FIR दर्ज करने के निर्देश देने की अपील की है।

गौरव की याचिका को स्वीकार कर जूनियर मजिस्ट्रेट फर्स्ट क्लास मिस अर्पणा ने 21 सितंबर को थाना कैंट के प्रभारी को तलब किया है। अपने आदेश में कोर्ट ने निर्देश दिए हैं कि थाना कैंट के एसएचओ जो शिकायत उनके पास पहुंची थी, उसके बारे में अपनी रिपोर्ट और जवाब कोर्ट में दें।

**सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हवाला देते हुए दायर की याचिका**

शिकायत देने वाले गौरव ने अपने अपील में लिखा है कि थाना कैंट के प्रभारी उसकी शिकायत पर मास्टर सलीम के खिलाफ केस दर्ज नहीं कर रहे हैं। मास्टर सलीम ने बाबा मुराद शाह मेले में क़व्वाली के दौरान अभद्र भाषा का इस्तेमाल की थी।

गौरव ने अपनी शिकायत में शाहीन अब्दुल्ला वर्सेस यूनियन ऑफ इंडिया के केस में आए एपेक्स कोर्ट के पिछले साल 21 अक्टूबर को आए फैसले का हवाला देते हुए मास्टर सलीम पर केस दर्ज करने के लिए थाना कैंट को डायरेक्शन देने की अपील की है।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में लिखा है कि कोई भी ऐसी बयानबाजी करता है, जिससे भावनाएं आहत होती हैं और उस पर यदि शिकायत न भी आए तब भी स्वतः संज्ञान लेते हुए केस दर्ज किया जा सकता है। साथ ही कोर्ट ने यह भी साफ किया है कि यदि कोई अधिकारी शिकायत मिलने पर एक्शन नहीं लेगा तो उसे कोर्ट के आदेश का उल्लंघन माना जाएगा।

**कई जगह माफी मांग चुके मास्टर सलीम**

मास्टर सलीम अपनी इस टिप्पणी पर सफाई दे चुके हैं कि उनकी बातों का गलत मतलब निकाला गया। हालांकि इसके बाद वे माफी मांगने माता चिंतपूर्णी जा चुके हैं। इसके बाद उन्होंने जालंधर के गीता मंदिर और पटियाला के काली माता मंदिर में भी माथा टेककर माफी मांगी। हालांकि आहत लोग उनका पीछा नहीं छोड़ रहे हैं।

# इंडिया में शुरू हुई ऑस्कर 2024 की तैयारी : द केरला स्टोरी लेकर रॉकी और रानी की प्रेम कहानी तक, सेलेक्शन के लिए सामने आए फिल्मों के नाम

**ऑस्कर 2024 के** लिए भारत की तरफ से ऑफिशियल एंट्री भेजे जाने को लेकर तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। इनमें 'द केरल स्टोरी', 'ज्विगाटो', 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' और 'बालागम' जैसी कई फिल्में शामिल हैं। ऑस्कर कमेटी ने चेन्नई में कई स्क्रीनिंग के जरिए अपनी सिलेक्शन प्रोसेस शुरू कर दी है। वहीं ऑस्कर 2024 के लिए भेजी जाने वाली ऑफिशियल फिल्म की अनाउंसमेंट सितंबर के आखिरी हफ्ते में होने की उम्मीद की जा रही है।

**ऑस्कर 2024 के लिए आईं 22 से ज्यादा फिल्मों की एंट्रीज**

रिपोर्ट्स के मुताबिक ऑस्कर कमेटी के पास भारत से 22 से ज्यादा फिल्मों एंट्रीज आई हैं। हालांकि, किस फिल्म को ऑफिशियल तौर पर भेजा जाएगा। इसका फैसला फिल्म मेकर गिरीश कासारवल्ली की अध्यक्षता वाली 17 सदस्यों की जूरी करेगी। फिल्मों का सिलेक्शन का प्रोसेस 18 सितंबर से शुरू

मीडिया रिपोर्ट की मानें तो कुछ फिल्में ऐसी हैं, जो अभी सिलेक्शन प्रोसेस से गुजर रही हैं। इन फिल्मों का सिलेक्शन करने के लिए फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया को भेजा गया है। उनमें द स्टोरीटेलर, म्यूजिक स्कूल, मिसेज चटर्जी वर्सेस नॉर्वे, 12वीं फेल, घूमर, विदुथलाई पार्ट 1(तमिल), दशहरा(तेलुगु) जैसी फिल्में शामिल हैं। इसके अलावा मराठी फिल्म 'सूची में वालवी' और 'बाप ल्योक', गदर 2, अब तो सब भगवान भरोसे जैसी फिल्में भी शामिल हो सकती हैं। इन फिल्मों की एंट्री भी आ चुकी है। हालांकि, उनकी फीस नहीं आई है।

**सिलेक्शन प्रोसेस के लिए चेन्नई पहुंचे ऑस्कर कमेटी के सदस्य**

ऑस्कर कमेटी से जुड़े सोर्सेस के मुताबिक समिति के सदस्य 18 सितंबर से चेन्नई पहुंच चुके हैं। वो सभी इस प्रोसेस को लेकर काफी एक्साइटेड हैं। ऑफिशियल एंट्री के लिए नाम फाइनल करने में लगभग 1 हफ्ते का समय लगेगा। माना जा रहा है कि 23 सितंबर को भारत की तरफ से ऑस्कर के लिए भेजे जाने वाली फिल्म का नाम फाइनल हो जाएगा।

**ऑस्कर 2023 था भारत के लिए खास**

पिछले साल पान नलिन की गुजराती फिल्म 'छेलो शो' को 95 वें ऑस्कर अवॉर्ड में भारत की तरफ से आधिकारिक तौर पर भेजा गया था, जिसे मिक्स्ड रिएक्शन देखने को मिला था। ऑस्कर 2023 भारत के लिए शानदार साल रहा, जिसमें एसएस राजामौली की आरआरआर के गाने नाटू-नाटू को बेस्ट सॉन्ग और गुनीत मोंगा की द एलिफेंट व्हिस्परर्स ने दो अकादमी अवॉर्ड जीते थे। सोर्सेस के मानें तो पिछले साल की सफलता को देखते हुए फिल्म मेकर्स में नया आत्मविश्वास पैदा हुआ है।

**10 मार्च को होगा ऑस्कर 2024**

द एकेडेमी ऑफ मोशन पिक्चर्स आर्ट्स एंड साइंस ने 96वें ऑस्कर अवॉर्ड सेरेमनी की डेट अनाउंस कर दी हैं। एकेडमी के मुताबिक 96वीं ऑस्कर अवॉर्ड सेरेमनी 10 मार्च, 2024 को होगी।

# दो साल बाद इंस्टाग्राम पर वापस आए राज कुंद्रा : शेयर किया गणेश चतुर्थी का वीडियो, हेटर्स को दिया खास मैसेज

**शिल्पा शेट्टी के** पति और बिजनेसमैन राज कुंद्रा ने 2 साल बाद सोशल मीडिया पर वापसी कर ली है। राज से बुधवार को सोशल मीडिया पर गणेश उत्सव का वीडियो शेयर करते हुए अपना कमबैक किया। उन्होंने सभी को गणेश चतुर्थी की बधाई दी। साथ ही हेटर्स के लिए खास मैसेज लिखा। चर्चित वीडियो में राज शिल्पा और अपने बच्चों के साथ गणपति बप्पा की पूजा करते नजर आ रहे हैं। कमबैक के कुछ ही घटों बाद राज के 14000 फॉलोअर्स हो चुके हैं।

**हेटर्स ने मुझे और मजबूत बनायाः राज**

वीडियो शेयर करते हुए राज ने लिखा- 'जय श्री गणेश, वो वापस आ गया। सभी चाहने वालों की वजह से मैं मजबूत बना, वहीं नफरत करने वालों ने मुझे और ज्यादा ताकतवर बना दिया। कर्म ही सबसे जरूरी है, इसलिए मैं धैर्य रख रहा हूं। गणपति बप्पा मोरया। शुभ गणेश चतुर्थी।

**पत्नी और फैंस ने किया राज का वेलकम**

राज के इस वीडियो पर उनकी पत्नी शिल्पा शेट्टी कुंद्रा ने रिएक्ट करते हुए लिखा- 'हमेशा सुरक्षित रहें। शिल्पा की बहन शमिता शेट्टी ने लिखा- लव यू जीजू। फैमिली के अलावा फैंस और राज के सपोर्ट्स ने भी उनका वेलकम बैक किया है।'

**पॉर्न फिल्में बनाने के आरोप में जेल गए थे राज कुंद्रा**

बता दें कि राज कुंद्रा को 2021 में मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच ने पॉर्न फिल्में बनाने के आरोप में गिरफ्तार किया था। इस केस में राज का नाम तब सामने आया था, जब कुछ मॉडल और स्ट्रगलिंग एक्ट्रेसेस ने आरोप लगाया था कि उनसे जबरन पॉर्न फिल्मों में काम कराया गया।

**2021 में राज ने छोड़ा था सोशल मीडिया**

जांच करते हुए पुलिस ने राज के ठिकानों पर छापा मारने के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया था। इस केस में उन्हें 2 महीने की जेल हुई थी। कोर्ट की कार्यवाही लंबी होने के कारण राज को सितंबर 2021 में मुंबई सेशन कोर्ट से बेल मिल गई थी। हालांकि, खुद पर लगे इन आरोपों के बाद राज ने इंस्टाग्राम बंद कर दिया था। हालांकि अब वो वापस आ गए हैं।

# मैडम तुसाद में रखा जाएगा अल्लू अर्जुन का वैक्स स्टैच्यू : जल्द लंदन के लिए रवाना होंगे एक्टर, 2024 में होगा स्टैच्यू का अनावरण

**अल्लू अर्जुन** इस समय इंडिया के सबसे डिमांडिंग एक्टर में से एक हैं। बीते दिनों एक्टर को उनकी फिल्म 'पुष्पाः द राइज' के लिए नेशनल अवॉर्ड से नवाजा गया था। इसके अलावा अल्लू जल्द ही फिल्म के सीक्वल पुष्पा :द रूल में भी नजर आएंगे। वहीं अब हाल ही में खबरें आ रही हैं कि लंदन के मैडम तुसाद म्यूजियम में अल्लू अर्जुन का वैक्स स्टैच्यू लगाया जाएगा।

**मैडम तुसाद म्यूजियम में रखा जाएगा अल्लू अर्जुन का वैक्स स्टैच्यू**

लंदन में अल्लू अर्जुन के वैक्स स्टैच्यू लगाए जाने की तैयारियां जोरों पर हैं। स्टैच्यू तैयार होने के बाद अल्लू अर्जुन साउथ के चौथे सुपरस्टार होंगे जिसका वैक्स स्टैच्यू मैडम तुसाद म्यूजियम में रखा जाएगा। अल्लू अर्जुन से पहले प्रभास और महेश बाबू और काजल अग्रवाल के वैक्स स्टैच्यू म्यूजियम में रखे जा चुके हैं। प्रभास पहले पैन इंडिया स्टार थे, जिनका वैक्स स्टैच्यू मैडम तुसाद म्यूजियम मे रखा गया था।

**लंदन के लिए जल्द रवाना होंगे अल्लू अर्जुन**

मीडिया रिपोर्ट्स की की मानें तो एक्टर का नाम उन स्टार्स की लिस्ट में शामिल हो गया है, जिनका वैक्स स्टैच्यू तैयार किया जाएगा। माना जा रहा है कि अल्लू अर्जुन 'पुष्पा-2' की शूटिंग से ब्रेक लेंगे और अगले दो दिनों के अंदर लंदन के लिए रवाना होंगे, जहां स्टैच्यू तैयार करने के लिए उनका नाप लिया जाएगा। माना जा रहा है कि इस स्टैच्यू का अनावरण 2024 में किया जाएगा।

**म्यूजियम में पहले से हैं इन बॉलीवुड सेलेब्स के वैक्स स्टैच्यू**

बता दें कि मैडम तुसाद वैक्स म्यूजियम में पहले से ही अमिताभ बच्चन, ऐश्वर्या राय, शाहरुख खान, ऋतिक रोशन, प्रियंका चोपड़ा, सलमान खान, दीपिका पादुकोण, करीना कपूर समेत कई एक्टर्स के वैक्स स्टैच्यू तैयार किए गए हैं। अब इन एक्टर्स की लिस्ट में अल्लू अर्जुन का नाम भी शुमार होगा।

# देव आनंद का 73 साल पुराना बंगला बिका

## घर की जगह बनाई जाएगी 22 मंजिला इमारत, 400 करोड़ रुपए में हुई डील

**बॉलीवुड के दिग्गज** एक्टर देव आनंद का सालों पुराना बंगला अब बिक चुका है। दिवंगत एक्टर के बच्चे सुनील आनंद और देविना आनंद ने उनके इस घर को बेचने का फैसला किया है। खबरें हैं कि घर को तोड़कर अब उस जगह पर 22 मंजिला टावर बनाया जाएगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक घर की डील लगभग 400 करोड़ रुपए में हुई है।

**350-400 करोड़ में बिका देव आनंद का बंगला**

रिपोर्ट्स के मुताबिक दिवंगत एक्टर के परिवार से जुड़े करीबी सोर्सेस ने बताया है कि देव आनंद का जुहू वाला बंगला रियल स्टेट कंपनी को बेच दिया गया है। इस घर की डील हो चुकी है। फिलहाल अभी पेपरवर्क चल रहा है। रिपोर्ट्स की मानें तो इस प्राइम लोकेशन पर मौजूद बंगले को करीब 350 से 400 करोड़ रुपए में बेचा गया है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो अब देव आनंद के इस बंगले को खरीदने वाली रियल एस्टेट कंपनी ने इस जगह पर 22 फ्लोर की बिल्डिंग बनाने का फैसला किया है।

देव आनंद और उनकी पत्नी कल्पना कार्तिक ने इस बंगले में करीब 40 साल का वक्त बिताया था। सोर्सेस की मानें तो यह घर काफी समय से खाली पड़ा है। एक्टर के बेटे सुनील आनंद यूएस में रहते हैं। वहीं उनकी बेटी देविना मां के साथ ऊटी में रहा करती थीं। ऐसे में मुंबई के इस घर की देखभाल करने वाला कोई नहीं है। यही वजह है कि सुनील और देवीना अब यह घर बेचने जा रहे हैं। 1950 में बना था देव आनंद का बंगला

कहा जाता है कि जब देव आनंद ने इस बंगले को बनाया था, तब यह जगह इतनी पॉपुलर नहीं थी। हालांकि, आज के समय में इसे जुहू का सबसे पॉश और महंगा एरिया कहा जाता है। मीडिया को दिए पुराने इंटरव्यू में देव आनंद ने अपने घर के बारे में बारे में बात की थी। उन्होंने कहा था- 'हमने ये घर 1950 में बनाया था। तब जुहू एक छोटे गांव की तरह था। यहां आसपास जंगल था। अब तो जुहू बहुत भीड़भाड़ वाला इलाका बन चुका है।'

## एक्ट्रेस तृषा कृष्णन करेंगी शादी!

## बनेंगी मलयालम प्रोड्यूसर की दुल्हनियां

पोन्नियन सेल्वन एक्ट्रेस तृषा किष्णन जल्द ही शादी के बंधन में बंधने वाली हैं। खबरें हैं कि आने वाले दिनों में एक्ट्रेस अपनी शादी की अनाउंसमेंट कर सकती हैं। बताया जा रहा है कि तृषा के होने वाले लाइफ पार्टनर मलयालम फिल्मों के प्रोड्यूसर हैं। हालांकि, वह कौन हैं इसे लेकर कोई अपडेट नहीं है।

**शादी को लेकर तृषा ने की थी बात**

बीते दिनों एक इंटरव्यू के दौरान तृषा से उनकी शादी को लेकर सवाल किया गया था। इस पर एक्ट्रेस ने कहा था कि उन्होंने अभी तक इसके बारे में सोचा नहीं है। वो शादी नहीं करना चाहती हैं, क्योंकि इसके बाद उनपर एक जिम्मेदारी आ जाएंगी। तृषा ने बताया कि उनके कई दोस्त हैं, जिन्होंने शादी की है और वो अपनी जिंदगी में बहुत खुश हैं। हालांकि, उनके कई दोस्त ऐसे भी हैं, जिनका तलाक हो चुका है। एक्ट्रेस ने बताया कि शायद उन्हें अभी तक अपना सही लाइफ पार्टनर नहीं मिला है, ऐसे में वह अभी शादी करने के बारे में नहीं सोचती हैं।

इससे पहले तृषा ने 23 जनवरी 2015 को बिजनेसमैन और प्रोड्यूसर वरुण मनियन से सगाई की थी। हालांकि, कुछ महीनों बाद ही दोनों ने अपनी सगाई तोड़ दी। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो सगाई के बाद से ही तृषा और वरुण के बीच काफी मदभेद रहे थे, जिसके चलते यह रिश्ता ज्यादा समय तक चल नहीं सका। आखिकर मई 2015 में दोनों ने अलग होने का फैसला किया।

उस दौरान खबरें थीं कि वरुण के पिता तृषा के साथ अपने बेटे की शादी के सख्त खिलाफ थे, क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि एक्ट्रेस शादी के बाद एक्टिंग करें। वरुण भी पिता के इस फैसले के समर्थन में थे। हालांकि, तृषा ने कभी भी इस सगाई के टूटने का कारण नहीं बताया।

साउथ इंडस्ट्री में तृषा का नाम कई एक्टर्स के साथ जुड़ चुका है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तृषा इससे पहले राणा दग्गुबाती, थलापति विजय और नयनतारा के एक्स बॉयफ्रेंड सिंबू के साथ रिलेशनशिप में रह चुकी हैं। हालांकि, एक्ट्रेस ने कभी अपनी लव लाइफ को लेकर कुछ भी ऑफिशियल नहीं किया है।

**थलापति विजय के साथ रियो में नजर आएंगी तृषा**

पोन्नियन सेल्वनः 2 की सक्सेस के बाद तृषा के पास बैक-टू-बैक कई फिल्में हैं। वो जल्द ही तमिल फिल्म लियो में नजर आएंगी। ये फिल्म 19 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसके अलावा एक्ट्रेस डायरेक्टर अरुण वसीगरन की अपकमिंग फिल्म द रोड में दिखाई देंगी। हालांकि अभी फिल्म की रिलीज को लेकर कोई अपडेट सामने नहीं आया है।

## जवान डायरेक्टर एटली से नाराज हैं साउथ स्टार नयनतारा, दीपिका पादुकोण बनी इसकी वजह!

**साउथ इंडस्ट्री** की हाईपेड एक्ट्रेस नयनतारा अपनी ब्लॉकबस्टर फिल्म 'जवान' ब्लॉकबस्टर साबित हुई है और फिल्म में वह शाहरुख खान की प्रेमिका और फोर्स वन की हेड के रूप में दिखीं.

शाहरुख के साथ उनकी केमिस्ट्री काफी पसंद की गई। ऐसे में कयास लगाए जाने लगे हैं कि नयनतारा अब बॉलीवुड में और दिखेंगी।

पर जो अंदर की खबर आई है, उससे लग रहा है कि ऐसा फिलहाल तो नहीं होने वाला है। कहा जा रहा है कि नयनतारा 'जवान' की रिलीज के बाद से ही खुश नहीं हैं, और इसकी वजह डायरेक्टर एटली हैं. आइए जानते हैं क्या है पूरा मामला.

**दीपिका से छोटा रहा गया किरदार**

एक मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि नयनतारा, 'जवान' की रिलीज के बाद से खुश नहीं हैं. रिपोर्ट में सूत्र के हवाले से कहा गया है, 'वह एटली से बहुत नाराज थीं क्योंकि फिल्म में उनकी भूमिका काट दी गई थी. साथ ही, दीपिका पादुकोण के किरदार को ऊंचा उठा दिया गया, और नयनतारा के किरदार को काफी हद तक दरकिनार कर दिया गया.' फिल्म में दीपिका की भूमिका को कैमियो बताया गया है, लेकिन कई लोगों का मानना है कि वास्तव में ऐसा नहीं हुआ.

**दीपिका का नहीं था कैमियो**

दीपिका पादुकोण ने शाहरुख खान के साथ कई फिल्मों में काम किया है. जवान में उनके कैमियो को बढ़ा दिया गया लेकिन फिर भी ऑडियन्स ने उन्हें बहुत पसंद किया है. रिपोर्ट के मुताबिक सोर्स ने कहा- दीपिका का कैमियो नहीं था. जवान शाहरुख-दीपिका की फिल्म लग रही थी. नयनतारा साउथ की लीडिंग एक्ट्रस हैं. जवान में जिस तरह से उनके रोल के साथ ट्रीटमेंट किया गया उससे वह खुश नहीं थीं. इसी वजह से वह बॉलीवुड प्रोजेक्ट में नजर नहीं आने वाली हैं. खासकर इतनी जल्दी तो नहीं.

**प्रेस कॉन्फ्रेंस और प्रमोशनल इवेंट्स से रही दूर**

नयनतारा जवान के प्रमोशनल इवेंट्स में भई शामिल नहीं हुई हैं. एक्ट्रेस मुंबई में जवान की सक्सेस के बाद रखी प्रेस कॉन्फ्रेंस में का हिस्सा भी नहीं बनीं थी. इवेंट में शाहरुख खान.

दीपिका पादुकोण, विजय सेतुपति, सान्या मल्होत्रा, रिद्धि डोगरा, एटली मौजूद थे. एक्ट्रेस से जुड़े एक सोर्स का कहना है कि नयनतारा अपने खराब प्रमोशनल एक्सपीरियंस की वजह से किसी फिल्म का प्रमोशन नहीं करती हैं. वह नो प्रमोशन पॉलिसी फोलो करती हैं. एक्ट्रेस का मानना है कि उनका काम एक्टिंग करना है, प्रमोशनल करना नहीं.

## विजय की 'दलपति 68' में अरविंद स्वामी खलनायक की भूमिका में!

**दलपति विजय** अपने आगामी परियोजनाओं से मनोरंजन उद्योग में धूम मचा रहे हैं। साउथ सुपरस्टार जल्द ही लोकेश कनगराज के जरिए निर्देशित अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म 'लियो' में नजर आएंगे। फिल्म का क्रेज दर्शकों के बीच अभी से देखने को मिल रहा है। वहीं इन सबके बीच अभिनेता ने अपनी 68वीं फिल्म की भी घोषणा की थी, जिसे लेकर अब एक बड़ा अपडेट सामने आया है। फिल्म के स्टारकास्ट को लेकर नए जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट्स के अनुसार, 'दलपति 68' में साउथ सुपरस्टार अरविंद स्वामी की एंट्री हुई है। कहा जा रहा है कि अरविंद फिल्म में खलनायक की भूमिका निभाते हुए नजर आएंगे। 'दलपति68' को प्रसिद्ध फिल्म निर्माता वेंकट प्रभु द्वारा लिखा और निर्देशित किया जाएगा। फिल्म का निर्माण एजीएस एंटरटेनमेंट के बैनर तले किया जाएगा। अभिनेता और इस प्रोडक्शन हाउस ने पहले फिल्म बिगिल पर सहयोग किया था, जो 2019 में रिलीज हुई थी।

इसके साथ ही यह भी खबर सामने आई है कि यह फिल्म भारी भरकम बजट में बनेगी और इसमें जबरदस्त एक्शन सीन होंगे। एजीएस एंटरटेनमेंट ने जून में फिल्म का अनाउंसमेंट वीडियो पोस्ट किया था। अब रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिल्म में विलेन का किरदार अरविंद स्वामी निभा सकते हैं। इससे पहले अरविंद स्वामी को फिल्म 'कस्टडी' में उनकी नकारात्मक भूमिका के लिए आलोचकों और दर्शकों से सराहना मिली। इसका निर्देशन भी वेंकट प्रभु ने किया था।

हालांकि, निर्माताओं की ओर से इस बारे में कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। माना जा रहा है कि फिल्म में साउथ सुपरस्टार दलपति विजय के अलावा विलेन का किरदार भी मुख्य आकर्षण होगा। कुल मिलाकर यह माना जा रहा है कि फिल्म में खलनायक की भूमिका एक प्रसिद्ध अभिनेता निभाएगा। मेकर्स ने अभी तक फिल्म की पूरी कास्ट का खुलासा नहीं किया है। अभिनेत्री ज्योतिका फिल्म में मुख्य अभिनेत्री का किरदार निभाती नजर आ सकती हैं। यह जोड़ी इससे पहले फिल्म 'कुशी' और 'थिरुमलाई' में काम कर चुकी है। 'कुशी' तमिल फिल्म उद्योग की कल्ट क्लासिक फिल्म बन गई।

वहीं बात करें दलपति विजय की आने वाली फिल्म 'लियो' के बारे में तो फिल्म में अभिनेता के साथ अभिनेत्री तृषा कृष्णा और बॉलीवुड अभिनेता संजय दत्त भी हैं। फिल्म का संगीत मशहूर संगीतकार अनिरुद्ध रविचंदर ने तैयार किया है। 'लियो' 19 अक्तूबर को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

## आयुष्मान ने ट्रेन में गाकर कमाए पैसे, कास्टिंग डायरेक्टर ने कहा- हीरो नहीं बन सकता, अब हाइएस्ट रिटर्न देने वाले एक्टर बने

**बॉलीवुड के सबसे** वर्सेटाइल एक्टर आयुष्मान खुराना आज 39 साल के हो गए हैं। 2012 में फिल्म विक्की डोनर से डेब्यू करने वाले आयुष्मान अब तक 20 फिल्मों में नजर आए हैं और उनका हर किरदार एक-दूसरे से बिल्कुल अलग रहा है। आयुष्मान पर कभी बड़े बजट का दांव नहीं खेला गया, उनकी फिल्में महज 20-35 करोड़ रुपए में बन जाया करती हैं।

हालांकि उनकी 29 करोड़ में बनी बधाई हो ने 221 करोड़ कमाए, 32 करोड़ में बनी अंधाधुन ने 456 करोड़ कमाए। 25 अगस्त को रिलीज हुई उनकी फिल्म ड्रीम गर्ल 2 ने महज 18 दिनों में ही 127 करोड़ कमा लिए हैं। कभी एक कास्टिंग डायरेक्टर ने आयुष्मान से कहा था कि वो हीरो मटेरियल नहीं हैं। इसके बावजूद आज वो सबसे ज्यादा रिटर्न ऑफ इन्वेस्टमेंट देने वाले एक्टर हैं।

**घर में बना था सजा के लिए कमरा, वहीं होती थी पिटाई**

14 सितंबर 1984 को आयुष्मान खुराना का जन्म चंडीगढ़ में हुआ था। उनके पिता पी. खुराना एक एस्ट्रोलॉजर हैं और मां पूनम एक हाउसवाइफ हैं। आयुष्मान के छोटे भाई अपारशक्ति खुराना हैं, जो उनके नक्शेकदम पर चलकर बॉलीवुड एक्टर बने हैं। आयुष्मान का पैदाइश के बाद निशांत नाम रखा गया था, हालांकि जब वो 3 साल के हुए तो उनके पिता ने निशांत की जगह उनका नाम आयुष्मान कर दिया। उनके घर में एक पनिशमेंट रूम था, जिसमें उन्हें गलती करने पर मार पड़ती थी। आयुष्मान खुराना बचपन से ही हीरो बनना चाहते थे। वो अपनी दादी को गुरुद्वारे में गाते देखकर खुद भी उनकी नकल करते थे। घर पर घंटों शीशे के सामने खड़े होकर खुद को निहारते थे और गाना गाते थे।

**कॉलेज के दिनों में ट्रेन में गाते थे**

कॉलेज के दिनों में आयुष्मान खुराना थिएटर किया करते थे। DAV कॉलेज के प्लेग्रुप आगाज और मंचतंत्र को भी आयुष्मान ने दोस्तों के साथ मिलकर शुरू किया था। उन्होंने कई स्ट्रीट प्ले कर नेशनल कॉलेज फेस्टिवल में कई अवॉर्ड जीते थे। प्ले के सिलसिले में आयुष्मान कई बार दिल्ली से मुंबई आया करते थे। कई बार दिल्ली-मुंबई जाने वाली ट्रेन में वो अपने दोस्तों के साथ गाना गाया करते थे। इससे लोगों का मनोरंजन भी होता था और उनकी कमाई। एक बार तो उन लोगों ने इतने रुपए जमा कर लिए कि उनका पूरा ग्रुप गोवा घूमने गया था।

जब काम की तलाश में आयुष्मान मुंबई पहुंचे तो उनके पास रहने का कोई ठिकाना नहीं था। ऐसे में उन्होंने अपने एक दोस्त से मदद मांगी थी। मदद तो मिल गई, लेकिन जब आयुष्मान उसके घर पहुंचे तो देखा कि उसकी गर्लफ्रेंड भी एक कमरे के फ्लैट में साथ ही रहती है। पहले दिन जब आयुष्मान पहुंचे तो उनका दोस्त अपनी गर्लफ्रेंड से झगड़ा करके गुस्से में बैठा हुआ था। आयुष्मान उन दोनों के साथ कंफर्टेबल नहीं थे। उस एक कमरे के फ्लैट में सिर्फ एक क्वीन साइज बेड था, जिसे तीनों को शेयर करना पड़ा था। चूंकि उनके दोस्त और उसकी गर्लफ्रेंड का झगड़ा चल रहा था तो आयुष्मान को दोनों के बीच सोना पड़ा था।

2023 में रिलीज हुई आयुष्मान की 35 करोड़ में बनी फिल्म ड्रीम गर्ल 2 ने 127 करोड़ रुपए कमा लिए हैं

आयुष्मान उस घर में दोनों के बीच इतना असहज महसूस कर रहे थे कि उन्होंने अगले दिन ही अपना सामान बांधा और दूसरे दोस्त के पास पहुंच गए। उनका दोस्त सिद्धार्थ उस समय मेडिकल स्टूडेंट था और मेडिकल हॉस्टल में रहता था। उस हॉस्टल में सिर्फ मेडिकल स्टूडेंट को ही रहने की परमिशन थी, इसलिए आयुष्मान वहां खुद को मेडिकल स्टूडेंट बताकर चोरी-छिपे रहते थे।

**साल 2004 में बने थे रोडीज 2 के विनर**

साल 2004 में आयुष्मान खुराना ने रोडीज का ऑडिशन दिया था। ऑडिशन में उन्हें स्पर्म डोनेट करने का टास्क दिया गया था। आयुष्मान ने टास्क पूरा कर न सिर्फ शो में जगह बनाई, बल्कि सीजन भी जीता। संयोग ये रहा कि आयुष्मान ने डेब्यू फिल्म विक्की डोनर में भी स्पर्म डोनर का ही रोल प्ले किया था। रोडीज जीतने के बाद भी आयुष्मान खुराना ने मुंबई में रहते हुए कई ऑडिशन दिए, लेकिन उन्हें कोई रोल नहीं मिला। वो चंडीगढ़ लौट गए और उन्होंने पोस्ट ग्रेजुएशन किया।

**कई ऑडिशन से भगाए गए आयुष्मान**

एक दिन जब आयुष्मान ऑडिशन देने गए तो कई लोगों के साथ उनका ऑडिशन लिया जा रहा था। आयुष्मान को लगा कि अगर उन्होंने सबके सामने एक्टिंग की तो कोई उनका स्टाइल कॉपी कर सकता है। उन्होंने कास्टिंग डायरेक्टर से कहा कि मैं सबके सामने ऑडिशन नहीं दूंगा। आप मेरा अलग से ऑडिशन ले लीजिए। आयुष्मान की ये बात सुनकर कास्टिंग डायरेक्टर ने उनसे कहा कि क्या तुम खुद को शाहरुख खान समझते हो। यहां ऐसा नहीं होता। ऑडिशन देना है तो सबके सामने देना होगा।

एक दिन उन्होंने बालाजी टेलीफिल्म्स के शो क्योंकि सास भी कभी बहू थी के लिए ऑडिशन दिया था। उनका अभिनय कास्टिंग डायरेक्टर को पसंद आया और उन्हें शो में रोल मिल गया। उन्हें शो में तुलसी के बेटे लक्ष्य विरानी का रोल मिला था, लेकिन शूटिंग शुरू होने से पहले ही उनका सिलेक्शन बिग FM में हो गया। जब उन्हें बतौर रेडियो जॉकी काम मिला तो उन्होंने शो क्योंकि सास भी कभी बहू थी छोड़ दिया।

शाहरुख का इंटरव्यू लेने गए, घंटों करना पड़ा इंतजार

बतौर आरजे आयुष्मान खुराना एक बार शाहरुख खान का इंटरव्यू लेने पहुंचे थे। आयुष्मान बचपन से ही शाहरुख के फैन थे और उनकी हर फिल्म देखते थे। कई बार तो आयुष्मान ने ब्लैक में टिकट लेकर उनकी फिल्में देखी थीं। जब आयुष्मान उनका इंटरव्यू लेने पहुंचे तो उस समय शाहरुख एक कार ऐड की शूटिंग कर रहे थे।

आयुष्मान से कहा गया कि शाहरुख व्यस्त हैं और आज बात नहीं कर पाएंगे, लेकिन आयुष्मान ने उनकी टीम से कहा कि वो इंतजार करेंगे। कई घंटों के इंतजार के बाद भी जब शाहरुख फ्री नहीं हुए तो आयुष्मान से दोबारा कहा गया कि वो आज नहीं मिल सकते। इसके बावजूद आयुष्मान ने कहा कि वो उन्हें शूटिंग करते देखना चाहते हैं। आयुष्मान ने वहीं बैठकर पूरी शूटिंग देखी।

आयुष्मान खुराना को एक बार हीरो के ऑडिशन से सिर्फ इसलिए रिजेक्ट कर दिया गया कि उनकी आईब्रोज घनी थीं। डायरेक्टर ने उनसे कहा था, तुम्हारी आईब्रोज बहुत घनी हैं, तुम हीरो नहीं बन सकते।

**जॉन अब्राहम की बदौलत मिली थी पहली फिल्म विक्की डोनर**

फिल्म विक्की डोनर को एक्टर जॉन अब्राहम ने प्रोड्यूस किया था। फिल्म को सुजीत सरकार डायरेक्ट कर रहे थे। शुरुआत में हर किसी को लगा कि जॉन खुद फिल्म में लीड रोल प्ले करेंगे, हालांकि उन्होंने ये फिल्म करने से इनकार कर दिया। ऐसे में सुजीत सरकार ने प्रोडक्शन टीम को आयुष्मान खुराना के नाम का सुझाव दिया, जो एक वीडियो जॉकी थे और उनकी यूथ में अच्छी फैन फॉलोइंग थी।

फिल्म में स्पर्म डोनर का रोल प्ले करने के अलावा आयुष्मान ने फिल्म के लिए पानी दा रंग गाने को आवाज भी दी। इस गाने को खुद आयुष्मान ने लिखा था और म्यूजिक भी दिया था। फिल्म विक्की डोनर महज 15 करोड़ के बजट में बनी थी, जिसने 68 करोड़ का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन किया था। इस फिल्म के लिए आयुष्मान को बेस्ट डेब्यू मेल के अवॉर्ड के साथ, बेस्ट प्लेबैक सिंगर का भी अवॉर्ड मिला था।

**फिल्म फ्लॉप हुई तो एक्टिंग छोड़ना चाहते थे आयुष्मान**

विक्की डोनर की कामयाबी के बाद आयुष्मान की अगली दो फिल्में नौटंकी साला और बेवकूफियां बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रहीं। जब उनकी तीसरी फिल्म हवाईजादा भी फ्लॉप हुई तो उन्होंने तुरंत अपना बैंड बनाकर एक्टिंग छोड़ने का मन बना लिया।

साल 2015 की फिल्म दम लगा के हइशा आयुष्मान खुराना के लिए फायदेमंद साबित हुई, जिसने 113 करोड़ का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन किया। तब से लेकर आज तक आयुष्मान 100 करोड़ कमाने वाली कई फिल्में दे चुके हैं।

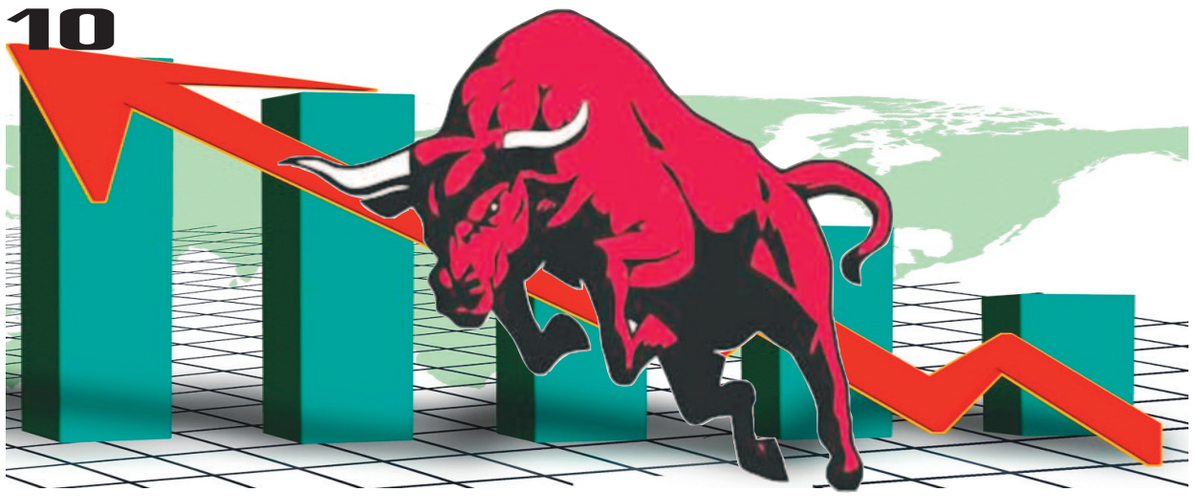

# तुअर और उड़द की कीमतों में आएगी गिरावट?

## सरकार ने उठाया बड़ा कदम

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। देश में तुअर और उड़द के दाम अभी उच्च रेट पर बने हुए हैं। इस बीच, सरकार ने एक ऐसा फैसला लिया है, जिससे दाल की कीमत कम हो सकती है। सरकार ने फैसला किया है कि वह तुअर और उड़द की दालों पर लगाई गई स्टॉक होल्डिंग सीमा को 31 अक्टूबर से आगे बढ़ाएगी। रिपोर्ट में बताया गया कि उत्पादन में गिरावट और आयात में सुस्ती की संभावनाओं के साथ जून में लगाई गई दालों की किस्मों के लिए स्टॉक होल्डिंग सीमा को कम से कम तीन महीने के लिए बढ़ाया जाएगा। उपभोक्ता मामलों के विभाग के अनुसार, तुअर की मॉडल खुदरा कीमतें साल की शुरुआत की कीमतों की तुलना में

बुधवार को 45 फीसदी बढ़कर 160 रुपये प्रति किलो हो गई हैं। हालांकि कई सेंटर्स पर रिटेल प्राइस 170 रुपये प्रति किलो से ज्यादा हो गई हैं। सोमवार को मॉडल उड़द की रिटेल प्राइस 110 रुपये प्रति किलोग्राम थी, जो छह महीने पहले की कीमतों की तुलना में 10 फीसदी की बढ़ोतरी है। सरकार ने थोक विक्रेताओं के लिए 200 टन, खुदरा विक्रेताओं के लिए 5 टन, प्रत्येक खुदरा दुकानों पर 5 टन और बड़ी चेन के खुदरा विक्रेताओं के लिए डिपो पर 200 टन की स्टॉक होल्डिंग सीमा लगाई थी। आयातकों के लिए स्टॉक होल्डिंग सीमा सीमा शुल्क निकासी की तारीख से 30 दिनों से अधिक स्टॉक रखने पर रोक लगाती है। महाराष्ट्र के लातूर में तुअर की मंडी कीमतें वर्तमान में 11,500 रुपये प्रति क्विंटल के करीब हैं, जो 2016 के बाद 7,000 रुपये क्विंटल के मिनिमम सपोर्ट प्राइस के मुकाबले सबसे ज्यादा है। व्यापारियों के मुताबिक मांग बढ़ने के कारण अगले महीने कीमतें और बढ़ने की उम्मीद है, जबकि कम बारिश और कम खरीफ क्षेत्र के कारण घरेलू फसल कम होने की उम्मीद है। दिसंबर तक करीब 0.1 मिलियन टन तुअर दाल की मासिक आपूर्ति होने की उम्मीद है, जो कीमतों को कम करने के लिए पर्याप्त नहीं होगी। कृषि मंत्रालय के अनुसार, इस साल बुआई 5.6% कम होकर 43 लाख हेक्टेयर रही है और फसल की कटाई नवंबर तक होने की उम्मीद है।

# फिर 100 डॉलर के पार पहुंच सकता है कच्चा तेल, महंगाई का बना रहेगा दबाव

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। कच्चा तेल फिर 100 डॉलर के पार जा सकता है। गोल्डमैन सैश ने यह अनुमान जताते हुए कहा, मांग में उछाल और ओपेक सहित अन्य देशों में आपूर्ति प्रतिबंधों के कारण क्रूड के दाम में तेजी आ सकती है। इससे महंगाई पर दबाव बना रहेगा।जून मध्य से अब तक क्रूड 30% से अधिक बढ़कर 95 डॉलर तक पहुंच चुका है। हालांकि, अमेरिकी फेडरल रिजर्व के ब्याज दर निर्णय से पहले बुधवार को तेल का भाव एक डॉलर तक गिर गया था। ओपेक प्लस देशों के प्रमुख सऊदी अरब व रूस के आपूर्ति प्रतिबंधों से कच्चा तेल इस समय 10 माह के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। अमेरिका और चीन में बेहतर स्थिति ने भी इसमें मदद की है। तेल के भंडार में तेजी से गिरावट आ रही है।

**80-105 डॉलर क्रूड की कीमत रख सकता है ओपेक**

ओपेक 2024 में मजबूत एशिया-केंद्रित वैश्विक मांग वृद्धि का लाभ उठाकर ब्रेंट को 80 डॉलर से 105 डॉलर के दायरे में बनाए रखने में सक्षम होगा। पिछले सप्ताह अमेरिकी तेल के भंडार में 50 लाख बैरल की कमी आई थी।

# सोने-चांदी में गिरावट का सिलसिला जारी

## आज इतने घट गए दाम, चेक करें नए रेट्स

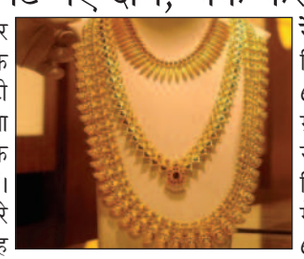

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। गुरुवार के वायदा बाजार यानी मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में सोना और चांदी दोनों गिरावट के साथ कारोबार कर रहे हैं। सबसे पहले हम सोने के बारे में बात करें तो आज यह यह शुरुआती दौर में 59,315 रुपये प्रति 10 ग्राम पर खुला था। इसके बाद इसके दाम में और कमी देखी गई है और यह कल के मुकाबले 337 रुपये यानी 0.57 फीसदी की कमी के साथ 59,068 रुपये 10 ग्राम पर है। कल की बात करें तो एमसीएक्स पर सोना 59,405 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था।

**चांदी में गिरावट का सिलसिला जारी-**

सोने के अलावा आज चांदी में भी गिरावट देखी जा रही है। वायदा बाजार में चांदी गिरावट के साथ 72,970 रुपये प्रति किलोग्राम पर खुली थी। इसके बाद चांदी में गिरावट का सिलसिला जारी रहा है और यह कल के मुकाबले 1 फीसदी यानी 730 रुपये टूटकर 72,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर कारोबार कर रही है। बुधवार को चांदी 73,230 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी।

**जानिए प्रमुख शहरों में गोल्ड-सिल्वर के रेट-**

दिल्ली में 24 कैरेट गोल्ड 60,200 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 74,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है। कोलकाता में 24 कैरेट गोल्ड 60,050 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 74,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है। मुंबई में 24 कैरेट गोल्ड 60,050 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 74,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है। चेन्नई में 24 कैरेट गोल्ड 60,330 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 78,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है। हैदराबाद में 24 कैरेट गोल्ड 60,050 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 78,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है। अहमदाबाद में 24 कैरेट गोल्ड 60,100 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 74,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है। जयपुर में 24 कैरेट गोल्ड 60,200 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 74,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है। लखनऊ में 24 कैरेट गोल्ड 60,200 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 74,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है। पटना में 24 कैरेट गोल्ड 60,100 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 74,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है।

# अमेरिका का शटडाउन क्या है और यूएस की इकोनॉमी पर कैसे डालेगा असर

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। इस समय अमेरिका में शटडाउन की चर्चा काफी हो रही है। आने वाली 30 सितंबर की मध्यरात्रि तक अगर डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकन के बीच अल्पकालिक खर्च बिल पर सहमति ना बनी तो यूएस में शटडाउन की स्थिति लागू हो जाएगी। अमेरिकी सरकार का शटडाउन वो स्थिति है जब यूएस की सरकार, एजेंसियों और सरकारी कामकाज के लिए पर्याप्त फंडिंग पास करने में असमर्थ हो जाती है। सरकार जो खर्च करती है और जो लेती है, उसके बीच का अंतर यानी बजट घाटा बेतहाशा बढ़ गया है।

**अमेरिका में डेमोक्रेट बहुमत वाली सीनेट और रिपब्लिकन कंट्रोल्ड प्रतिनिधि सभा के बीच नहीं बन रही सहमति**

अमेरिका में डेमोक्रेट बहुमत वाली सीनेट और रिपब्लिकन कंट्रोल्ड प्रतिनिधि सभा के बीच बजट प्रस्तावों पर अभी तक सहमति नहीं बनी और अब केवल 10 दिन बचे हैं जब यूएस में संभावित शटडाउन से बचने के लिए अमेरिकी सांसदों के पास वक्त है। अगर शटडाउन की स्थिति होती है तो हर एक हफ्ते में यूएस इकोनॉमी को 6 अरब डॉलर का भारीभरकम नुकसान होगा वहीं चौथी तिमाही तक आते-आते यूएस की जीडीपी में 0.1 फीसदी की गिरावट देखी जाएगी।

**अमेरिका का राष्ट्रीय कर्ज 33 खरब डॉलर से ज्यादा**

सरकारी शटडाउन की आशंका के कारण अमेरिका का राष्ट्रीय कर्ज 33 खरब डॉलर से ज्यादा हो गया है। अमेरिका में पहले से ही ऑटो कर्मचारियों की हड़ताल, महंगाई से जूझ रही अर्थव्यवस्था और गैस की बढ़ी कीमतों को लेकर मंदी की संभावना भी जताई जा रही है। सरकार बजट को लेकर दबाव में है। वहीं रेटिंग एजेंसी फिच ने अगस्त में ही अमेरिकी सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग को एएए से घटाकर एए+ कर दिया था। इसके पीछे फिच ने अमेरिका पर बढ़ते कर्ज और पक्षपातपूर्ण अस्थिरता को वजह बताया था। इसके बाद फिच ने कांग्रेस को चेतावनी भी दी थी।

**अमेरिका का शटडाउन क्या है और क्यों है चिंता का विषय**

अमेरिका का शटडाउन चिंता का विषय इसलिए हैं क्योंकि इसमें कुछ खास स्थितियां लागू हो जाती हैं, जैसे कि-अमेरिका में शटडाउन लागू होने के दौरान ज्यादातर सेवाएं बंद हो जाती हैं। हालांकि वो सेवाएं जिनके बिना गुजारा नहीं हो सकता उन्हें जारी रखा जाता है- जैसे कि होमलैंड सिक्योरिटी डिपार्टमेंट और एफबीआई का काम।शटडाउन के दौरान 40 फीसदी सरकारी लोगों को अनपेड फरलो यानी बिना पैसे की छुट्टी पर भेज दिया जाता है और उनसे किसी तरह का काम नहीं करने को कहा जाता है। इनमें से लगभग सभी नॉन-डिफेंस सेक्टर के कर्मचारी होते हैं आर्मी और ऐसी सेवाओं से जुड़े कर्मचारी फरलो पर नहीं भेजे जाते हैं।

**कब कब हुआ शटडाउन**

1981 से लेकर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शासनकाल के शटडाउन को मिलाकर देखा जाए तो 14 शटडाउन हो चुके हैं। अगर 1 अक्टूबर से अमेरिका में शटडाउन शुरू हो जाता है तो ये 15वां शटडाउन होगा। डोनाल्ड ट्रंप की पिछली अमेरिकी सरकार का 35 दिन का शटडाउन अमेरिका के इतिहास का सबसे लंबा शटडाउन था।

# बिना पैन कार्ड क्या सीनियर सिटीजन दाखिल कर सकेंगे आईटीआर? जानिए डिटेल

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। पैन कार्ड एक बेहद खास दस्तावेज है, जिसका उपयोग फाइनेंशियल कामों या बैंक संबंधी कामों के लिए किया जाता है। पैन कार्ड का इस्तेमाल आईटीआर फाइल करने से लेकर बैंक अकाउंट ओपन करने तक किया जाता है। ऐसे में कई सारे लोगों के मन में यह सवाल आता है कि क्या पैन कार्ड के बिना कोई सीनियर सिटीजन आईटीआर भर सकता है? आइए पूरी डिटेल जानते हैं।

**क्या बिना पैन के सीनियर सिटीजन आईटीआर भर सकते हैं?**

अगर किसी सीनियर सिटीजन ने अलग-अलग बैंकों में एफडी जमा कर रखी है और उसने टैक्स कटौती से बचने के लिए 15जी फॉर्म भी जमा किया है, पर बैंक ने पैन जमा नहीं करने की वजह से 20 फीसदी टैक्स काट लिया। ऐसे में आईटीआर फाइल करके रिफंड के लिए क्लेम कर सकते हैं। इस कारण फॉर्म 15एच जमा करना चाहिए।

**आईटीआर फाइल नहीं किया जा सकता**

अगर आपके पास पैन कार्ड नहीं है तो आप इनकम टैक्स रिटर्न फाइल नहीं कर सकते हैं। अगर बैंक द्वारा टैक्स काटा गया है और आप रिफंड पाना चाहते हैं तो आईटीआर भरना अनिवार्य है।

# प्याज: थोक व्यापारियों के इस 'कुचक्र' को तोड़ा तो किसानों को मिलेगा लाभ, इस साजिश के कारण बढ़ रही कीमत

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। जो प्याज एक-दो सप्ताह पहले 20 रूपये किलो में मिल रही थी, अचानक उसकी कीमत 35 से 40 रूपये प्रति किलो हो गई है। प्याज कीमतों में यह वृद्धि नासिक में प्याज के थोक व्यापारियों की हड़ताल के कारण हुई है। यदि व्यापारियों की हड़ताल जल्द नहीं टूटी तो प्याज एक बार फिर 80-90 रूपये किलो तक जा सकती है। हालांकि, सरकार प्याज के थोक व्यापारियों की उस नापाक गठजोड़ को हमेशा के लिए तोड़ने की योजना बना रही है जिसके कारण प्याज की कृत्रिम कमी पैदा कर आम उपभोक्ताओं से ऊंची कीमत वसूली जाती है। दरअसल, प्याज की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी हो रही थी। इसे कम करने के लिए सरकार ने नैफेड (नेशनल एग्रीकल्चरल कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड) और नेशनल कोऑपरेटिव कन्ज्यूमर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड यानी एनसीसीएफ के माध्यम से किसानों से सीधे प्याज की खरीद शुरू कर दी। इस प्याज को आम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराया जाने लगा। इससे बाजार में प्याज की कीमतें नहीं बढ़ने पा रही थीं। प्याज के थोक व्यापारियों का आरोप है कि नैफेड और एनसीसीएफ सीधे किसानों से प्याज की खरीदी कर रहे हैं और खुदरा व्यापारियों तक उस कीमत में पहुंचा रहे हैं जो उनकी खरीद कीमत से भी कम है। यह अंतर 500 से 700 रूपये तक है। ऐसे में उन्हें हर क्विंटल प्याज बेचने पर घाटा हो रहा है।

# 24 सितंबर को चलने वाली 9 वंदेभारत एक्सप्रेस

## अब इतनी हो जाएगी कुल संख्या, जानें सभी सबके रूट

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। देश को एक साथ नौ वंदेभारत एक्सप्रेस ट्रेनों का तोहफा मिलने वाला है। यह पहला मौका होगा, जब एक साथ इतनी संख्या में वंदेभारत एक्सप्रेस देश के अलग-अलग हिस्सों से रवाना होंगी। प्रधानमंत्री इन सभी ट्रेनों को वर्चुअल हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। इन नौ वंदेभारत को मिलकर संचालित होने वाली वंदेभारत की संख्या 33 पहुंच जाएगी।मौजूदा 23 वंदेभारत का सफल संचालन हो रहा है। ये ट्रेनें पूर्वोत्तर के राज्यों को छोड़कर सभी राज्यों से चल रही हैं। हालांकि पूर्वोत्तर में असम से भी वंदेभारत का संचालन हो रहा है। अब तक कुल 35 वंदेभारत एक्सप्रेस ट्रैक पर आ चुकी हैं, जिसमें से 33 वंदेभारत एक्सप्रेस का संचालन हो रहा है, दो ट्रेन सेट रिजर्व में रखे गए हैं, जिससे जरूरत

पड़ने पर इनको इस्तेमाल किया जा सके और वंदेभारत की सेवा बाधित न हो सके। ये वंदेभारत किन-किन रूटों पर चल रही हैं और 9 वंदेभारत किन रूटों पर दौड़ेंगी, आइए जानें।24 सितंबर को चलने वाली वंदेभारत कासरगोड से त्रिवेन्द्रम, जयपुर से उदयपुर, पटना से हावड़ा, रांची से हावड़ा, हैदाबाद से चेन्नई, चेन्नई से तिरुनेलवेली, इंदौर से जयपुर, पुरी से राउलकेला, जयपुर से चंडीगढ़, जामनगर से अहमदाबाद के बीच चलेंगी।जुलाई में गोरखपुर-लखनऊ वंदेभारत का उद्घाटन हुआ था। इससे पूर्व पांच वंदेभारत ट्रेनों को एक साथ झंडी दिखाई गयी थी, जिसमें भोपाल से जबलपुर, भोपाल से इंदौर, रांची से पटना, बेंगलुरु-हुबली-धारवाड़, गोवा-मुंबई वंदेभारत शामिल थीं।देश की पहली वंदे भारत ट्रेन सबसे नई दिल्ली से भगवान शिव की नगरी काशी के बीच चली। यह ट्रेन फरवरी 2019 में चलाई गयी है। वहीं, दूसरी ट्रेन को भी धार्मिक नगरी से जोड़ा गया और यह ट्रेन नई दिल्ली से श्री वैष्णो देवी कटरा के बीच चली। तीसरी गांधीनगर से मुंबई के बीच चलाई गयी, चौथी नई दिल्ली से अंब अंदौरा स्टेशन हिमाचल के बीच शुरू की गयी। पांचवीं वंदेभारत को चेन्नई से मैसूर के बीच चलाया गया। छठीं वंदेभारत नागपुर से बिलासपुर के बीच चली।

# शेयर बाजार में गिरावट बरकरार, सेंसेक्स 570 अंक डूबा

## निफ्टी फिसलकर 19750 के नीचे बंद

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। घरेलू शेयर बाजार की आज की क्लोजिंग में गिरावट का दौर बरकरार है और सेंसेक्स में 550 अंकों से ज्यादा की गिरावट रही है। सेंसेक्स और निफ्टी दोनों आज 0.80 फीसदी से ज्यादा की गिरावट के साथ बंद हो पाए हैं। बैंक, ऑटो, फार्मा सेक्टर के शेयरों ने जोरदार गिरावट के साथ बाजार को नीचे खींचा। आज बाजार की क्लोजिंग में बीएसई का सेंसेक्स 570.60 अंक या 0.85 फीसदी की गिरावट के साथ 66,230 के लेवल पर क्लोजिंग दिखा पाया है। इसके अलावा एनएसई का निफ्टी 159.05 अंक या 0.80 फीसदी की गिरावट के साथ 19,742 के लेवल पर बंद हुआ है।बैंक निफ्टी आज 760.75 अंक या 1.68 फीसदी की गिरावट के साथ 44,623.85 के लेवल पर क्लोज हुआ है। बैंकिंग शेयरों की गिरावट ने शेयर बाजार को नीचे खींचने में साथ दिया है। इसके अलावा ऑटो और फार्मा शेयरों ने भी बाजार की गिरावट में अहम भूमिका निभाई है।सेंसेक्स के 30 में से केवल 6 शेयरों में ही तेजी के साथ कारोबार बंद हुआ है और इसके 24 शेयरों में जोरदार गिरावट के साथ कारोबार बंद हुआ है। इसके सबसे ज्यादा गिरने वाले शेयरों में एमएंडएम में 3.08 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। आईसीआईसीआई बैंक 2.81 फीसदी टूटकर बंद हुआ और एसबीआई 2.12 फीसदी की गिरावट के साथ क्लोज हुआ है। इंडसइंड बैंक में 2.02 फीसदी की कमजोरी रही और कोटक महिंद्रा बैंक 1.89 फीसदी नीचे क्लोज हुआ है।आज के कारोबार में निफ्टी के 50 में से 34 शेयरों में गिरावट के साथ कारोबार बंद हुआ है और 16 शेयर ही ऐसे रहे- जिनमें कुछ तेजी दर्ज की गई है। निफ्टी के टॉप लूजर्स में से एमएंडएम 2.88 फीसदी टूटकर बंद हुआ है। आईसीआईसीआई बैंक 2.81 फिसलकर बंद हुआ है और सिप्ला में 2.47 फीसदी की कमजोरी के साथ कारोबार बंद हुआ है। एसबीआई 2.20 फीसदी तो इंडसइंड बैंक 2.04 फीसदी की बड़ी गिरावट के साथ बंद हो पाए हैं।

चाइना के शहर शेनझेन में हुए इंटरनेशनल बिज़नेस एक्जीबिशन में हिंदुस्तान में अपनी पहचान बनाने वाली चारमीनार ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज ने अपना स्टॉल लगाया, जहां देश-विदेश के तमाम लोग आए और उनके प्रोडक्ट रोलर ब्रश हार्डवेयर आइटम की सराहना की। हाल ही में चारमीनार ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज ने अपना शेरकोटी स्प्रे पेंट मार्केट में उतारा था, जो हिंदुस्तान में पूरी तरह छाया हुआ है, जहां हमें विदेश से ब्रश रोलर का और कच्चे माल का इंपोर्ट करना पड़ता था। आज के समय में चारमीनार ग्रुप में सभी प्रोडक्ट्स की मैन्युफैक्चरिंग करके मेक इन इंडिया को बढ़ावा देते हुए काम कर रही है।

# दैनिक पंचांग

## ग्रह गोचर

| ग्रह स्थिति | | लग्नारंभ समय | |
|---|---|---|---|
| सूर्य- | कन्या में | सिंह... | 05-49 बजे |
| चंद्र- | वृश्चिक में | कन्या.. | 07-56 बजे |
| मंगल | कन्या में | तुला... | 10-04 बजे |
| बुध- | सिंह में | वृश्चिक. | 12-18 बजे |
| गुरु- | मेष में | धनु..... | 14-25 बजे |
| शुक्र- | कर्क में | मकर.. | 16-15 बजे |
| शनि- | कुंभ में | कुंभ... | 17-53 बजे |
| राहु- | मेष में | मीन... | 19-29 बजे |
| केतु- | तुला में | मेष-- | 21-14 बजे |
| | | वृष-- | 23-14 बजे |
| | | मिथुन. | 01-27 बजे |
| | | कर्क... | 03-39 बजे |

श्री पिंगल नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- **2080**
शक संवत् **-1945,** सूर्य - दक्षिणायने ,ऋतु- शरद
महावीर निर्वाण संवत् **-2549,** हिजरी सन् **-1444**
कलियुग अवधि-**432000** सूर्योदय- 06-08 सूर्य अस्त- 18-10
भोग्य कलि वर्ष-**426876**
कलियुग संवत् **-5124** वर्ष,
कल्पारंभ संवत् **-1972949124**
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-**1955885124**
दिशाशूल -- पश्चिम - दही खाकर घर से निकले
तिथि- सप्तमी - **13 -35** तक उपरान्त अष्टमी
मास - भाद्रपद शुक्ल पक्ष , शुक्रवार **22 September**
नक्षत्र - ज्येष्ठा - **15-34** -तक उपरान्त मूल
योग - आयुष्मान - **23 - 52** - तक उप सौभाग्य
करण- वणिज - **13 -35** - तक उप- विष्टि
विशेष:-
व्रत -त्योहार - भद्रा काल **-13-36** से

विशेष:- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश के लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

**राहुकाल 10:38 से 12:09 तक**

## श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

| दिन का चौघड़िया | | रात का चौघड़िया | |
|---|---|---|---|
| चंचल. | 06:08 - 07:37 शुभ | रोग | 18:10 - 19:41 अशुभ |
| लाभ | 07:37 - 09:07 शुभ | काल | 19:41 - 21:10 अशुभ |
| अमृत | 09:07 - 10:38 शुभ | लाभ | 21:10 - 22:40 शुभ |
| काल. | 10:38 - 12:09 अशुभ | उत्पात | 22:40 - 00:09 अशुभ |
| शुभ. | 12:09 - 13:40 शुभ | शुभ | 00:09 - 01:38 शुभ |
| रोग | 13:40 - 15:10 अशुभ | अमृत. | 01:38 - 03:08 शुभ |
| उत्पात | 15:10 - 16:41 अशुभ | चंचल. | 03:08 - 04:37 शुभ |
| चंचल | 16:41 - 18:10 शुभ | रोग | 04:37 - 06:08 अशुभ |

## आपका राशिफल

**मेष** चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,

आज के मनोरंजन में खेल गतिविधियाँ और आउटडोर कार्यक्रम शामिल होने चाहिए। हमारी आपको सलाह है कि शराब और सिगरेट पर पैसा खर्च करने से बचें। ऐसा करने से न सिर्फ आपकी सेहत खराब होगी बल्कि आपकी आर्थिक स्थिति भी खराब हो जाएगी। आज आप अपने आसपास के लोगों के व्यवहार से कुछ चिढ़े रहेंगे।

**वृष** ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,

रक्तचाप के मरीज़ अपने रक्तचाप को कम करने और कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रण में रखने के लिए रेड वाइन की मदद ले सकते हैं। इससे उन्हें और आराम मिलेगा. चंद्रमा की स्थिति के कारण आपका पैसा अनावश्यक चीजों पर खर्च हो सकता है। अगर आप धन संचय करना चाहते हैं तो इस बारे में अपने जीवनसाथी या माता-पिता से बात करें

**मिथुन** का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,

गर्भवती माँ को फर्श पर चलते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए और यदि संभव हो तो धूम्रपान करते समय किसी दोस्त के साथ न खड़ी हों क्योंकि इससे अजन्मे बच्चे पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। समझदारीपूर्ण निवेश से ही रिटर्न मिलेगा- इसलिए सुनिश्चित करें कि आपने अपनी मेहनत की कमाई कहां लगाई है।

**कर्क** ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,

आपके विनम्र व्यवहार की सराहना की जाएगी। कई लोग आपकी मौखिक प्रशंसा करेंगे. आर्थिक स्थिति में सुधार होने से आपके लिए ज़रूरी चीज़ें ख़रीदना सुविधाजनक हो जाएगा। अपने घर के माहौल में बदलाव करने से पहले सुनिश्चित करें कि आपको दूसरों की मंजूरी मिल गई है।

**सिंह** मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,

अपने आहार पर नियंत्रण रखें और फिट रहने के लिए व्यायाम करें। लंबी अवधि के लाभ के लिए स्टॉक और म्यूचुअल फंड में निवेश की सलाह दी जाती है। गुस्सा भड़कना अपरिहार्य है-लेकिन उन लोगों को ठेस पहुँचाने से रोकने के लिए अपनी ज़ुबान पर नियंत्रण रखें जो आपसे प्यार करते हैं और आपकी परवाह करते हैं।

**कन्या** टो, पा, पी, पू ,ष, ण, ठ, पे ,पो,

आपकी बीमारी दुःख का कारण बन सकती है। परिवार में ख़ुशियाँ बहाल करने के लिए आपको जल्द से जल्द इस पर काबू पाने की ज़रूरत है। सावधान रहें कि आप किसके साथ आर्थिक लेन-देन करते हैं। दोस्तों के साथ गतिविधियाँ आनंददायक रहेंगी- लेकिन स्वेच्छा से ख़र्च न करें- नहीं तो आप खाली जेब लेकर घर पहुँचेंगे

**तुला** रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,

अपना धैर्य बनाए रखें क्योंकि सामान्य ज्ञान और समझ के साथ आपका निरंतर प्रयास आपकी सफलता की गारंटी देगा। आपको आज आपके सामने प्रस्तुत निवेश योजनाओं पर दोबारा गौर करना चाहिए। आप दोस्तों के साथ बहुत अच्छा समय बिताएंगे लेकिन गाड़ी चलाते समय अतिरिक्त सावधानी बरतें।

**वृश्चिक** तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,

संकट में फंसे किसी व्यक्ति की मदद करने के लिए अपनी ऊर्जा का उपयोग करें। याद रखें- इस नाशवान शरीर का क्या फायदा अगर इसका उपयोग दूसरों के हित के लिए नहीं किया जाए। बैंक संबंधी कामकाज बहुत सावधानी से करने की जरूरत है। प्रभावशाली और महत्वपूर्ण लोगों के साथ आपके तालमेल को बेहतर बनाने के लिए सामाजिक कार्यक्रम उत्तम अवसर होंगे।

**धनु** ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे

आपका ईर्ष्यालु व्यवहार आपको दुखी और उदास कर सकता है। लेकिन यह खुद के द्वारा पहुंचाई गई चोट है इसलिए इस पर शोक मनाने की कोई जरूरत नहीं है।' दूसरों के सुख-दुख को साझा करके इससे छुटकारा पाने के लिए स्वयं को प्रेरित करें। आज सिर्फ बैठे रहने के बजाय, क्यों न किसी ऐसे काम में शामिल हो जाएं।

**मकर** भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी

लंबी बीमारियों को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए, इससे कुछ परेशानी हो सकती है। आज घर में कोई धार्मिक आयोजन होने की संभावना है। हालाँकि इससे आपको मानसिक शांति मिलेगी, लेकिन इस पर आपका काफी पैसा भी खर्च हो सकता है। जिस व्यक्ति की आप परवाह करते हैं उसके साथ संचार की कमी आपको उदास कर देगी।

**कुंभ** गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,

जीवन के प्रति उदार दृष्टिकोण विकसित करें। अपने रहन-सहन की स्थिति पर शिकायत करने और परेशान होने का कोई फायदा नहीं है। यह भिखारी सोच ही है जो जीवन की सुगंध को नष्ट कर देती है और संतुष्ट जीवन जीने की आशा को खत्म कर देती है। घर की जरूरी चीजों पर पैसा खर्च करने से आज आपको आर्थिक तंगी का सामना जरूर करना पड़ेगा।

**मीन** दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची

भीड़भाड़ वाली बस में यात्रा करते समय ब्लड प्रेशर के मरीजों को अपने स्वास्थ्य के प्रति अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। आज आपका किसी करीबी से झगड़ा हो सकता है और मामला कोर्ट-कचहरी तक पहुंच सकता है। इसकी वजह से आपकी मेहनत की कमाई खर्च हो जाएगी। हो सकता है कि आप अपने परिवार के सदस्यों की हर बात से सहमत न हों।

पं. महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

# निज्जर, जिसके लिए भारत से भिड़ा कनाडा

## क्या निज्जर की हत्या में रा का हाथ, कौन-कौन से सबूत सामने आए

ओटावा, 21 सितंबर (एक्सक्लूसिव डेस्क)। 18 जून 2023 की शाम। कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया स्थित गुरुद्वारा की पार्किंग। कार की ड्राइविंग सीट पर खालिस्तान टाइगर फोर्स का चीफ हरदीप सिंह निज्जर बैठा था। अचानक वहां लंबी कद काठी के दो युवक पहुंचे और ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। निज्जर की मौके पर ही मौत हो गई। निज्जर को भारत ने भगोड़ा घोषित कर रखा था और इस पर 10 लाख रुपए का ईनाम भी था।

3 महीने बाद यानी 18 सितंबर 2023 को कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने हाउस ऑफ कॉमन्स यानी वहां की संसद में एक बयान दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि जून में ब्रिटिश कोलंबिया में निज्जर की हत्या में भारत सरकार के एजेंट्स का हाथ हो सकता है। ट्रूडो का इशारा भारतीय खुफिया एजेंसी रॉ की तरफ था। वहीं इस आरोप को भारत सरकार ने खारिज करते हुए इसे बेतुका बताया है।

कौन है आतंकी निज्जर, जिसके नाम पर भारत से भिड़ा कनाडा; अब तक उसकी हत्या से जुड़े क्या-क्या सबूत सामने रखे हैं। इसकी पडताल करती रिपोर्ट।

**निज्जर की हत्या के बाद इन्वेस्टिगेशन की पूरी टाइमलाइन**

18 जून 2023 की शाम कनाडा की रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस यानी आरसीएमपी को ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत के सरे शहर में गुरु नानक सिख गुरुद्वारे में गोलीबारी की सूचना मिली। फर्स्ट रिस्पांडर ने एक व्यक्ति को देखा, जिसकी पहचान बाद में 45 साल के हरदीप सिंह निज्जर के रूप में हुई। निज्जर एक कार के अंदर था और उसे कई गोलियां लगी थीं। आरसीएमपी ने बताया कि निज्जर ने घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया था।

इंटीग्रेटेड होमिसाइड इन्वेस्टिगेशन टीम यानी आईएचआईटी ने इस मामले की इन्वेस्टिगेशन शुरू की। जांचकर्ताओं ने बताया कि भारी भरकम कद वाले दो युवकों ने हत्या की है। उन्होंने मास्क पहन रखा था। जांच में सामने आया कि निज्जर को गोली मारने के बाद हमलावर घटनास्थल से पैदल ही भागे थे। संभवतः नजदीक ही कोई वाहन उनका इंतजार कर रहा था। जुलाई में जांचकर्ताओं ने हत्या के बाद संदिग्धों के भागने के रूट की जानकारी दी। उस गाड़ी की भी पहचान कर ली गई, जिसमें संदिग्ध भागे थे। यह गाड़ी सिल्वर 2008 टोयोटा कैमरी थी। इसके अलावा एक तीसरे संदिग्ध की आशंका भी जताई गई, जो गाड़ी स्टार्ट करके इंतजार कर रहा था।

कनाडा के जांचकर्ताओं ने एक फोटो जारी की है। फोटो में सिल्वर रंग की 2008 टोयोटा कैमरी ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत के 128 स्ट्रीट और 72 एवेन्यू के चौराहे पर दिख रही है। पुलिस का दावा है कि हत्या करने के बाद हमलावर इसी गाड़ी से भागे थे। हत्या के बाद से ही खालिस्तानी तत्वों ने कहना शुरू किया कि निज्जर की हत्या में विदेशी हाथ हो सकता है। अफसर टिमोथी पिएरोटी ने शुरुआत जांच के दौरान कहा कि इस हत्या के मकसद के बारे में कई अटकलें हैं, लेकिन हम तथ्यों को जानने और सबूत जुटा रहे हैं। निज्जर की हत्या की जांच अभी चल ही रही है। इस बीच 18 सितंबर को कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने हाउस ऑफ कॉमन्स में कहा कि हमारे पास इस हत्या में भारतीय सरकारी एजेंटों के शामिल होने की विश्वसनीय सूचना है। कनाडा की विदेश मंत्री मेलिना जौली ने बाद में अधिक सतर्क भाषा का इस्तेमाल करते हुए कहा कि अगर सच साबित हुए तो आरोप अस्वीकार्य होंगे।

मेलेनी जोली ने शीर्ष भारतीय राजनयिक पवन कुमार राय को देश से निकालने का ऐलान कर दिया। हालांकि, इस दौरान न तो कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो ने और न ही विदेश मंत्री मेलिना जौली ने भारत और खुफिया एजेंसी रॉ के खिलाफ कोई सबूत दिए।

कनाडा सरकार ने अपने देश के नेताओं को भी कोई सबूत नहीं दिए। कनाडा में विपक्षी कंजर्वेटिव पार्टी के नेता पिएरे पोलिवियरे ने कहा कि मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री ट्रूडो को सभी तथ्यों के साथ सामने आने की जरूरत है। हमें सभी संभावित सबूतों को जानने की जरूरत है, ताकि कनाडा के नागरिक इस पर फैसला ले सकें। उन्होंने कहा कि ट्रूडो ने कोई भी तथ्य सामने नहीं रखे हैं, उन्होंने सिर्फ एक बयान दिया है। उन्होंने कनाडा के लोगों

को सार्वजनिक रूप से जितना बताया है, उससे अधिक उन्होंने मुझे निजी तौर पर नहीं बताया। इसलिए हम और अधिक जानकारी जानना चाहते हैं।

भारतीय विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि कनाडा के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री ने जो बयान दिए हैं, हम उन्हें सिरे से खारिज करते हैं। कनाडा में हिंसा के किसी भी कृत्य में भारत सरकार की भागीदारी के आरोप बेतुके और प्रेरित हैं।

विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत कानून के शासन में यकीन रखता है। कनाडा को अपने घर में झांकने की नसीहत देते हुए भारत ने कहा कि वहां खालिस्तानी आतंकियों और चरमपंथियों का दबदबा बढ़ता ही जा रहा है। इससे भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए बड़ा खतरा पैदा हुआ है।

**कौन था हरदीप सिंह निज्जर**

पंजाब के जालंधर जिले में एक गांव है भार सिंह पूरा। 11 अक्टूबर 1977 को यहीं पर हरदीप सिंह निज्जर का जन्म हुआ। 1984 में निज्जर सिर्फ 7 साल का था, जब देश में दो बड़ी घटनाएं हुई।

1. ऑपरेशन ब्लू स्टार
2. इंदिरा गांधी की हत्या।

इन दोनों ही घटनाओं का असर पंजाब के हर गांव तक पहुंचा। इस समय राज्य में खालिस्तान आंदोलन चरम पर था। 12 से 15 साल के लड़के खालिस्तान आंदोलन से जुड़ रहे थे। इसी उम्र में हरदीप सिंह निज्जर भी इससे जुड़ गया।

जल्द ही निज्जर की पहचान चरमपंथी संगठन खालिस्तान टाइगर फोर्स यानी केटीएफ के एक एक्टिव मेंबर के रूप में होने लगी। धीरे-धीरे वह इस संगठन का मास्टर माइंड बन गया था। 1995 में पंजाब पुलिस पूरे राज्य में खालिस्तानी उग्रवादियों के खिलाफ ऑपरेशन चला रही थी। इस समय निज्जर की भी गिरफ्तारी हुई।

जेल से निकलते ही वह कनाडा भागने की तैयारी में लग गया। कनाडा के अखबार टोरंटो सन की रिपोर्ट के मुताबिक 1997 में भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के टारगेट पर आने के बाद निज्जर ने देश छोड़ा। 9 जून 1998 को अपने इमिग्रेशन आवेदन में निज्जर ने अपने कनाडा पहुंचने के बारे में बताया है।

निज्जर ने आवेदन में बताया कि भारत में गिरफ्तारी के बाद पूछताछ के दौरान उसके साथ मारपीट हुई और उसे प्रताड़ित किया गया। इसके बाद मौका मिलते ही रवि शर्मा के नाम से एक फर्जी पासपोर्ट के सहारे वह कनाडा पहुंच गया। निज्जर के दोस्त और खालिस्तान के समर्थक गुरप्रीत सिंह पन्नू ने एक इंटरव्यू में बताया था कि शुरुआत में निज्जर के आवेदन को खारिज कर दिया गया।

इसके ठीक 11 दिन बाद निज्जर ने कनाडा की महिला से शादी कर ली। इसके बाद उसकी पत्नी ने निज्जर के वीजा के लिए आवेदन किया। इस आवेदन में पूछा गया था कि क्या वह किसी सशस्त्र संघर्ष या हिंसा से जुड़े रहने वाले राजनीतिक, धार्मिक या सामाजिक संगठनों का हिस्सा रहा है? जवाब में उसकी पत्नी ने नहीं लिखा था। हालांकि, इस बार भी उसके आवेदन को रिजेक्ट कर दिया गया। कनाडा की नागरिकता पाने के लिए निज्जर ने वहां की अदालतों का रुख किया, लेकिन 2001 में कोर्ट ने भी उनकी अपील को खारिज कर दिया। हालांकि, बाद में निज्जर को नागरिकता कैसे मिली, इसकी जानकारी सार्वजनिक नहीं है।

कनाडा के इमिग्रेशन मंत्री मार्क मिलर ने सिर्फ इतना बताया कि 3 मार्च 2015 को निज्जर कनाडा का नागरिक बना। ऐसा कहा जाता है कि शुरुआती दौर में निज्जर कनाडा में प्लंबर का काम करता था। उसकी दिलचस्पी खालिस्तानी गतिविधियों में ज्यादा थी।

इसकी वजह से उसने कनाडा में सिख अलगाववादी संगठन 'सिख फॉर जस्टिस' यानी एसजेएफ जॉइन कर लिया। देखते ही देखते निज्जर कनाडा में गुरपतवंत सिंह पन्नू के बाद एसजेएफ का दूसरे नंबर का नेता बन गया। इसके बाद वह कनाडा के सरे शहर स्थित गुरु नानक सिख गुरुद्वारे का अध्यक्ष बन गया था। 2022 में कनाडा समेत दुनिया के कई देशो में खालिस्तान को लेकर होने वाले जनमत संग्रह के लिए निज्जर ने दर्जनों देशों का दौरा किया था। वह लंबे समय से ऑपरेशन ब्लू स्टार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नरसंहार का दर्जा दिलाने की मांग कर रहा था।

2014 में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के कुछ महीनों बाद ही भारत सरकार ने निज्जर की गिरफ्तारी के लिए वारंट जारी किया। भारत सरकार ने निज्जर को आतंकवादी समूह खालिस्तान टाइगर फोर्स का मास्टरमाइंड बताया था। 2007 में पंजाब के एक सिनेमाघर में हुए बम धमाके केस में भी निज्जर को आरोपी बनाया गया था। उसके खिलाफ 2016 के इंटरपोल नोटिस में आरोप लगाया गया था कि वह इस हमले में एक प्रमुख साजिशकर्ता था।

सितंबर 2020 में केंद्रीय गृह मंत्रालय ने निज्जर को आतंकी घोषित कर दिया। इसके बाद निज्जर की जालंधर के भारसिंहपुरा गांव की प्रॉपर्टी भी कुर्क कर ली गई।

एनआईए ने 31 जनवरी 2021 को पंजाब के जालंधर में हिंदू पुजारी कमलदीप शर्मा की हत्या से जुड़े केस में निज्जर समेत चार लोगों के खिलाफ चार्जशीट दायर की थी। चार्जशीट किए गए तीन अन्य लोगों में कमलजीत शर्मा और राम सिंह शामिल हैं, जिन्होंने निज्जर व उसके सहयोगी अर्शदीप सिंह उर्फ प्रभा के निर्देश पर पुजारी को गोलियां मारी थीं। इस हत्याकांड के जरिए निज्जर पंजाब का माहौल खराब करने की फिराक में था। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 7 महीने पहले निज्जर के संगठन केटीएफ को आतंकी संगठन करार दिया था। गृह मंत्रालय ने कहा था- खालिस्तान टाइगर फोर्स कट्टरपंथी संगठन है जिसका मकसद पंजाब में फिर आतंकवाद फैलाना है। पंजाब में टारगेट किलिंग के पीछे भी इस संगठन का हाथ है। ये संगठन भारत की क्षेत्रीय अखंडता, एकता, राष्ट्रीय सुरक्षा और संप्रभुता को चुनौती देता है। भारत की राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने हाल में 40 मोस्ट वांटेड आतंकियों की जो लिस्ट जारी की थी, उसमें निज्जर का नाम था।

# मोदी ने 8-8 हजार करोड़ में दो प्लेन खरीदे

## प्रियंका बोलीं- उनके उद्योगपति दोस्त करोड़ों कमा रहे, किसान एक दिन में 27 रुपए कमाता है

भिलाई, 21 सितंबर (एजेंसियां)। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी ने भिलाई के जयंती स्टेडियम में आयोजित राज्य स्तरीय महिला समृद्धि सम्मेलन में महंगाई, बेरोजगारी के मुद्दे पर प्रधानमंत्री मोदी पर जमकर निशाना साधा। प्रियंका बोलीं- देश के किसान एक दिन में 27 रुपए कमा रहे हैं, तो पीएम के उद्योगपति दोस्त करोड़ों कमा रहे हैं। इससे पहले प्रियंका ने वहां मौजूद स्व सहायता समूह की महिलाओं के साथ सेल्फी ली। प्रियंका को अपने बीच पाकर महिलाएं खुश नजर आईं। उन्होंने सुआ नाच के साथ लट्टू पर भी हाथ आजमाया।

**प्रियंका के भाषण की बड़ी बातें**

बचपन में मैंने गिल्ली डंडा, पिट्ठुल, कंचे सब खेला आज याददाश्त ताजा हो गईं। यहां की महिलाएं आत्मविश्वास से भरीं हैं।

2700 करोड़ रुपए, नए संसद भवन बनाने में खर्च किया।

8-8 हजार करोड़ में पीएम ने दो हवाई जहाज खरीदे हैं।

मोदी के उद्योगपति दोस्त करोड़ों कमा रहे, किसान एक दिन में 27 रुपए कमाता है।

छत्तीसगढ़ सरकार ने एक-एक पैसा आपके जेब में डाला।

यहां की सरकार पुरानी राजनीति पर चल रही है।

जाति और सांप्रदायिकता के हिसाब से जो वोट मांगते हैं। उन्हें जवाब दीजिए।

गैस सिलेंडर और तेल की कीमतें इतनी बढ़ गई है कि गरीब पिस रहा है। छग सरकार ने आपकी राहत और मदद के लिए बहुत कार्य किए हैं।

आज प्रदेश का किसान खुश है। खेती उनके आय का जरिया बन गया है। छग में खेती करने वाले किसान बढ़ रहे हैं। बाकी सभी जगह किसान त्रस्त है।

न्याय योजना के तहत किसानों को सबसे अधिक धान की कीमत मिल रही है। आज छग का नाम देश भर में जाना जाता है। प्रदेश का सम्मान हर रोज बढ़ रहा है।

पीएम यहां आकर धान खरीदी का श्रेय लेते हैं। यूपी में कम कीमत में धान क्यों खरीद रहे हैं।

मंच पर प्रियंका के साथ प्रदेश प्रभारी कुमारी सैलजा, सीएम भूपेश, टीएस सिंहदेव, पीसीसी चीफ बैज के साथ कई कांग्रेस नेता मौजूद हैं। मौसम खराब होने के चलते वे सड़क रास्ते से होकर भिलाई पहुंची हैं। इस साल का यह तीसरा दौरा है। प्रदेश भर से जुटे कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ काफी संख्या में लोगों की भीड़ मौजूद है।

**मुख्यमंत्री के भाषण की बड़ी बातें**

'छत्तीसगढ़ महतारी सांस्कृति संवर्धन योजना' का ऐलान।

योजना के तहत सांस्कृतिक, पर्यटन और ऐतिहासिक केंद्रों को संवारा जाएगा।

हम हर तीन महीने में किसानों को पैसा दे रहे हैं।

# 33% महिला आरक्षण बिल से बढ़ेगी महिलाओं की ताकत

## इस चुनाव में लागू नहीं होगा फॉर्मूला, छत्तीसगढ़ में टिकट बंटवारे में दिख सकता है असर

रायपुर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। लोकसभा में 128वां संविधान संशोधन बिल यानी नारी शक्ति वंदन विधेयक बुधवार को एक तिहाई बहुमत के साथ लोकसभा में पास हो गया है। बिल के समर्थन में 454 और विरोध में 2 वोट पड़े। जिसमें लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण का प्रावधान किया गया है।

हालांकि इस साल छत्तीसगढ़ समेत 5 राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव में ये फॉर्मूला लागू नहीं होगा। लेकिन टिकट बंटवारे में इसका असर दिख सकता है। जानकारी के मुताबिक 33% महिला आरक्षण के संविधान संशोधन विधेयक आज राज्यसभा में पेश किया जाएगा, जिसके पास होने के लिए दो-तिहाई बहुमत जरूरी होगा। परिसीमन के बाद ही ये बिल देश में लागू होगा, वहीं विधेयक पारित होने के बाद जो भी पहली जनगणना होगी, उसके आधार पर परिसीमन होगा। छत्तीसगढ़ विधानसभा में 90 विधानसभा सीटें

हैं। 33% आरक्षण मिलने के बाद महिलाओं के लिए इनमें से 30 सीटें आरक्षित हो सकती हैं। ऐसे में सभी राजनीतिक दलों को कम से कम 30 महिला प्रत्याशियों को टिकट देना जरूरी होगा। जिससे विधानसभा में महिला विधायकों की संख्या बढ़ जाएगी। छत्तीसगढ़ की पहली विधानसभा में 90 में से 6 सीटों पर महिला विधायक थीं। वहीं, दूसरी विधानसभा में भी 6 महिला विधायक जीत कर आई थीं। इसके बाद तीसरी विधानसभा में ये आंकड़ा दोगुना हो गया। इस दौरान 90 में से कुल 12 सीटों पर महिला विधायकों ने जीत हासिल की। चौथी विधानसभा की बात की जाए तो इस दौरान 90 में से 10 सीटों पर महिला विधायक जीतकर आईं। प्रदेश की पांचवी विधानसभा में 90 में से 16 सीटों पर महिला विधायक हैं। जो अब तक का सबसे बड़ा आंकड़ा है।

वर्तमान में छत्तीसगढ़ विधानसभा में महिला विधायकों की संख्या 16 है, जिनमें कांग्रेस की 13, बीजेपी की 1, बीएसपी की 1 और जेसीसीजे की 1 विधायक है। इनमें से कांग्रेस की 3 विधायक उपचुनाव जीतकर पहुंचीं हैं। 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने 13 महिलाओं को टिकट दी थी। जिनमें से केवल एक ही महिला प्रत्याशी को जीत हासिल हुई। धमतरी से रंजना साहू ने कांग्रेस के गुरुमुख सिंह होरा को शिकस्त दी। बाकी 12 महिला प्रत्याशियों को हार का सामना करना पड़ा। इनमें पूर्व मंत्री लता उसेंडी भी शामिल थीं। 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की 10 महिला प्रत्याशियों ने जीत हासिल की थी। जबकि दंतेवाड़ा सीट से देवती कर्मा और राजनांदगांव से करुणा शुक्ला को हार का सामना करना पड़ा था। इसी चुनाव में कसडोल से कांग्रेस की प्रत्याशी रही शकुंतला साहू ने तत्कालीन विधानसभा स्पीकर गौरीशंकर अग्रवाल को बड़े अंतर से हराया था।

2018 के विधानसभा चुनाव के बाद प्रदेश में 5 उपचुनाव हुए। पहला दंतेवाड़ा, दूसरा चित्रकोट, तीसरा मरवाही, चौथा खैरागढ़ और पांचवा उपचुनाव भानुप्रतापपुर सीट पर हुआ।

# 24 सितंबर को झारखंड को मिलेगी दूसरी वंदे भारत ट्रेन

## रांची से रवाना होगी आठ कोच वाली ट्रेन, बोर्ड को भेजी गई दो समय सारणी

रांची, 21 सितंबर (एजेंसियां)। रांची से चलकर हावड़ा को जाने वाली वंदे भारत ट्रेन के शुरू होने की तारीख तय हो गई है। 24 सितंबर को रांची-हावड़ा वंदे भारत ट्रेन राजधानी रांची से खुलेगी। इस ट्रेन को देश के अन्य नौ नई वंदे भारत ट्रेन के साथ हरी झंडी दिखाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रवाना करेंगे। इसकी तैयारियां लगभग पूरी हो गई हैं। जानकारी के मुताबिक इस ट्रेन के रास्ते भी तय हो चुके हैं। चेन्नई कोच फैक्टरी से दक्षिण-पूर्व रेलवे को इस ट्रेन के लिए आठ रैक मिल चुके हैं। ट्रेन के परिचालन के संबंध में महाप्रबंधक अनिल कुमार मिश्रा की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार रांची-हावड़ा वंदे भारत ट्रेन की शुरुआत रांची रेलवे स्टेशन की जाएगी। रांची से ट्रेन खुलकर मुरी, झालदा, पुरुलिया, चांडिल, टाटानगर, घाटशिला, झाड़ग्राम व खड़गपुर होते हुए हावड़ा जायेगी। पहले दिन ट्रेन का ट्रायल दोपहर 12:45 बजे होगा। प्राप्त जानकारी के अनुसार यह ट्रेन नियमित रूप से किस समय पर चलेगी, यह तय नहीं हो सका है। दक्षिण-पूर्व रेलवे की ओर से इस ट्रेन के परिचालन को लेकर टाइमिंग तय नहीं हुई है। हालांकि इसके लिए दो समय सारणी रेलवे बोर्ड को भेजी गई है। रेलवे सूत्रों के मुताबिक जो समय सारिणी बोर्ड को भेजी गई है, उस पर विचार किया जा रहा है।

बोर्ड रांची से हावड़ा और हावड़ा से रांची दोनों ओर से ट्रेन के समय निर्धारित करने पर विचार कर रहा है। बोर्ड को भेजी गई पहली समय सारिणी के अनुसार, ट्रेन के हावड़ा से रवाना होने का समय सुबह आठ बजे और रांची पहुंचने का समय दोपहर 12:55 बजे निर्धारित किया गया है। वहीं, वापसी में ट्रेन को दोपहर 3:20 बजे रांची से रवाना करने और रात 8:10 बजे हावड़ा पहुंचने का प्रस्ताव दिया गया है। दूसरी समय सारिणी के अनुसार, ट्रेन सुबह 5:20 बजे रांची से रवाना होगी और सुबह 11:55 बजे हावड़ा पहुंचेगी।

# अगले तीन दिन होगी बारिश

रांची, 21 सितंबर (एजेंसियां)। झारखंड के कई जिलों में हल्की-हल्की बारिश हो रही है। राजधानी रांची में भी सुबह से आसमान में काले बादलों का डेरा है। मौसम विभाग ने अगले तीन दिनों तक राज्य में बारिश और वज्रपात की संभावना जाहिर की है। इसे लेकर मौसम विभाग ने येलो अलर्ट भी जारी किया है। मौसम विभाग ने अधिकतम तापमान में किसी बड़े बदलाव की संभावना जाहिर नहीं की है। राज्य में 26 सितंबर तक मौसम का मिजाज ऐसा ही बने रहने की संभावना है।

मौसम विभाग ने राज्य में किसी बड़े बदलाव की संभावना जाहिर नहीं की है लेकिन उम्मीद है कि अधिकतम तापमान में 3 से 4 डिग्री की गिरावट आ सकती है। राज्य में आज 21 सितंबर को को राज्य के कई इलाकों में हल्की गरज के साथ बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों में राज्य के चतरा, हजारीबाग, लातेहार, लोहरदगा और रांची के कुछ इलाकों में हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश की संभावना जाहिर की है। इसे लेकर मौसम विभाग ने लोगों को सुरक्षित रहने। बिजले के खंभों से दूर रहने की भी सलाह दी है। किसानों के लिए कहा है कि जब तक मौसम साफ नहीं हो जाता है तबतक किसान अपने खेत में जाने से बचें। अगले कुछ घंटों में जिन इलाकों में बारिश की संभावना जाहिर की गयी है उनमें बोकारो, चतरा, हजारीबाग, कोडरमा, रामगढ़ भी शामिल है।

# आज से हड़ताल पर जा सकते हैं राज्य के डॉक्टर

## 12 हजार चिकित्सक सेवा करेंगे ठप, इमरजेंसी रहेगी चालू

रांची, 21 सितंबर (एजेंसियां)। झारखंड के सरकारी अस्पताल और निजी सेवा दे रहे चिकित्सक कल से हड़ताल पर जा सकते हैं। ऐसे 12 हजार चिकित्सक हैं, जो इलाज नहीं करेंगे। इस बात का निर्णय आईएमए की ओर से लिया गया है। डॉक्टर्स जमशेदपुर मेडिकल कॉलेज में हुए डॉक्टर्स से मारपीट के विरोध और मेडिकल प्रोटेक्शन बिल के प्रति सरकार के शिथिल रवैये को लेकर यह निर्णय लिया है। दरअसल 19 सितंबर को जमशेदपुर मेडिकल कॉलेज के पीआईसीयू वार्ड में कार्यरत पीजी मेडिकल के छात्र डॉ कमलेश उरांव के साथ मारपीट हुई थी। जिसके विरोध में डॉक्टर्स यह निर्णय ले रहे हैं। झारखंड प्रदेश आईएमए के सचिव डॉ प्रदीप सिंह का कहना है कि आए दिन डॉक्टरों के साथ इलाज में कोताही बरतने का आरोप लगा कर मारपीट हो रही है। एमजीएम में भी यही हुआ। अब डॉक्टरों के साथ हो रही मारपीट की घटना बर्दाश्त नहीं की जाएगी। डॉ कमलेश के साथ की गई मारपीट में शामिल लोगों को पुलिस गुरुवार तक गिरफ्तार नहीं करती है तो डॉक्टर्स हड़ताल पर चले जाएंगे। इस हड़ताल का झारखंड राज्य स्वास्थ्य सेवा संघ (झासा), जूनियर डॉक्टर्स एसोसिएशन एवं निजी डॉक्टर समर्थन कर रहे हैं। दरअसल 19 सितंबर की रात जमशेदपुर मेडिकल कॉलेज के पीआईसीयू वार्ड में एक बच्ची का इलाज चल रहा था। उस बच्ची की देर रात दो बजे के करीब मौत हो गई। यहां पीजी मेडिकल के छात्र डॉ कमलेश उरांव ड्यूटी कर रहे थे। बच्ची की मौत की वजह डॉक्टरों का इलाज में लापरवाही बरते जाने की बात कह परिजनों सहित अन्य लोगों ने डॉक्टर के साथ मारपीट की। डॉक्टर का आरोप है कि आक्रोशित परिजनों और अन्य लोगों ने चिकित्सक के कक्ष में घुसकर हमला किया। जिसका वीडियो भी जारी किया गया है। आईएमए के सचिव डॉ प्रदीप सिंह का कहना है कि 21 सितंबर तक पुलिस आरोपियों को गिरफ्तार नहीं करती है, तो 22 सितंबर से झारखंड भर के 12 हजार से अधिक डॉक्टर इलाज नहीं करेंगे।

# बाइक की किस्त जमा करने के लिए नौकर ने अपने पास रख लिए रुपये

सक्ती, 21 सितंबर (एजेंसियां)। सक्ती जिले के डभरा थाना क्षेत्र में लूट की झूठी कहानी रच कर पुलिस को गुमराह करने के मामले में आरोपी चंद्रप्रकाश सिदार को डभरा थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी ने गाड़ी की किस्त जमा करने के लिए यह साजिश रची थी। उसने पुलिस को बताया था कि पुटीडीह नाला के पास दो लोगों ने चेहरे पर मास्कर लगाकर तमंचे की नोक पर 1 लाख 97 हजार रुपये लूट लिए। एएसपी गायत्री सिंह ने बताया कि विक्रम अग्रवाल ने रिपोर्ट दर्ज करायी थी, जिसमें उन्होंने बताया था कि उसके यहां कुसुमझर गांव का रहने वाला चंद्रप्रकाश सिदार काम करता है। विक्रम ने उसे काबली इंडियन गैस एजेंसी का बिक्री पैसा लेने के लिए भेजा हुआ था। कुछ देर बाद चंद्रप्रकाश ने दूसरे फोन से कॉल करके बताया कि पुटीडीह के पास चेहरे पर मास्क लगाकर आए दो लोगों ने तमंचा दिखाकर 1 लाख 97 हजार रुपये लूट लिए। साथ ही फोन और बाइक की चाभी भी छीन ली। सूचना के बाद पुलिस ने घटनास्थल के आसपास के सीसीटीवी फुटेज की जांच की। कड़ाई से पूछताछ करने पर चंद्रप्रकाश ने बताया कि उसे गाड़ी की किस्त जमा करनी थी, इसलिए उसने लूट की झूठी कहानी रची थी। पुलिस ने आरोपी चंद्रप्रकाश सिदार के निशान देही पर 1 लाख 97 हजार रुपये बरामद किए और मोबाइल व मोटरसाइकिल की चाभी को खेत में फेकना बताया गया।

# स्टील कारोबारी पर आईटी का छापा

रायपुर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में एक बार फिर इनकम टैक्स विभाग का छापा पड़ा है। गुरुवार सुबह आयकर विभाग की टीम ने राजधानी रायपुर के स्वर्ण भूमि कॉलोनी में रहने वाले स्टील कारोबारी के घर छापा मारा है। फिलहाल वहां पर कार्रवाई जारी है। आयकर विभाग की टीम कारोबारी के घर के साथ ही उसकी फैक्ट्री पर भी दबिश देकर दस्तावेज खंगाल रही है। इसके अलावा एक टीम ने ओडिशा में भी छापा मारा है। बताया जा रहा है कि वहां कारोबारी के पार्टनरों पर जांच चल रही है। आयकर विभाग की इस कार्रवाई में छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के अधिकारी शामिल हैं। इससे पहले भी जुलाई ने आईटी की बड़ी कार्रवाई हुई थी। जिसमें छत्तीसगढ़ के कोयला और स्टील उद्योग से जुड़े कारोबारियों के ठिकानों पर छाप मारा था। जिसमें आयकर से संबंधित बड़ी गड़बड़ियां सामने आई थीं। राकेश अग्रवाल लक्ष्मी कृपा स्टील के संचालक हैं। जिनके स्वर्णभूमि स्थित घर समेत फैक्ट्री और कई ठिकानों पर आयकर की टीमों ने दबिश दी है। बताया जा रहा है कि, इनके 4 से 5 पार्टनर्स के छत्तीसगढ़ समेत ओडिशा स्थित ठिकानों पर भी दबिश देकर वहां भी दस्तावेज खंगाले जा रहे हैं।

# यूक्रेन को हथियार नहीं देगा पोलैंड

## जेलेंस्की बोले- कुछ देश साथ देने का सिर्फ दिखावा कर रहे, दोनों देशों में अनाज एक्सपोर्ट पर विवाद

मास्को, 21 सितंबर (एजेंसियां)। रूस-यूक्रेन जंग में यूक्रेन के सबसे बड़े साथी पोलैंड ने उसे हथियार सप्लाई न करने की घोषणा की है। पोलैंड के प्रधानमंत्री ने कहा है कि वो यूक्रेन को हथियार देने की जगह अपने देश में ज्यादा मॉडर्न और एडवांस वेपेन जुटाने पर फोकस करेंगे। दरअसल पोलैंड और यूक्रेन में अनाज के एक्सपोर्ट को लेकर तनाव बढ़ता जा रहा है।

बीबीसी के मुताबिक, मंगलवार को यूएन में जेलेंस्की ने बिना नाम लिए पोलैंड पर तंज कसा था। उन्होंने कहा था कुछ देश दुनिया के सामने यूक्रेन का साथ देने का दिखावा करते हैं। पोलैंड ने जेलेंस्की के इस आरोप को खारिज करते हुए कहा था कि उन्होंने जंग के पहले दिन से यूक्रेन का साथ दिया है।

**यूक्रेन-पोलैंड के बीच अनाज एक्सपोर्ट पर विवाद क्यों हैं**

दरअसल, अनाज को लेकर ये विवाद तब शुरू हुआ जब रूस के साथ जंग की वजह से ब्लैक सी के जरिए अनाज एक्सपोर्ट के रास्ते को बंद करना पड़ा।

इसके बाद यूक्रेन का अनाज दुनियाभर के कई देशों में न जाकर सेंट्रल यूरोप के मुल्कों में रह गया।

इसकी वजह से यूरोप के कई देशों के किसान परेशान हो गए, क्योंकि यूक्रेन से अनाज आने की वजह से उनके अपनी फसल की कीमत बेहद कम हो गई।

इसे देखते हुए यूरोपियन यूनियन ने बुल्गारिया, हंगरी, पोलैंड, रोमानिया और स्लोवाकिया में अनाज के इम्पोर्ट पर बैन लगा दिया।

ये बान 15 सितंबर को खत्म हो गया था। हालांकि, किसानों के हित में फैसला लेते हुए पोलैंड, हंगरी और स्लोवाकिया ने ये पाबंदियां जारी रखीं। इससे यूक्रेन का अनाज बर्बाद होने लगा।

**यूक्रेन ने पोलैंड के खिलाफ डब्ल्यूटीओ में केस किया**

इस हफ्ते की शुरुआत में यूक्रेन ने वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन में इन देशों की तरफ से लगाए गए बैन के खिलाफ केस दर्ज करवाया। उसने पोलैंड सहित बाकी दोनों देशों पर अंतरराष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। यूक्रेन की इकोनॉमी मिनिस्टर ने कहा- ये बेहद जरूरी है कि हम ये साबित करें कि कुछ देश अकेले यूक्रेनी सामान के इम्पोर्ट पर बैन नहीं लगा सकते हैं। हालांकि, डब्ल्यूटीओ में यूक्रेन के केस का पोलैंड ने विरोध करते हुए बैन जारी रखने की घोषणा की। साथ ही पोलैंड के पीएम ने कहा- अगर यूक्रेन ने इस मामले को ज्यादा बढ़ाया तो हम वहां से आ रहे दूसरे सामानों पर भी पाबंदियां लगा देंगे। पोलैंड की विदेश मंत्री ने कहा- अंतरराष्ट्रीय फोरम के जरिए पोलैंड पर दबाव बनाना 2 देशों के बीच में मसला सुलझाने का सही तरीका नहीं है।

**जंग की शुरुआत से यूक्रेन का साथ देता रहा है पोलैंड**

पोलैंड, स्लोवाकिया और हंगरी ने पाबंदी के बावजूद अपने देशों के रास्ते दूसरे मार्केट में यूक्रेनी अनाज के एक्सपोर्ट की इजाजत दे रखी है। पौलैंड जंग की शुरुआत से यूक्रेन का साथ देता आया है और उसने अलग-अलग मौकों पर हमले के लिए रूस की निंदा की है।

पोलैंड ने ही सबसे पहले यूक्रेन को फाइटर जेट देने की घोषणा की थी। यही वो देश है जिसने जर्मनी से यूक्रेन को लेपर्ड 2 बैटल टैंक देने की अपील की थी। इसके अलावा जंग के बाद से पोलैंड अब तक यूक्रेन के करीब 15 लाख लोगों को पनाह दे चुका है। यूक्रेन जाने वाले अलग-अलग वर्ल्ड लीडर्स भी अक्सर पोलैंड होकर ही अपनी यात्रा करते हैं।

इसके अलावा पोलैंड नाटो संगठन का भी मेंबर है। यूक्रेन लंबे समय से इस संगठन में शामिल होने की कोशिश करता रहा है। इसका रूस और पुतिन ने सीधे तौर पर विरोध किया है।

**रूस-यूक्रेन विवाद की वजह बना नाटो**

1991 में सोवियत संघ के 15 हिस्सों में टूटने के बाद नाटो ने खासतौर पर यूरोप और सोवियत संघ का हिस्सा रहे देशों के बीच तेजी से प्रसार किया।

2004 में नाटो से सोवियत संघ का हिस्सा रहे तीन देश- लातविया, एस्तोनिया और लिथुआनिया जुड़े, ये तीनों ही देश रूस के सीमावर्ती देश हैं।

पोलैंड (1999), रोमानिया (2004) और बुल्गारिया (2004) जैसे यूरोपीय देश भी नाटो के सदस्य बन चुके हैं। ये सभी देश रूस के आसपास हैं। इनके और रूस के बीच सिर्फ यूक्रेन पड़ता है।

यूक्रेन कई साल से नाटो से जुड़ने की कोशिश करता रहा है। उसकी हालिया कोशिश की वजह से ही रूस ने यूक्रेन पर हमला किया है।

यूक्रेन की रूस के साथ 2200 किमी से ज्यादा लंबी सीमा है। रूस का मानना है कि अगर यूक्रेन नाटो से जुड़ता है तो नाटो सेनाएं यूक्रेन के बहाने रूसी सीमा तक पहुंच जाएंगी।

# सऊदी क्राउन प्रिंस बोले- इजराइल से रिश्ते सुधारने के करीब

## कहा- ईरान ने परमाणु हथियार हासिल किए तो हम भी पीछे नहीं रहेंगे

रियाद, 21 सितंबर (एजेंसियां)। सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने कहा है कि वो इजराइल के साथ रिश्ते सामान्य करने के बेहद करीब हैं। फॉक्स न्यूज के साथ एक इंटरव्यू में एमबीएस ने कहा- अगर ईरान परमाणु हथियार हासिल करता है तो सऊदी भी अपनी सुरक्षा के लिए ऐसा करने से पीछे नहीं हटेगा।

क्राउन प्रिंस ने उन रिपोर्ट्स को भी खारिज कर दिया, जिसमें कहा गया था कि फिलिस्तीन के मुद्दे को लेकर सऊदी अरब ने इजराइल के साथ रिश्ते सुधारने की बातचीत को रोक दिया है। हालांकि, एमबीएस ने कहा- हमारे लिए ये मुद्दा बेहद अहम है। इस मसले को सुलझाना बहुत जरूरी है, जिससे फिलिस्तीनियों का जीवन आसान हो सके।

सऊदी अरब ने हाल ही में एक नया मैप जारी किया था। इसमें इजराइल को कोई जगह नहीं दी गई थी। इजराइल इस नक्शे में फिलिस्तीन का हिस्सा बताया गया था। सऊदी सरकार के एक अफसर ने कहा था- हमने वही जानकारी दी है जो हमारे देश और सरकार का रुख है। इसके जरिए ही हम अपनी स्ट्रैटेजी और प्लानिंग को अंजाम देंगे।

27 जुलाई को वॉशिंगटन पोस्ट ने एक रिपोर्ट में बताया था कि अमेरिकी एनएसए जैक सुलिवन अचानक सऊदी अरब पहुंचे हैं। उन्होंने राजधानी रियाद में सऊदी क्राउन प्रिंस और प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन सलमान (एमबीएस) से मुलाकात की है। दोनों के बीच चार राउंड बातचीत हुई। इस मीटिंग में सऊदी के तमाम टॉप ऑफिशियल्स भी मौजूद थे।

अमेरिकी न्यूज वेबसाइट एक्सिओस के मुताबिक- इस मीटिंग का सिर्फ एक एजेंडा था कि सऊदी अरब को अब्राहम अकॉर्ड में शामिल किया जाए। इसी अकॉर्ड के तहत यूएई और बहरीन समेत चार गल्फ कंट्रीज ने इजराइल को मान्यता दी थी और अब इन देशों को इजराइल की तरफ से बेहतरीन टेक्नोलॉजी और हथियार तक मिल रहे हैं। इजराइल और इन देशों के बीच ट्रेड रिलेशन भी काफी मजबूत हुए हैं। बहरहाल, मोसाद चीफ और अमेरिकी एनएसए की मीटिंग में बाइडेन एडमिनिस्ट्रेशन के मिडिल ईस्ट ऐंबैस्डर ब्रेट मैक्गुर्क और दूसरे तमाम आला अफसर मौजूद थे। बाद में सीआईए चीफ विलियम बर्न्स भी इस मीटिंग में शामिल हुए।

बाद में व्हाइट हाउस ने एक बयान में कहा- हम चाहते हैं कि सऊदी अरब इजराइल को मान्यता दे। इसके लिए हर मुमकिन कोशिश जारी है। प्रेसिडेंट बाइडेन भी यही बात कह चुके हैं। इजराइल के लिए सऊदी और सऊदी के लिए इजराइल अब जरूरी हो चुके हैं।

**अब्राहम अकॉर्ड पर एक नजर**

अमेरिकी फॉरेन सेक्रेटरी ने भरोसा दिलाया था कि इजराइल और सऊदी के डिप्लोमैटिक रिलेशन शुरू कराने के प्रोसेस में फिलिस्तीन के मुद्दों और हितों को ध्यान में रखा जाएगा। इजराइल-सऊदी मामलों के एक्सपर्ट सलाम सेजवानी ने कहा- सितंबर 2020 में अमेरिका ने अब्राहम अकॉर्ड कराया था। ये बहुत बड़ी कामयाबी थी।

# चांगी एयरपोर्ट पर अगले साल से नहीं पड़ेगी पासपोर्ट दिखाने की जरूरत

## कैसे सफर करेंगे यात्री

सिंगापुर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। सिंगापुर के चांगी एयरपोर्ट 2024 से आव्रजन के लिए स्वचालित क्लियरेंस और पासपोर्ट मुक्त होने के लिए तैयार है। इसकी घोषणा सिंगापुर की संचार मंत्री जोसेफिन टिओ ने पार्लियामेंट के सत्र के दौरान की। इस दौरान देश के आव्रजन अधिनियम से जुड़े कई बदलाव पारित किए गए। अधिकारियों ने बताया कि यात्री अब केवल बायोमेट्रिक डेटा का इस्तेमाल करके पासपोर्ट के बिना सिंगापुर में घूम सकेंगे। उन्होंने कहा, सिंगापुर पासपोर्ट मुक्त आव्रजन मंजूरी देने वाला विश्व के कुछ देशों में से एक होगा। चांगी एयरपोर्ट पर चेहरे की पहचान (फेस रिकगनिशन) और बायोमेट्रिक टेक्नोलॉजी पहले से ही इस्तेमाल में है। आने वाले बदलावों से यात्रियों को प्रत्येक टच प्वाइंट पर अपने दस्तावेजों को दिखाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बायोमेट्रिक का उपयोग सिंगल टोकन प्रमाणीकरण बनाने के तौर किया जाएगा, जो कि विभिन्न टच प्वाइंट पर कार्यरत होगा।

सिंगापुर के बाहर कई देशों में पासपोर्ट की जरूरत पड़ सकती है। दुनिया के सबसे अच्छे एयरपोर्ट में शुमार सिंगापुर का चांगी एयरपोर्ट में 100 से अधिक एयरलाइनों को सेवा प्रदान करता है। यह दुनियाभर के लगभग 100 देशों के 400 शहरों के लिए उड़ान भरते हैं।

# करंट लगने से सात मवेशी की मौत, तीन महिला घायल

गिरिडीह, 21 सितंबर (एजेंसियां)। गिरिडीह जिले में तार की चपेट में आने से सात मवेशियों की मौत हो गयी है जबकि तीन महिलाएं गंभीर रूप से घायल हैं। घटना गावां प्रखंड अंतर्गत नगवां पंचायत के चक गांव की बताई जा रही है। बुधवार की देर रात लगभग 1 बजे यह घटना घटी है। हादसा बिजली की तार टूटने से हुआ। करंट की चपेट में सात मवेशी आ गये और उनकी मौत हो गयी। इस बिजली की तार की चपेट में तीन महिला भी आ गयीं जो गंभीर रूप से घायल हैं। महिलाओं क इलाज गावां सीएचसी में चल रहा है। घटना के संबंध मे बताया जाता है कि तार महेंद्र यादव और अर्जुन यादव के घर के ऊपर से गया हुआ था। तार काफी जर्जर था। बुधवार की देर रात अचानक बिजली का तार टूट कर गिर गया। जिससे मौके पर ही सात मवेशी की मौत हो गई।

# अफेयर-बच्चे के कारण हटाए गए थे चीनी फॉरेन मिनिस्टर

## प्रेसिडेंट जिनपिंग ने जांच कराई थी, मुल्क की सिक्योरिटी को खतरा माना गया

बीजिंग/वॉशिंगटन, 21 सितंबर (एजेंसियां)। पिछले महीने चीन के पूर्व विदेश मंत्री क्विन गेंग को प्रेसिडेंट शी जिनपिंग ने पद से हटा दिया था। इसके पहले करीब दो महीने तक गेंग किसी पब्लिक प्लेटफॉर्म पर नजर नहीं आए थे। अब अमेरिकी अखबार 'वॉल स्ट्रीट जर्नल' की रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि गेंग को एक्सट्रा मैरिटल अफेयर और उससे जन्मे बच्चे की वजह से हटाया गया है।

रिपोर्ट के मुताबिक- जिनपिंग और चाइनीज कम्युनिस्ट पार्टी ने इस मामले की जांच कराई थी। गेंग के अफेयर का खुलासा होने के बाद उन्हें नेशनल सिक्योरिटी के लिए खतरा माना जा रहा था। हालांकि, इस बारे में पहले ही शक था कि एक टीवी एंकर से अफेयर की वजह से गेंग को कुर्सी छोड़नी पड़ी थी। अमेरिकी अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक- गेंग फॉरेन मिनिस्टर बनने से पहले 18 महीने अमेरिका में एम्बेसेडर रहे थे। इसी दौरान उनका चीन की ही एक महिला टीवी एंकर फू जियोतियान से अफेयर हो गया। इस अफेयर से एक बेटा भी हुआ। जून में गेंग आखिरी बार नजर आए थे। इसके बाद उन्हें कभी किसी पब्लिक प्लेटफॉर्म पर नहीं देखा गया। पिछले महीने जिनपिंग ने नया फॉरेन अफेयर्स मिनिस्टर अपॉइंट कर दिया। रिपोर्ट में आगे कहा गया- जियोतियान जनवरी में गेंग के साथ ही अमेरिका से बीजिंग लौटी थीं। इसके बाद फिर अमेरिका गईं। फरवरी में अमेरिका और चीन के बीच स्पाय बैलून को लेकर जबरदस्त तनाव था। अमेरिका ने इसे मार गिराया था। इस दौरान गेंग ही चीन की तरफ से कमान संभाल रहे थे। बहरहाल, अप्रैल में सोशल मीडिया पर जियोतियान का एक

फोटो वायरल हुआ। इसमें वो किसी एयरक्राफ्ट में नजर आ रहीं थीं, उनकी गोद में एक न्यूबॉर्न बेबी था। इसके साथ ही उन्होंने गेंग का फोटो भी शेयर किया। अब तक यह साफ नहीं है कि इस बच्चे का जन्म किस देश में हुआ और उसको नागरिकता किस देश की मिली है। अमेरिकी अखबार ने जब चीन की फॉरेन मिनिस्ट्री से इस मामले पर जवाब जानना चाहा तो उन्होंने चुप्पी साध ली। अमेरिकी मीडिया से पहले ब्रिटिश अखबार 'द टाइम्स' ने जुलाई में सूत्रों के हवाले से बताया था कि गेंग को पद से हटा दिया गया है और इसके लिए उनकी खराब सेहत को वजह बताया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक एग्रेसिव डिप्लोमैसी के लिए मशहूर 57 साल के गेंग का चीन की 40 साल की टीवी प्रेजेंटर फू जियोतियान से अफेयर है। कम्युनिस्ट पार्टी को लगता है कि इस अफेयर की वजह से उसकी बदनामी हो रही है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि गेंग के अफेयर की बात कन्फर्म होने के बाद पहले उन्हें साइडलाइन किया गया और बाद में हटा दिया गया। यही वजह है कि वो किसी पब्लिक प्लेटफॉर्म पर नजर नहीं आ रहे। उन्होंने दिसंबर में पद संभाला था। जियोतियान ने कुछ महीनों पहले गेंग का इंटरव्यू लिया था। इसके बाद भी उन्हें गेंग के साथ कई बार देखा गया। लोकल सोशल मीडिया नेटवर्क पर गेंग के अफेयर की खबरें सामने आईं तो उन्हें इस्तीफा देने के कह दिया गया। हालांकि विदेश मंत्रालय ने इसकी पुष्टि करने से इनकार करते हुए पिछले हफ्ते सिर्फ यही कहा था कि फॉरेन मिनिस्टर की सेहत ठीक नहीं है।

# यूरेनियम स्कैम में फंसे कारोबारी ने की खुदकुशी

सरगुजा, 21 सितंबर (एजेंसियां)। कोलकाता की फर्जी कंपनी के यूरेनियम स्कैम में फंसे कारोबारी ने अंबिकापुर के एक होटल में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। गुरुवार सुबह व्यवसायी का शव फांसी के फंदे पर लटका हुआ मिला। कमरे से 2 पन्नों का सुसाइड नोट भी बरामद हुआ है। जिसमें 2 करोड़ रुपए फंसाने का जिक्र है। मामला सिटी कोतवाली क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक, शहर के बौरीपारा के रहने वाले 61 साल के कारोबारी गुरू जायसवाल बाबूपारा स्थित मातृका श्री होटल में ठहरे हुए थे। उन्होंने बुधवार दोपहर करीब ढाई बजे होटल का कमरा बुक किया था। जहां गुरुवार को उनकी लाश मिली है। उन्होंने रात के खाने का ऑर्डर नहीं दिया, न तो कमरे में जाने के बाद वे एक बार भी बाहर निकले थे। गुरुवार सुबह साफ-सफाई के लिए होटल के कर्मचारियों ने कमरा खुलवाने की कोशिश की, तो किसी ने अंदर से जवाब नहीं दिया।

# अजरबैजान ने 24 घंटे में कारबाख पर कब्जा किया

## आर्मेनिया के अलगाववादियों का दावा- हमले में 200 की मौत, रूस ने सीजफायर करवाया

आर्मेनिया, 21 सितंबर (एजेंसियां)। अजरबैजान ने 24 घंटे तक चली झड़प के बाद नागोर्नो-कारबाख इलाके पर वापस कब्जा कर लिया है। गुरुवार को अजरबैजान के राष्ट्रपति ने इसकी घोषणा की। अलगाववादियों की फोर्स के सरेंडर के बाद उन्होंने सेना के जज्बे की तारीफ की।

अजरबैजान ने 19 सितंबर को आर्मेनिया के नागोर्नो-कारबाख इलाके में सेपरेटिस्ट्स के खिलाफ हमला कर दिया था। अजरबैजान का कहना था कि ये लड़ाई तब तक जारी रहेगी जब तक नागोर्नो-कारबाख के अलगाववादी सरेंडर नहीं कर देते।

**आर्मेनिया के अधिकारी बोले- झड़प में 32 लोग ही मारे गए**

बीबीसी के मुताबिक, आर्मेनिया की तरफ से कोई सहायता नहीं मिलने के बाद काराबाख में मौजूद सेपरेटिस्ट्स ने सरेंडर कर दिया। आर्मेनियन अधिकारियों के मुताबिक हमले में 7 नागरिकों सहित 32 लोगों की मौत हो गई और 200 लोग घायल हुए हैं।

वहीं आर्मेनिया सेपरेटिस्ट के ह्यूमन राइट्स अधिकारियों के मुताबिक हमले में करीब 200 लोगों की मौत हुई है, जबकि 400 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। हालांकि, इन आंकड़ों की पुष्टि नहीं हुई है। अजरबैजान के मुताबिक सीजफायर से पहले उनकी सेना ने अलगाववादियों के करीब 90 ठिकानों पर कब्जा कर लिया था।

**रूसी पीसकीपर्स ने कराया समझौता**

20 सितंबर को रूस पीसकीपर्स के जरिए aदोनों पक्षों के बीच सीजफायर समझौता हुआ। यह समझौता अजरबैजान की शर्तों पर हुआ। इसके बाद से अजरबैजान की सेना ने आर्मेनिया पर अपने सैन्य ऑपरेशन को रोक दिया है। समझौते के लेकर दोनो पक्षों की पहली मीटिंग 21 सितंबर को अजरबैजान के येवलाख शहर में होगी।

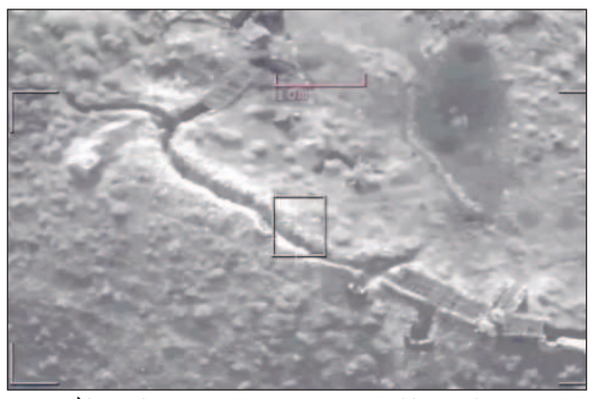

समझौते के मुताबिक, कारबाख फोर्स को भंग करके उनके हथियार जब्त किए जाएंगे। इसके अलावा इलाके से आर्मेनिया की सेना को भी पीछे हटने के लिए कहा गया है। हालांकि, आर्मेनिया की सरकार ने दावा किया है कि उनकी सेना कभी भी कारबाख क्षेत्र में तैनाती ही नहीं थी।

**आर्मेनिया में प्रधानमंत्री के खिलाफ हो रहा प्रदर्शन**

हमले के बाद आर्मेनिया की राजधानी येरेवान में प्रधानमंत्री निकोल पाशिनयान के खिलाफ प्रदर्शन हुआ। लोगों ने पाशिनयान से स्थिति न संभाल पाने के बाद इस्तीफा की मांग की। सुरक्षाबल और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प में 30 से ज्यादा लोग घायल हो गए।

**रूस-अमेरिका ने सैन्य ऑपरेशन रोकने को कहा था**

दोनों देशों के बीच पहले भी समझौता करा चुके रूस ने हमले की निंदा की थी। रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा था कि हम दोनों देशों से खून-खराबा रोकने, दुश्मनी खत्म करने और नागरिकों को बचाने का आग्रह करते हैं।

वहीं अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने अजरबैजान से अपने सैन्य ऑपरेशन को तुरंत रोकने की अपील करते हुए कहा था कि विवाद का शांतिपूर्ण हल ढूंढने के लिए जरूरी है कि अजरबैजान स्थिति को और खराब न करे।

**अजरबैजान-आर्मेनिया के बीच संघर्ष क्यों?**

नागोर्नो-कारबाख इलाका 20 साल से भी ज्यादा समय से आर्मेनिया और अजरबैजान के बीच विवाद का कारण बना हुआ है। कोई भी देश इसे स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता नहीं देता।

1988 से दोनों यूरेशियन देश नागोर्नो-कारबाख इलाके पर कब्जा करना चाहते हैं।

यह क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय रूप से अजरबैजान का हिस्सा है, लेकिन उस पर 1994 से आर्मेनिया के जातीय गुटों का कब्जा है।

यह दक्षिण कॉकेशस में ईरान, रूस और तुर्की की सीमा पर एक महत्वपूर्ण सामरिक (स्ट्रैटेजिक) इलाका है।

**2020 में 6 हफ्ते चला था युद्ध**

2020 में अजरबैजान ने आर्मेनिया पर हमला कर दिया था। करीब छह हफ्ते चले युद्ध के बाद अजरबैजान की एकतरफा जीत हुई और उसने विवादित इलाके का बड़े हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया था। इस युद्ध में दोनों देशों के 6,500 से ज्यादा लोग मारे गए थे। युद्ध विराम के लिए रूस को आगे आना पड़ा था।

नवंबर 2020 में रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने आर्मेनिया-अजरबैजान के बीच एक शांति समझौते करवाया था। दोनों देशों ने शांति समझौते पर साइन किए थे। लेकिन सितंबर 2022 में अजरबैजान ने शांति समझौता तोड़कर फिर हमला कर दिया।

# 50 फीट गहरे कुंड में 3 लाख ने लगाई डुबकी

## वाराणसी में लोलार्क षष्ठी स्नान पर 4 किमी लंबी लाइन, बेटा-बेटी की आस लिए 48 घंटे से खड़े

वाराणसी, 21 सितंबर (एजेंसियां)। आज भाद्रपद शुक्ल पक्ष की षष्ठी है। वाराणसी में संतान की आस लगाकर लाखों श्रद्धालु पहुंचे हैं। तुलसी घाट स्थित लोलार्क कुंड पर रात 12 बजे से ही स्नान चल रहा है। 50 फीट नीचे 72 सीढ़ियां उतरकर 15 फीट चौड़ी जगह में पति-पत्नि एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर स्नान कर रहे हैं। दोपहर 3 बजे तक तीन लाख से ज्यादा भक्तों ने डुबकी लगाई। अभी भी दो लाख के करीब श्रद्धालुओं की भीड़ है। देश के हर कोने से श्रद्धालु कुंड पहुंचे हैं।

स्नान के लिए लाइन 48 घंटे पहले से ही लग गई थी। अस्सी चौराहे से लेकर मदनपुरा तक श्रद्धालुओं की ही भीड़ दिख रही है। भीड़ को कंट्रोल करने में वाराणसी पुलिस के जवानों के पसीने छूट गए हैं। लाइन भी 3-4 किलोमीटर तक लगी है। कुंड में भक्त तीन ओर से आ रहे हैं।

# देश वापसी से पहले निश्चित आश्वासन की तलाश में शरीफ

## एक बार फिर लंदन के लिए रवाना हुए शहबाज

इस्लामाबाद, 21 सितंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के पूर्व पीएम नवाज शरीफ जल्द ही देश लौटने वाले हैं। हालांकि इससे पहले, वे और उनके भाई शहबाज शरीफ कुछ निश्चित आश्वासन चाह रहे हैं। पाकिस्तान की कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में इस बात का दावा किया गया है। इसी के तहत शहबाज शरीफ एक बार फिर आज लंदन के लिए रवाना हुए। इससे दो दिन पहले ही शहबाज लंदन से वापस पाकिस्तान लौटे थे। गौरतलब है कि पाकिस्तना में अगले साल की शुरुआत में ही आम चुनाव होने हैं, ऐसे में नवाज शरीफ अगले महीने की 21 तारीख को अपने आत्मनिर्वासन को खत्म कर देश वापसी के लिए उत्साहित हैं। डॉन की एक रिपोर्ट में सवाल किया गया है कि क्या भ्रष्टाचार विरोधी निगरानी संस्था राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) चौधरी शुगर मिल्स मामले में नवाज की सुरक्षात्मक जमानत का विरोध करेगी। इसमें यह भी कहा गया है कि यह तब देखा जाएगा जब पार्टी प्रमुख अपनी नियोजित वापसी से पहले इसके लिए आवेदन करेंगे।

पार्टी के सूत्रों ने कहा कि शरीफ नवाज के आने से पहले कुछ निश्चित आश्वासन की तलाश में हैं। जो कि महत्वपूर्ण है क्योंकि देश वापसी के बाद नवाज शरीफ को सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले का सामना करना पड़ेगा। सुप्रीम कोर्ट ने उनके खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों को फिर से बहाल कर दिया है।

सूत्रों ने यह भी कहा कि उनकी वापसी सुचारू रूप से हो सके, इसके लिए नवाज शरीफ को चौधरी शुगर मिल्स मामले में सुरक्षात्मक जमानत हासिल करने की जरूरत है। देश वापसी के बाद उन्हें अल-अजीजिया मामले में अदालत के सामने आत्मसमर्पण करना होगा।

# भारतीय वाणिज्य दूतावास पर हमले पर मांगी जानकारी

## जारी की खालिस्तानियों की तस्वीरें

वॉशिंगटन, 21 सितंबर (एजेंसियां)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी एनआईए ने मार्च में अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास पर हमले के 10 आरोपियों की तस्वीरें जारी की हैं और जनता से उनके बारे में जानकारी मांगी है। एजेंसी ने वांछित आरोपियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मांगी है ताकि उनकी गिरफ्तारी हो सके। एनआईए के नोटिस में आरोपियों की पहचान बताने वाले व्यक्ति की पहचान जाहिर ना करने की बात कही गई है।

**एनआईए ने तस्वीरें जारी कर मांगी ये जानकारी**

एनआईए के नोटिस में कहा गया है कि मार्च 2023 को वाणिज्य दूतावास पर हमले के 10 आरोपियों के बारे में आम जनता से जानकारी मांगी है। एनआईए ने कुछ टेलीफोन नंबर और ईमेल आईडी भी साझा की हैं, जिन पर आरोपियों के बारे में जानकारी दी जा सकती है। एनआईए ने तस्वीरें जारी करते हुए उनके नाम, फोन नंबर, पता, पासपोर्ट डिटेल्स और राष्ट्रीयता के बारे में जानकारी मांगी है।

# कन्हैयालाल मर्डर के आरोपियों को पकड़ने वालों को सरकारी नौकरी

## ग्रीन हाइड्रोजन पॉलिसी मंजूर, 200 संस्थाओं को सस्ती जमीन; आर्मी की नई रेंज बनेगी

जयपुर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। सीएम अशोक गहलोत की अध्यक्षता में आज हुई कैबिनेट की बैठक में 20 से ज्यादा प्रस्तावों को मंजूरी मिल गई। विधानसभा चुनाव से पहले कर्मचारियों को खुश करने के लिए उनकी लंबे समय से चली आ रही वेतन विसंगति दूर करने की मांग को मान लिया गया है।

अब कर्मचारियों को 9, 18 और 27 साल की सर्विस पूरी होने पर साल 1992 के सिस्टम से बढ़े हुए पे स्केल का लाभ मिलेगा। कैबिनेट में इसके लिए नियमों में संशोधन को मंजूरी दी गई है। अब नियमों में बदलाव से सरकारी कर्मचारियों को प्रमोशन में ज्यादा पैसा मिलेगा।

कोरोना में अनाथ हुए हुए बच्चों को बालिग होने पर सरकारी नौकरी देने, ग्रीन हाइड्रोजन पॉलिसी, 200 से ज्यादा सामाजिक संस्थाओं को सस्ती जमीन और कन्हैया मर्डर के आरोपियों को पकड़ने वालों को सरकारी नौकरी

के प्रस्ताव पर भी कैबिनेट की मुहर लग गई है। कैबिनेट मीटिंग के बाद मंत्रिपरिषद की बैठक हुई।

1992 से पहले कर्मचारियों को 9, 18 और 27 साल की सेवा पूरी करने पर प्रमोशन पोस्ट का पे स्केल दिए जाने का प्रावधान था। छठा वेतन आयोग लागू होने के बाद केंद्र सरकार ने अश्योर्ड करियर प्रोग्रेशन को संशोधित कर लागू किया था। इसके तहत 10, 20, 30 साल की सेवा पर एक आगे की पे स्केल देने का प्रावधान किया था। इसी तर्ज पर राज्य में 1 जनवरी 2006 से छठा वेतन आयोग लागू करते समय सिलेक्शन स्केल की जगह अश्योर्ड करियर प्रोग्रेशन की व्यवस्था लागू की गई।

इसके तहत कर्मचारियों को 9, 18, 27 और स्टेट सर्विस को 10, 20, 30 साल की सेवा पूरी होने पर एक हायर पे स्केल दिए जाने का प्रावधान किया गया। इस प्रकार सिलेक्शन ग्रेड से एसीपी में बदलाव से कर्मचारियों के लाभ में कमी आ गई। सीएम ने एसीपी में दोबारा संशोधन करते हुए स्टेट सर्विस सहित सभी कर्मचारियों को 1992 में मंजूर की गई सिलेक्शन ग्रेड की तर्ज पर 9, 18, 27 साल की सेवा पूरी करने पर पहली, दूसरी और तीसरी पदोन्नति वाले पे स्केल दिए जाने की घोषणा बजट में की थी।

उदयपुर के कन्हैयालाल की हत्या करके भाग रहे आरोपियों को पकड़ने वाले राजसमंद के दो युवकों को सरकारी नौकरी देने का फैसला कैबिनेट में किया गया है। दोनों युवकों को अभी तक कोई सहायता नहीं मिली थी।

कैबिनेट ने राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति-2023 और बायोमास एंड वेस्ट टू एनर्जी नीति-2023 को मंजूरी दी है। ग्रीन हाइड्रोजन नीति के तहत राज्य में ग्रीन हाइड्रोजन आधारित परियोजनाओं से साल 2030 तक 2000 केटीपीए क्षमता के प्रोजेक्ट लगाने का टारगेट रखा गया है।

बायोमास और कचरे से बिजली बनाने की पॉलिसी बनाई है। शहरी कचरे से बिजली बनाने के प्लांट लगाए जाएंगे। खेतों में फसलों के बचे हुए हिस्सों और सूखे पौधों को बायोमास एनर्जी प्लांट में काम लिया जाएगा। पराली को भी इस काम में लिया जाएगा, जिससे पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण को रोका जा सकेगा। हालांकि राजस्थान में गंगानगर और हनुमानगढ़ के सिंचित क्षेत्र के कुछ भागों में ही पराली जलाई जाती है।

कैबिनेट की बैठक में 200 से ज्यादा सामाजिक संस्थाओं को सस्ती दरों पर जमीन आवंटित करने का फैसला किया है। इन संस्थाओं को आरक्षित दर की 10 फीसदी रकम ही देनी होगी। सामाजिक संस्थाओं को हॉस्टल, वृद्धाश्रम, सामुदायिक केंद्र और सामाजिक कामों के लिए जमीन आवंटित करने का फैसला किया है। पहले के 45 जमीन आवंटनों के मामलों में भी अब केवल आरक्षित दर का 10% ही जमा करवाने की छूट दी है। जिन संस्थाओं ने राशि नहीं जमा करवाई है, उन्हें भी 10 प्रतिशत आरक्षित दर पर भूमि आवंटित की जाएगी।

# पूनिया ने बांधे वसुंधरा की तारीफ के पुल

## कहा- 2003 में वसुंधरा राजे का ग्लैमर था, लीडर लीड करता है तो आकर्षण होता है

अलवर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान के अलवर में पहुंची बीजेपी की परिवर्तन यात्रा के तीसरे दिन बीजेपी के बड़े नेताओं की राजनीति में बड़ा उलटफेर देखा गया। पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया ने खुलकर पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की तारीफ की। इतना तक कह दिया कि 2003 और 2023 की परिवर्तन यात्रा में बड़ा अंतर यह है कि उस समय वसुंधरा राजे का ग्लैमर व आकर्षण था। जब कोई लीडर लीड करता है तो ऐसा होता है। यही नहीं पूनिया ने कई बार वसुंधरा राजे का नाम लिया। इतना भी कहा कि उनके प्रति कभी अश्रद्धा का भाव मन में नहीं रखा। जब भी कार्यक्रम में मिलते हैं बातें करते हैं। लेकिन पिछले 10 दिनों से वसुंधरा राजे से न मिले न बात हुई है। अलवर आए पूर्व प्रदेशाध्यक्ष पूनिया ने दैनिक भास्कर रिपोर्टर के सवालों पर दिए जवाब आप भी जानिए।

जब पूनिया प्रदेशाध्यक्ष थे तब वसुंधरा राजे का नाम आपकी

जुबां पर इतना नहीं आता था। अब कुछ मिनट में ही आप चार बार नाम ले चुके है। क्या दोनों एक ट्रैक पर आ गए।

देखिए, पार्टी के हित के लिए एक रहे हैं। मैंने व्यक्तिगत संबंधों पर कभी कुछ नहीं कहा । मेरा व्यक्तिगत तौर पर किसी नेता व कार्यकर्ता के प्रति असम्मान व अश्रद्धा नहीं रही। हम सब एकमुखी होकर साथ चलें। मैं पहले भी उनका सम्मान करता था। आज भी करता हूं।

अभी तो मुझे जानकारी नहीं है। इन दिनों बात नहीं हुई। जब कार्यक्रमों में आती हैं तब बात होती है। लेकिन आप कहेंगे तोमैं पूछकर बता सकता हूं।

न नेता की अहमियत खत्म होती है न सम्मान। उन्होंने अनेक अवसरों पर नेता विकसित किए हैं। जितने हमारे नेता है उनका इतिहास, विरासत, स्किल है। पार्टी समय समय पर उनका उपयोग करती है। वसुंधरा राजे प्रदेश की चारों यात्राओं की शुरूआत के समय मौजूद रही हैं।

देखिए, बदलाव की जरूरत पहले थी अब भी है। लेकिन जब लीडर होता है तो उसका आकर्षण होता है। वसुंधरा 2003 उस समय पार्टी में प्रोजेक्ट होकर आई। उनका ग्लैमर भी था। जब लीडर लीड करता है तो उसका असर होता है। लेकिन इसका सैट फिनोमिनो नहीं होता है। यह पार्टी डिजाइन तय करता है। उस समय मजबूरी ये थी कि पूरे राजस्थान की 200 विधानसभाओं का नापना था। 20 दिन में सारा काम करना था। इस यात्रा क्रेज व मोटिव और समर्थन के प्रति बदलाव नहीं है।

आपने कहा उस समय वसुधंरा आकर्षण थी तो क्या इस यात्रा में कोई आकर्षण हैं। देखिए, हर चीज का समय होता है।

# पहली बार पीएम की सभा में महिलाएं संभालेगी जिम्मेदारी

## नारी शक्ति वंदन विधेयक को लेकर जताएंगी आभार, 25 को जयपुर में हो रही सभा

जयपुर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। जयपुर में होने वाली पीएम मोदी की सभा में मंच संचालन से लेकर पांडाल की सभी व्यवस्थाएं महिलाएं संभालेगी। ऐसा करके जयपुर में महिलाओं द्वारा नारी शक्ति वंदन विधेयक को लेकर पीएम मोदी का आभार जताया जाएगा।

भाजपा के प्रदेश महामंत्री भजनलाल शर्मा ने दावा किया कि देश में पहली बार किसी प्रधानमंत्री की सभा की समस्त जिम्मदारी महिलाओं द्वारा संभाली जाएगी। इससे पहले किसी भी पॉलटिकल रैली में इस तरह का प्रयोग नहीं हुआ है।

मंच संचालन से लेकर सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालेंगी महिलाएं

पीएम मोदी की 25 सितम्बर को जयपुर में होने वाली रैली में प्रदेश भाजपा की ओर से सभी जिम्मेदारी महिलाओं को सौंपी जा रही है। इसमे मंच संचालन से लेकर पांडाल की सारी व्यवस्थाएं महिलाओं के हाथों में रहेगी।

पांडाल में बैठने की व्यवस्था (पदाधिकारी, कार्यकर्ता और आमजन), सभा स्थल पर बिज़ली-पानी की व्यवस्था, पार्किंग व्यवस्था और यहां तक की सुरक्षा की व्यवस्था भी महिलाओं के हाथों में ही होगी। हालांकि पुरुष पर्दे के पीछे से सभी व्यवस्थाओं में महिलाओं की मदद करेंगे।

साढ़े चार साल बाद जयपुर में हो रही पीएम मोदी की सभा

जयपुर में करीब साढ़े 4 साल बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सभा होने जा रही है। 25 सितंबर को पीएम मोदी जयपुर में भाजपा की परिवर्तन यात्राओं का आधिकारिक रूप से समापन करेंगे। जयपुर जिले की दादिया पंचायत के सूरजपुरा (वाटिका) में सभा होगी। सभा में करीब 5 लाख लोगों की भीड़ का लक्ष्य रखा गया है।

इससे पहले साल लोकसभा चुनावों के दौरान पीएम मोदी की जयपुर के मानसरोवर में 1 मई 2019 को सभा हुई थी। इस साल विधानसभा चुनावों के मद्देनजर पीएम मोदी की प्रदेश के अलग-अलग जिलों में सभा हो चुकी है। जयपुर में अभी तक कोई सभा नहीं हुई थी। ऐसे में बीजेपी जयपुर की सभा को सफल बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती है।

# राजस्व मंत्री समेत 5 के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज

## माइनिंग व्यवसायी का आरोप- रिश्तेदारों के नाम 50 प्रतिशत शेयर करवाए, 5 करोड़ भी नहीं दिए

भीलवाड़ा, 21 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्व मंत्री रामलाल जाट सहित 5 लोगों के खिलाफ धोखाधड़ी और चोरी का मामला दर्ज किया गया है। राजसमंद के एक माइनिंग व्यवसायी का आरोप है कि करोड़ों रुपए की ग्रेनाइट मांइस में 50 प्रतिशत शेयर मंत्री ने अपने छोटे भाई के बेटे और उसकी पत्नी के नाम करवाए थे। इसके बदले 5 करोड़ रुपए देने का वादा था लेकिन कागज नाम होने के बाद रुपए नहीं दिए गए।

भीलवाड़ा के करेड़ा थाने में 17 सितंबर को मांडल कोर्ट के आदेश पर थाना प्रभारी ओम प्रकाश गोरा ने मामला दर्ज किया था। रिपोर्ट में ज्ञानगढ़ निवासी पूरणलाल पुत्र मन्नु गुर्जर, अंटाली प्रतापपुरा निवासी सुरज जाट, अंटाली निवासी महिपाल सिंह, प्रतापपुरा निवासी रामलाल जाट, प्रतापुरा निवासी महावीर प्रसाद पुत्र रामस्वरूप चौधरी का नाम है। खास बात है कि, रिपोर्ट दर्ज होने के दूसरे दिन ही थाना प्रभारी का ट्रांसफर हो गया। उनके ट्रांसफर को भी इस मामले से जोड़कर देखा जा रहा है।

**मांइस कंपनी का रजिस्ट्रेशन किसी ओर के नाम**

पुलिस को दी रिपोर्ट में माइनिंग व्यवसायी राजसमंद के गडबोर निवासी परमेश्वर पुत्र रामलाल जोशी ने बताया कि वह करेड़ा के रघुनाथपुरा में वह मैसर्स अरावली ग्रेनि मार्मो प्रा.लि ने नाम से ग्रेनाइट मांइस का काम करता है। माइंस में

वह डायरेक्टर और शेयर होल्डर है। इस कंपनी का रजिस्ट्रेशन श्याम सुंदर गोयल व चंद्रकांत शुक्ला के नाम से हो रखा है। जिस समय कंपनी का रजिस्ट्रेशन हुआ था। उस समय प्रार्थी श्याम सुंदर व चंद्रकांत से 10 करोड़ रुपए मांगता था। इसके चलते इन दोनों माइंस के 50 प्रतिशत शेयर प्रार्थी परमेश्वर व उसकी पत्नी भव्या जोशी के नाम पर कर दिए थे।

रिश्तेदारों के नाम करवाए शेयर

बाकी के 50 प्रतिशत शेयर का सौदा श्याम सुंदर व चंद्रकांत ने रामलाल जाट से कर दिया। मंत्री रामलाल जाट ने माइंस के शेयर अपने रिश्तेदार मोना चौधरी व सुरेश जाट के नाम पर करवा दिए। इन शेयर के पैसे मंत्री को परिवादी को देने थे। माइनिंग व्यवसायी श्याम सुंदर व चंद्रकांत से 5 करोड़ रुपए और मांगता था। और इन दोनों ने बकाया 5 करोड़ रुपए शेयर खरीदने वाले रामलाल जाट से प्राप्त करने के लिए कहा था।

मंत्री ने रुपए देने से किया मना

मंत्री ने परिवादी से शेयर के कागज ट्रांसफर होते ही 5 करोड़ रुपए देने का वादा किया था। इसके बाद 50 प्रतिशत शेयर मोना व सुरेश जाट के नाम ट्रांसफर कर दिए। इसके बाद माइनिंग व्यवसायी ने जब 5 करोड़ रुपए मांगे तो मंत्री ने देने से इनकार कर दिया और 2 करोड़ रुपए देने की बात कहीं।

इस पर आपत्ति जताई तो मंत्री परिवादी पर भड़क गए और अपने राजस्व मंत्री पद पर होने की बात कहते हुए धमकाया। इसके बाद 17 जून 2022 को माइंस पर काम कर रहे लेबर को वहां से डराकर भगा दिया। 24 जून तक माइंस पर रखी करोड़ों रुपए की मशीनरी व वाहनों को चोरी कर लिया। कोर्ट के आदेश पर करेड़ा थाना पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया है। और जांच शुरू कर दी है।

# डोटासरा बोले- साबित करें मैं भ्रष्टाचारी हूं, राजनीति छोड़ दूंगा

## लक्ष्मणगढ़ में कहा- भाजपा ईडी की छापेमारी करवा रही, मेरे दोस्तों-रिश्तेदारों को परेशान कर रही एजेंसियां

सीकर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा ने नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ पर तंज कसते हुए कहा कि हम लोगों ने संभाग मांगा था और आज सीकर संभाग बन गया है। राठौड़ जी सीकर के नीचे चूरू आता है, उसमें आते हैं।

डोटासरा ने यह बात सीकर के लक्ष्मणगढ़ नेहरू खेल स्टेडियम में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कही। डोटासरा और चिकित्सा मंत्री प्रसादी लाल मीणा लक्ष्मणगढ़ में 45 करोड़ की लागत से बन रहे जिला हॉस्पिटल के नए भवन का शिलान्यास करने आए थे। इस मौके पर सभा में वे राठौड़ को आड़े हाथों लिया।

**2013 में राजेंद्र राठौड़ मुझे चुनाव जिताकर गए**

डोटासरा ने कहा कि जब मैं 2013 में चुनवा लड़ा था। तब राठौड़ साहब मुझे चुनाव जिताकर गए थे। राठौड़ साहब ने उस

समय रामलीला मैदान में कहा था कि गोविंद डोटासरा घमंडी है, भ्रष्टाचारी है। तहसीलदार, थानेदार से पैसे लेता है, कमीशन लेता है, बाल ऊपर करके रखता है। यह कमियां गिनाकर गए थे। उन्होंने कहा था कि गोविंद सिंह डोटासरा को मत ज़िताओ, मेरे मित्र सुभाष महरिया कट्टर ईमानदार है उसे ज़िताओ। उस कट्टर ईमानदार सुभाष महरिया को घर भेज दिया गया।

**पूर्व विधायक केडी बाबर की प्रशंसा की**

डोटासरा ने कहा कि ये जो लंबा-लंबा मुंह निकालकर और बड़ी महंगी गाड़ियों में बाणा बदलकर आ रहे है। उनका एक रुपए का काम लक्ष्मणगढ़ के लिए नहीं किया हुआ। उन्होंने भाजपा के पूर्व विधायक केडी बाबर की प्रशंसा करते हुए कहा कि अगर सीकर में थोड़ा बहुत काम किसी ने किया तो भाजपा के सीकर के विधायक रहे केसरदेव बाबर ने किया।

**परिवर्तन यात्रा को बताया डुक्का - डुक्की फिल्म**

डोटासरा ने कहा कि लक्ष्मणगढ़ में निकाली गई परिवर्तन यात्रा डुक्का- डुक्की फिल्म थी 1 हमारे यहां पर दो-चार दिन पहले डुक्का- डुक्की फ़िल्म चली थी 1 फिल्म में एक नारा बोलने वाला ले आए और दूसरे नारे लगाने वाले ले आए 1 उन्होंने कहा कि परिवर्तन यात्रा में सारे लोग भढ़ाढर के पास फ़ार्म हाउस से पैसे देकर बुलाए गए थे।

मेरे दोस्तों, रिश्तेदारों को परेशान कर रही एजेंसियां

भाजपा पर आरोप लगाते हुए गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि मेरे रिश्तेदार, मेरे मित्र, मेरे बेटे के साथ पढ़े हुए मित्र, सभी के ऊपर भाजपा के नेता केंद्रीय एजेंसियां, इनकम टैक्स, ईडी की छापेमारी करवा रहे हैं उन्हें परेशान कर रहे हैं।

उन्हें कह रहे हैं कि गोविंद सिंह डोटासरा को क्यों बताते हो 1 राजेंद्र राठौड़ साहब बीजेपी परेशान कर सकती है सत्य को पराजित नहीं कर सकती।

कोई साबित करें, डोटासरा भ्रष्टाचारी- राजनीति छोड़ दूंगा

डोटासरा ने कहा कि इन लोगों को शर्म नहीं आती जो मुझे भ्रष्टाचारी बताते हैं 1 उन्होंने कहा कि आज वो लोग गोविंद सिंह डोटासरा को भ्रष्टाचारी बताते हैं जो पद जीते नहीं लेकिन पद पैसे से लेकर भारतीय जनता पार्टी में आए थे, वह मुझे भ्रष्टाचारी बताते हैं 1 कोई साबित कर दे कि डोटासरा भ्रष्टाचारी है तो मैं राजनीति छोड़ दूंगा।

# सीएम पुष्कर धामी का कांग्रेस पर निशाना

## बोले, पहले कुछ लोगों को ध्यान में रखकर योजनाएं बनती थी अब अंतिम छोर तक खड़े गरीबों के लिए बन रही

कोटा, 21 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि राजस्थान की जनता ने परिवर्तन का संकल्प बना लिया है। कोटा में मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा राजस्थान में 5 साल से विकास का पहिया रुक गया है। उसे आगे बढ़ाने के लिए आमजन डबल इंजन की सरकार बनाएगा।और राजस्थान तेजी से भारत के विकास में योगदान देगा।

उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा राजस्थान सनातन हिंदू संस्कृति के विरोध का सबसे अग्रणी राज्य बन गया है।यहां दशहरा, रामनवमी सहित अन्य हिंदू पर्व पर पाबंदी लगा दी जाती है। शिवलिंग को कटर लगाकर काटा जाता है। यह हम सब देख रहे हैं।

पुष्कर धामी ने कहा पहले के समय जो योजनाएं बनती थी। वह कुछ लोगों को ध्यान में रखकर बनती थी। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वो योजनाएं बनी है जिनकी गरीबों को वास्तव में आवश्यकता है। अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को जिनकी जरूरत है। पीएम मोदी की जनकल्याणकारी योजनाओं से देश की जनता सीधे तौर पर लाभान्वित हो रही है।

मोदी की प्राथमिकता में हमेशा राजस्थान रहा है लेकिन 5 सालों से राजस्थान की कांग्रेस सरकार केंद्र से मिलने वाली धनराशि खर्च नहीं करना चाहती। राजस्थान के लोगों फायदा नहीं देना जाना चाहती। इसका उदाहरण जल जीवन मिशन है। जल जीवन मिशन की हजार करोड़ की राशि आज तक खर्च नहीं की। राजस्थान भ्रष्टाचार के मामले में पहले स्थान पर है। सड़कों की हालत खस्ता है। कई

जगह गड्ढे हैं। प्रदेश में महिलाओं के साथ अत्याचार हो रहे है।

उन्होंने कहा घमंडिया गठबंधन में हिंदू सनातन संस्कृति के बारे में अपशब्द कहने की होड़ लगी हुई है। कौन ज्यादा नीचता पर जा सकता है। उदय स्टालिन की सनातन पर टिप्पणी घमंडिया गठबंधन के चरित्र को बताता है। गठबंधन के शामिल सोनिया गांधी, राहुल गांधी सहित बड़े-बड़े नेता इस बारे में कोई बयान नहीं देते, सभी चुप बैठे हैं।

पीएम मोदी ने जो कहा वह किया है। कश्मीर में धारा 370 समाप्त कर दी। अयोध्या में भव्य भगवान राम का मंदिर बन रहा है तीन तलाक का मामला हो, चाहे में महिला आरक्षण की बात हो। यह सब प्रधानमंत्री मोदी की प्राथमिकता में रहे है। प्रधानमंत्री मोदी देश को आगे बढ़ने का काम कर रहे हैं। भारत की अध्यक्षता में अबतक की सबसे सफल जी 20 की बैठक हुई।

दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी उनके गठबंधन के लोग लगातार देश को विनाश की ओर ले जाने का काम कर रहे हैं। मोदी जी सनातन की बात करते हैं।जबकि वो लोग हमेशा सनातन विरोध की बात करते हैं। अच्छी बात है गठबंधन का नाम I N D I A रख लिया। लेकिन भारत शब्द से चिढ क्यो है? वंदे मातरम कहने में क्या आपत्ति है? देश के सनातन से जुड़ी चीजों से घमंडिया गठबंधन के लोग विरोध करते हैं।

# असम सीएम बोले-कांग्रेस और गद्दार एक ही शब्द है

## बोले- यह वादाखिलाफी करने वाली और सनातन विरोधी पार्टी

जोधपुर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने कांग्रेस को गद्दार बताया है। तेलंगाना में महिलाओं के खाते में पैसा भेजने के राहुल गांधी के वादे पर कटाक्ष करते हुए कहा कि राजस्थान में कांग्रेस सरकार यह स्कीम क्यों लागू नहीं कर रही है?

जोधपुर के लूणी में भाजपा की परिवर्तन संकल्प यात्रा की सभा को संबोधित करते हुए सरमा ने कहा- 'राहुल गांधी कहते हैं कि यदि तेलंगाना में हमारी सरकार आती है तो महिलाओं के खाते में ढाई हजार रुपए हर महीने भेजेंगे। यदि आप तेलंगाना में यह वादा कर सकते हैं तो राजस्थान में इसे आप लागू क्यों नहीं कर रहे, यहां तो पहले से ही कांग्रेस सरकार है। कांग्रेस और गद्दार एक ही शब्द है, इन दोनों के अलग-अलग मतलब नहीं हैं।'

असम के सीएम ने कहा- अशोक गहलोत सारी दुनिया घूमते हैं, लेकिन वे रामलला के मंदिर नहीं जाते। वे रामलला के दर्शन करने के लिए कभी नहीं गए। उन्हें लगता है कि रामलला के दर्शन करने से बाबर नाराज हो जाएगा। पता नहीं उन्हें बाबर और औरंगजेब से क्या प्रेम है।

अशोक गहलोत कहते हैं राजस्थान में हिंदुत्व को आने नहीं दूंगा, क्या हिंदुत्व तुम्हारा इंतजार करेगा। हर घर में हिंदू है, मैंने हिंदू होकर जन्म लिया और हिंदू होकर मरूंगा। वे सोचते हैं हम डिफेंसिव हो जाएंगे, लेकिन मैं कहता हूं कि राजस्थान आधिकारिक रूप से अगर हिंदुत्व प्रदेश बनता है तो खुशी ही होगी। राजस्थान हिंदुओं की संस्कार भूमि है। यहां हिंदुत्व नहीं होगा तो क्या बाबर-तंत्र चलेगा। बाबर को लाने के लिए मतदाता सूचियों में गड़बड़ करते हो, पता नहीं बाबर से इतना क्यों प्यार करते हो।

# बेरहमी से मारपीट करने पर व्यक्ति की मौत, 5 गिरफ्तार

बाड़मेर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। जमीनी विवाद को लेकर 60 साल के व्यक्ति के साथ बेरहमी से मारपीट की गई। 40 दिन बाद उसने हॉस्पिटल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने मर्डर बाद पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। वहीं पुलिस पूरे मामले की तफ्तीश कर रही है। घटना बाड़मेर जिले के धोरीमन्ना कस्बे शोभाला जैतमाल गांव 10 अगस्त की है। बीते करीब 40 दिनों से मृतक का हॉस्पिटल में इलाज चल रहा था। ऐसा बताया जा रहा है कि गंभीर चोट होने के कारण मौत हो गई। पुलिस को अनुसार मंगलवार को गंभीर घायल निंबाराम (60) पुत्र हीराराम की 40 दिन बाद इलाज के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सुपुर्द किया है। पुलिस ने मर्डर के बाद मारपीट करने वाले पड़ोसी दुर्गाराम (42) पुत्र हेमाराम, खेताराम (45) पुत्र हेमाराम, करनाराम (31) पुत्र कुंभाराम, अमेदाराम (50) पुत्र भैराराम, खेताराम (45) पुत्र हिमंताराम सभी निवासी सियालों की ढाणी शोभाला जैतमाल को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने कोर्ट में पेश कर एक दिन का रिमांड पर लिया था। वहीं रिमांड अवधि पूरी होने के बाद आज दुबारा कोर्ट में पेश किया जाएगा।

# आम आदमी पार्टी प्रभारी विनय मिश्रा बोले

## राजस्थान घोषणा पत्र आमजन तक जाएगा

## कहा- सिसोदिया बीजेपी में आ जाएं तो जेल से बाहर होंगे

अलवर, 21 सितंबर (एजेंसियां)। आम आदमी के राजस्थान प्रभारी विनय मिश्रा ने कहा कि पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल के राजस्थान घोषणा कार्ड को आमजन तक लेकर जाएंगे। दिल्ली व पंजाब की तरह राजस्थान में भी जनता में विश्वास बढ़ा है।

उन्होंने कहा- यहां भी बड़े नेता पटकनी खाएंगे। दिल्ली की बीजेपी सरकार ने पॉलिटिकल ड्रामा करते हुए उनकी पार्टी के मंत्री मनीष सिसोदिया को फंसाया। अब वे जल्दी बाहर आएंगे। विनय मिश्रा ने अलवर सर्किट हाउस में यह बात कही।

उन्होंने कहा कि मनीष सिसोदिया बीजेपी में आ जाएं तो पाक साफ हो जाएंगे और जेल से बाहर भी आ जाएंगे। ये पॉलिटिकल केस है। बीजेपी के नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक दिन पहले एनसीपी को 70 हजार करोड़ का घोटोलेबाज बताया था।

अगले दिन एनसीपी नेता अजीत पंवार बीजेपी में शामिल कर लिया। डिप्टी सीएम भी बन जाते हैं और ईडी की ओर से फाइल होने वाली चार्जशीट से नाम भी बाहर निकल जाता है। यह इनकी कथनी और करनी में बड़ा अंतर है। आम आदमी पार्टी झुकेगी नहीं। हमें कोर्ट पर विश्वास है। बहुत जल्दी मनीष सिसोदिया बाहर आएंगे।

उन्होंने कहा कि बीजेपी व कांग्रेस ने 70 साल में कुछ खास नहीं किया। भ्रष्टाचार से जनता परेशान हैं। बुनियादी सुविधाएं आज तक पूरी नहीं हो सकी हैं। लेकिन अब हम सितंबर तक जनता के डोर टू डोर जाएंगे। हर गांव व ढाणी में आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता हैं।

# ईसीआईएल में "राजभाषा चेतना माह' का शुभारंभ

## "राजभाषा चेतना माह' भाषा एवं संस्कृति का उत्सव है..... अनुराग कुमार

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल), हैदराबाद में ईसीआईएल के संस्थापक डॉ. ए.एस. राव के 109वें जन्म दिवस के अवसर पर "राजभाषा चेतना माह' का शुभारंभ किया गया। ईसीआईएल में एक माह भाषा एवं संस्कृति के इस उत्सव में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों द्वारा विभिन्न प्रभागों में राजभाषा के तकनीकी टूल्स एवं आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी माध्यमों से अनुवाद प्रक्रिया एवं प्रयोग का प्रचार-प्रसार करना प्रमुख आकर्षण है। कॉरपोरेशन के राजभाषा विभाग ने इस वर्ष को "प्रशिक्षण एवं विकास वर्ष' मनाने का संकल्प किया है।

"राजभाषा चेतना माह' के शुभारंभ के अवसर पर "सुलेख' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस चेतना माह के दौरान कुल 10 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना है जिसमें निबंध लेखन, श्रुतलेख, शब्दावली एवं टिप्पण, तकनीकी पेपर पाठ, कविता पाठ, हिन्दी शब्द संसाधन, वाक्, पेपर प्रस्तुतीकरण एवं प्रश्नमंच प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। डॉ. राजनारायण अवस्थी, उप प्रबंधक (राजभाषा) एवं प्रभारी, राजभाषा अनुभाग ने राजभाषा विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि "राजभाषा चेतना माह' हम सभी के लिए भाषाई विविधता के महत्व का आत्म-गर्व बढ़ाने का एक अवसर है। इस शुभारंभ समारोह में वी.कनका श्री महालक्ष्मी ने प्रतियोगिता योजना डॉ. सीएच. अंबेडकर ने प्रतियोगिता प्रबंधन श्रीमती वी. कनका श्री महालक्ष्मी ने तथा अजहर सुल्तान ने तकनीकी प्रस्तुतीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

# मिताली अग्रवाल दूसरी बार चाणक्य पुरस्कार से सम्मानित

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। श्रीमती मिताली अग्रवाल, जनसंपर्क अधिकारी), आईआईटी, हैदराबाद को भारतीय जनसंपर्क परिषद (पीआरसीआई) द्वारा संबंध प्रबंधन के लिए जूरी स्पेशल चाणक्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

मिताली के उल्लेखनीय योगदान ने उन्हें यह प्रतिष्ठित पहचान दिलाई है, जिससे यह पी.आर.सी.आई से लगातार तीसरे वर्ष की प्रशंसा का पात्र बनी है। श्रीमती मिताली अब पी.आर.सी.आई द्वारा प्रतिष्ठित चाणक्य पुरस्कार की दो बार प्राप्तकर्ता बन गई हैं। इससे पहले उन्हें सोशल मीडिया पर्सन ऑफ द ईयर के लिए चाणक्य अवॉर्ड दिया गया था। पिछले साल, उन्हें डिजिटल मार्केटिंग के लिए पी.आर.सी.आई फ्यूचर रेडी अवार्ड से सम्मानित किया गया था। यह पुरस्कार उन्हें 21 सितंबर को सिविल सेवा अधिकारी संस्थान, नई दिल्ली में 17वें ग्लोबल कम्युनिकेशन कॉन्क्लेव के दौरान रक्षा मामलों की संसदीय समिति के माननीय अध्यक्ष जुएल ओराम द्वारा प्रदान किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर बी.एस मूर्ति ने मिताली को इस सराहनीय उपलब्धि के लिए बधाई दी और उनकी निरंतर सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं।

# हरियाणा नागरिक संघ की महिला समिति गठित

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हरियाणा नागरिक संघ की महिला समिति का गठन किया गया। जारी विज्ञप्ति के अनुसार संघ के मंत्री राजेश गर्ग ने कहा कि सत्र 23-25 की महिला समिति का गठन किया गया। 20 सितंबर को हरियाणा भवन में आयोजित सभा में संघ के पदाधिकारी एवं महिला समन्वयक अशोक सिंघल की मौजूदगी में संघ की महिलाओं को आमंत्रित किया गया था। वहां उपस्थित महिलाओं को अध्यक्ष पदम जैन एवं उपाध्यक्ष सुरेंद्र केडिया ने संबोधित किया और संघ में महिलाओं एवं बच्चों की भागीदारी की अहमियत बतायी। सभी महिलाओं ने अपने विचार रखे और भावी कार्यक्रम के विषय मे चर्चा की।

सभी ने श्रीमती प्रीति अग्रवाल को उन के पूर्व अनुभव एवं कार्यकुशलता के मद्देनजर सर्वसम्मति से मुख्य संयोजक नियुक्त किया। साथ में बबीता जैन, रेणु तायल, दीपा अग्रवाल, और प्रीति जैन को सह संयोजक नियुक्त किया। वहां उपस्थित अन्य महिलाओं ने कार्यकारिणी में अपना नाम दर्ज करवाया। सभा मे कोषाध्यक्ष विपिन सिंघानिया, संयुक्त मंत्री नरेश मित्तल, संदीप मित्तल उपस्थित थे।

## एनएमडीसी में हिंदी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। एनएमडीसी मुख्यालय, हैदराबाद में 14 से 29 सितंबर, 2023 तक मनाए जा रहे "राजभाषा पखवाड़ा, 2023' के अंतर्गत आज दिनांक 21 सितंबर, 2023 को "हिंदी सुलेख प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कार्मिकों ने बड़ी संख्या में उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता के प्रारंभ में राजेश कुमार गोंड, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा उन्हें हिंदी सुलेख प्रतियोगिता के संबंध में जानकारी दी।

अधिशासी निदेशक (कार्मिक) सत्येन्द्र राय ने इस अवसर पर दिए गए अपने संदेश में सभी प्रतिभागियों को प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दी और अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने की अपील की। प्रतियोगिता का समन्वयन डॉ. रजिन्दर कौर, प्रबंधक (राजभाषा) ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री देबाशीष घोष, प्रबंधक (राजभाषा) ने किया। प्रतियोगिता के सफल आयोजन में एस.के. सनोडिया, उप प्रबंधक (सचि.) एवं सुश्री के. सौम्या, अप्रेंटिस प्रशिक्षु का सक्रिय सहयोग रहा।

**गणेश नवरात्रि के अवसर पर एमवीवाई, चंदनवाड़ी में बजरंगसेना के अध्यक्ष एनआर लक्ष्मण राव के नेतृत्व में अन्न प्रसादम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपस्थित हैं एम. विनीत यादव, अजय नायडू, संगठन सचिव, मनोज मोगलगिड्डी, अध्यक्ष, ग्रेटर हैदराबाद के. सुनील चारी, विनीत यादव और अन्य शामिल हुए।**

**शिवरामपल्ली रामदेवरा दरबार में रामदेव में 31 कुण्डीय महायज्ञ हवन जारी है, जिसमें हर दिन 198 जोडी हवन कर रही हैं। रामदेव मंदिर के चेयरमैन श्याम गिलडा व धर्मारात ढाका ने सभी से कार्यक्रम का लाभ लेने का आग्रह किया है।**

**कारवान स्थित बंजावाडी में स्थापित गणेश पंडाल में उपस्थित श्रद्धालु।**

# हिन्दी महाविद्यालय में हिन्दी दिवस आयोजित

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हिन्दी महाविद्यालय में दिनांक 20-9-23 को हिन्दी दिवस का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मुकेश मिश्र प्राचार्य कर्मा देवी पी.जी. कॉलेज बस्ती, उत्तर प्रदेश आमंत्रित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन तथा कु. सोनी द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना के साथ हुआ। संस्थाध्यक्ष लक्ष्मीनिवास शर्मा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा हिन्दी दिवस कार्यक्रम के आयोजन की सभी को शुभकामनाएँ दीं। उपस्थित अतिथि को शॉल ओढ़ाकर, स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

डॉ. मुकेश मिश्र का परिचय डॉ. रजनी धारी हिन्दी विभागाध्यक्ष ने दिया। डॉ. मुकेश मिश्र ने अपने वक्तव्य में वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषा की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी की दशा और दिशा पर अपने विचार प्रस्तुत किए तथा हाल ही में किए गए श्रीलंका दौरे की भी चर्चा की। संस्था उपाध्यक्ष श्री श्यामसुंदर मूंदड़ा ने सभी को हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उप-प्राचार्य श्रीमती अश्विनी सनपूरकर ने भी सभी को हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ दीं। एम.ए.प्रथम वर्ष के छात्र रवि वैद्य ने अपनी स्वरचित कविता का वाचन किया। उपस्थित आगंतुकों में सुहास भटनागर कवि ने अपनी कविता का वाचन किया। हिन्दी महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. बी. श्रीदेवी ने सभी के प्रति आभार ज्ञापन किया। कर्यक्रम का संचालन हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. रजनी धारी ने किया। सामूहिक राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

## स्वस्थ आहार पद्धतियों पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। राष्ट्रीय पोषण माह-2023 के तहत राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा संपदा संस्थान, हैदराबाद द्वारा डॉ. गोलि पेंचल प्रसाद, प्रभारी सहायक निदेशक के मार्गदर्शन में जिला परिषद हाई स्कूल, मंसूराबाद, रंगारेड्डी जिला में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। सर्वप्रथम, केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद, आयुष मंत्रालय,भारत सरकार के तहत एनआईआईएमएच, हैदराबाद द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों पर डॉ. पी. हेमा राजू, वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता द्वारा एक संक्षिप्त परिचय शिक्षकों और छात्रों को दिया गया। तथा डॉ. के. वैरामुथु, सीनियर रिसर्च फेलो (आयुर्वेद) ने "स्वस्थ आहार पद्धतियाँ (क्षेत्रीय और मौसमी)" विषय पर एक सचित्र पावरपॉइंट प्रस्तुति दी और यह भी संदेश दिया कि व्यक्ति को आयुर्पोषण के 5 नियमों का पालन करना चाहिए, जैसे कि सही समय, उचित मात्रा, गुणवत्ता पूर्ण आहार, सही तौर तरीके तथा योग्य स्थान पर भोजन करना। उन्हें पौष्टिक आहार, आयुर्वेदीय दिनचर्या, ऋतुचर्या आदि से संबंधित आईईसी ब्रोशर वितरित किये गये। तत्पश्चात के. श्रीनिवास राव,पुस्तकालयाध्यक्ष जी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा और उन्होंने साई रेड्डी, प्रभारी प्रताप रेड्डी, सिद्दी लिंगप्पा, श्रीनिवास चारी, स्टाफ और छात्रों के समर्थन और भागीदारी के प्रति आभार व्यक्त किया।

## प्रजा राज्य पार्टी तेलंगाना में भी सक्रिय होगी : तनवीर

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। राष्ट्रीय प्रजा राज्य पार्टी (राप्रपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष तनवीर अहमद सनी ने कहा कि पार्टी तेलंगाना में भी चुनाव लड़ेगी और जरूरत पड़ी तो अपने से विचार मिलने वाली पार्टी के साथ गठबंधन करेगी। उन्होंने कहा कि आज देश में भी अल्पसंख्यकों पर काफी अत्याचार बढ़ा है मगर अल्पसंख्यकों के ठेकेदार कहे जाने वाली पार्टियों के मुखिया पूरी तरह से खामोश है। पूर्व के वर्षो में तेलंगाना में हुए चुनाव में प्रदेश के अल्पसंख्यक समाज ने थोक के भाव में केसीआर को वोट दिया और उसके बदले में उन्हें खामोशी मिल रही है। अब यह वक्त आ गया है कि हमें समझना पड़ेगा कि हमें किसका साथ देना है और किसका साथ नहीं देना है और अगर अभी भी नहीं समझे तो बहुत देर हो जाएगी। उन्होंने कहा कि अब यह वक्त आ गया है कि हमें अपने अस्तित्व को बचाना है और अगर हमारे अस्तित्व के चीजों में जो पार्टी हमारे साथ ना हो मुझे लगता है कि हमें भी उस पार्टी के साथ नहीं रहना चाहिए। ऐसे में राष्ट्रीय प्रजा राज्य पार्टी तेलंगाना और आंध्रा प्रदेश में अपना मजबूती से संगठन बना रही हैं और तेलंगाना राज्य मे मजबूती से चुनाव लड़ेंगी।

# अग्रवाल समाज, तेलंगाना द्वारा हैप्पीनेस प्रोग्राम आयोजित

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। अग्रवाल समाज, तेलंगाना के आध्यात्मिक समिति द्वारा योगा, प्राणायाम, मेडिटेशन तथा सुदर्शन क्रिया पर आधारित श्री श्री रविशंकर जी द्वारा प्रदत्त आर्ट ऑफ़ लिविंग के हैप्पीनेस प्रोग्राम का आयोजन हिमयत्नगर नगर शाखा के केंद्रीय समिति सदस्य तथा आध्यात्मिक समिति उपाध्यक्ष डीपी अग्रवाल जी के निवास पर 13 से 16 सितंबर तक प्रतिदिन शाम 5 से 8 बजे तक आयोजित किया गया।

आज यहाँ कमेटी के उपाध्यक्ष पवन कुमार अग्रवाल द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में उक्त जानकारी दी गई। आध्यात्मिक समिति द्वारा हैप्पीनेस प्रोग्राम के सफल आयोजन पर अग्रवाल समाज अध्क्षय मनीष अग्रवाल ने बधाई दी। अवसर पर सुदर्शन क्रिया इंस्ट्रक्टर श्रीमति मंजू रानी ने तनाव कम करने, ऊर्जा स्तर बढ़ाने, बेहतर पारस्परिक कौशल विकास के साथ साथ ध्यान केन्द्र एवं स्वास्थ्य सुधार के संबंध में प्राणायाम एवं सुदर्शन क्रिया के तकनीक सिखाये। 16 सितंबर को अंतिम प्रोग्राम के अंतिम सत्र एवं समापन के अवसर पर समिति के उपाध्यक्ष डीपी अग्रवाल एवं पवन कुमार अग्रवाल द्वारा श्रीमति मंजू रानी शॉल एवं स्मृति चिन्ह से सम्मान किया। समिति के अध्क्षय संजय पंसारी ने बताया कि अग्रवाल समाज, तेलंगाना के आध्यात्मिक समिति द्वारा आर्ट ऑफ़ लिविंग से सम्बंधित अन्य प्रोग्राम्स का आयोजन भी समय समय पर आयोजित किये जायेंगे। आर्ट ऑफ़ लिविंग के हैप्पीनेस प्रोग्राम के अगले बैच के लिए पंजीकरण जल्द ही शुरू किये जायेंगे। पंजीकरण या अन्य जानकारी के लिए हैदरगुड़ा शाखा के मनोनीत केन्दीय समीति सदस्य अजय अग्रवाल, डीपी अग्रवाल या पवन कुमार अग्रवाल से सम्पर्क किया जा सकता है।

## अग्रवाल समाज द्वारा राजस्थान से आए तीर्थयात्रियों का स्वागत

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। श्रीसैलम में आयोजित शिव पुराण का रसपान हेतु राजस्थान से पधारे 350 तीर्थ यात्रियों का अग्रवाल समाज की हब्सीगुड़ा शाखा ने काचीगुड़ा स्टेशन पर स्वागत किया और जलपान की व्यवस्था कराई। इस अवसर पर शाखा के अध्यक्ष विपीन अग्रवाल, मंत्री मनीष अग्रवाल,केंद्रीय समिति सदस्य हरमोहन सराफ, संदीप अग्रवाल, जयप्रकाश अग्रवाल, सज्जन सराफ, आलोक टिबरेवाल उपस्थित थे। महिला शक्ति का भी इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के संजोजक पुनीत बंसल ने सभी सदस्यों का कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया।

## केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा भाषण प्रतियोगिता आयोजित

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के हैदराबाद केंद्र द्वारा हिंदी को घर-घर पहुंचाने की दिशा में हिंदी माह के अंतर्गत विभिन्न शिक्षानुष्ठानों में कई प्रतियोगिताएं आयोजित कर बच्चों को प्रोत्साहित कर रहा है। इसी कड़ी में आज एवी कॉलेज ऑफ आर्ट्स, कामर्स एंड साइंस, दोमलगुड़ा में भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें भारी संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के हैदराबाद केंद्र के प्रमुख डॉ. गंगाधर वानोडे की उपस्थिति में प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शशिकांत मिश्र ने सभी विद्यार्थियों को धन्यवाद दिया।

# बीडीएल ने हैदराबाद में सीसीटीवी कैमरे लगाने के लिए फंड दिया

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। रक्षा मंत्रालय के तहत भारत सरकार के उद्यम भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बीडीएल) ने हैदराबाद के पुराने शहर में सीसीटीवी कैमरे की स्थापना के लिए 30 लाख रुपये की राशि का योगदान दिया है। उक्त योगदान बीडीएल द्वारा हैदराबाद सिटी पुलिस द्वारा शुरू किए गए 'सीसीटीवी निगरानी परियोजना' के लिए किया गया है।

बीडीएल के निदेशक (वित्त) एन. श्रीनिवासुलु ने श्री चौधरी को चेक प्रदान किया। आज बीडीएल कंचनबाग यूनिट में पीवी राजा राम, निदेशक (उत्पादन), बीडीएल और बीडीएल और हैदराबाद सिटी पुलिस के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में हैदराबाद के पुराने शहर के महत्वपूर्ण स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाने का उद्देश्य कानून लागू करने वाली एजेंसियों को घटनाओं की निगरानी करने और अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देने में सहायता करना है, जिससे क्षेत्र की सुरक्षा मजबूत होगी।

# महिला आरक्षण बिल पारित कर केंद्र ने ऐतिहासिक काम किया : अमरसिंह राजपुरोहित

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। केन्द्र की मोदी सरकार ने महिला आरक्षण बिल को संसद में पास करवा कर ऐतिहासिक काम किया। भारत एक नारी प्रधान राष्ट्र है, इस देश की पहचान नारी शक्ति के रूप में हैं। हमारे देश का नाम है भारत माता की जय, भारत को छोडकर विश्व के कोई अन्य देश की पहचान मातृ शक्ति के रूप में नहीं है। हमारे देश में नारी शक्ति ने कई ऐसे कार्य किये है, जो इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। चाहे राजनिति में हो या युद्ध भूमि में हो या अन्य क्षेत्र में, जैसे महाशक्ति लक्ष्मीबाई, महारानी दुर्गावती, महारानी पद्मावती, इंदिरा गांधी, सुषमा स्वराज एवं अन्य कई महिलाओं ने साहसिक कार्य किये है। आने वाले समय में भारत का लोकतंत्र अवश्य और मजबूत होगा।

## ग्रुप-4 के परिणाम अक्टूबर के पहले सप्ताह में घोषित किए जाएंगे

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। समूह-4 सेवा भर्ती परीक्षा परिणाम अक्टूबर के पहले सप्ताह में घोषित होने की संभावना है। 1 जुलाई को परीक्षा आयोजित करने वाले तेलंगाना राज्य लोक सेवा आयोग (टीएसपीएससी) ने पहले ही परीक्षा के लिए प्रारंभिक कुंजी जारी कर दी है और 30 अगस्त से 4 सितंबर के बीच उम्मीदवारों से आपत्तियां, यदि कोई हों, प्राप्त की थीं। अभ्यर्थियों से प्राप्त आपत्तियों को विशेषज्ञ समिति को भेजा गया, जिसने उन पर गौर किया और आयोग को अंतिम रिपोर्ट दी। टीएसपीएससी आयोग की गुरुवार को हुई बैठक में आपत्तियों पर विस्तृत चर्चा हुई। हालाँकि, कोई निर्णय नहीं लिया गया। आयोग की शुक्रवार को फिर से बैठक होने की उम्मीद है। टीएसपीएससी कुछ दिनों में अंतिम कुंजी अधिसूचित करेगा। इसके बाद परिणाम अक्टूबर के पहले सप्ताह में जारी होने की उम्मीद है। टीएसपीएससी ने सीधी भर्ती के लिए विभिन्न विभागों में समूह-4 सेवाओं के तहत 8,180 रिक्तियां अधिसूचित की थीं। इस परीक्षा के लिए 9.51 लाख अभ्यर्थियों ने पंजीकरण कराया था और 7,62,872 अभ्यर्थी उपस्थित हुए थे।

**उप्पल डिपो बुद्धानगर काग परिवार द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में उपस्थित कोरेमुला सीरवी समाज संरक्षक प्रभुराम परिहारियां, कोषाध्यक्ष पोकरराम पंवार, ओगड़राम सैंणचा, जीडिमेटला सीरवी समाज उपाध्यक्ष अर्जुनलाल बर्फा, परबत सोलंकी, जयराम, सुनिल, जितेन्द्र काग, गोपाराम, बाबुलाल मुलैवा व अन्य।**

## हाईकोर्ट ने सिंगरेनी जूनियर असिस्टेंट भर्ती प्रक्रिया को दी हरी झंडी

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना उच्च न्यायालय की दो सदस्यीय पीठ ने गुरुवार को अपना फैसला सुनाया, जिसमें सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी को एक साल पहले उसके द्वारा आयोजित कनिष्ठ सहायक (क्लर्क) के पदों को भरने की प्रक्रिया जारी रखने की अनुमति दी गई। हाल ही में, उच्च न्यायालय के एकल न्यायाधीश ने फैसला सुनाया कि उसी परीक्षा को रद्द करना होगा। फैसले को सिंगरेनी कंपनी और परीक्षा लिखने वाले उम्मीदवारों ने चुनौती दी थी। न्यायमूर्ति अभिनंदन कुमार शाविली और न्यायमूर्ति अनिल कुमार की दो सदस्यीय पीठ ने सिंगरेनी के तर्कों से सहमति व्यक्त की और कंपनी द्वारा एक साल पहले आयोजित कनिष्ठ सहायक लिखित परीक्षा को बरकरार रखा। इससे एक साल से अधिक समय से इंतजार कर रहे योग्य उम्मीदवारों के सपने साकार होंगे।

4 सितंबर, 2022 को सिंगरेनी कंपनी ने तेलंगाना के आठ जिलों के 187 परीक्षा केंद्रों पर 188 रिक्त कनिष्ठ सहायक पदों की भर्ती के लिए लिखित परीक्षा आयोजित की। परीक्षा अग्रणी जेएनटीयूएच के प्रबंधन के तहत आयोजित की गई थी। कुल 98,882 उम्मीदवारों ने आवेदन किया था, जिनमें से 77,908 उम्मीदवार लिखित परीक्षा में उपस्थित हुए थे। कुल 49,328 उम्मीदवारों ने कंप्यूटर आधारित मूल्यांकन में न्यूनतम योग्यता हासिल की है। हालांकि, कुछ उम्मीदवारों ने जेएनटीयू द्वारा आयोजित परीक्षा पर आपत्ति जताते हुए परीक्षा रद्द करने की मांग करते हुए अदालत का दरवाजा खटखटाया था।

# एशियन गेम्स विमेंस क्रिकेट भारत बनाम मलेशिया

## भारत सेमीफाइनल में पहुंचा, शेफाली वर्मा ने खेली अर्धशतकीय पारी

कोलंबो, 21 सितंबर (एजेंसियां)। एशियन गेम्स में भारतीय महिला क्रिकेट टीम सेमीफाइनल में पहुंच गई है। एशियन गेम्स का पहला क्वार्टरफाइनल आज भारत और मलेशिया के बीच खेला गया। बारिश के कारण यह मैच रद्द नो रिजल्ट रहा।

टॉस जीतकर मलेशिया ने पहले फील्डिंग का फैसला किया। बारिश की वजह से यह मैच 15-15 ओवर का कर दिया गया था। पहले बल्लेबाजी करते हुए टीम इंडिया ने मलेशिया के खिलाफ दो विकेट खोकर 173 रन बनाए।

टारगेट का पीछा करते हुए मलेशिया की पारी शुरू तो हुई लेकिन सिर्फ दो गेंद फेंकने के बाद ही बारिश आ गई और फिर से खेल रोक दिया गया। जब बारिश आई तब मलेशिया का स्कोर बिना किसी नुकसान के एक रन था, काफी देर तक बारिश नहीं

रुकने की वजह से मैच रद्द कर दिया गया।

भारत के लिए शेफाली वर्मा ने सबसे ज्यादा 67 रन बनाए। उनके अलावा जेमिमा रोड्रिगेज ने नाबाद 47 और कप्तान स्मृति मंधाना ने 27 रन का योगदान दिया। ऋचा घोष ने अंत में ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए सात गेंद में नाबाद 21 रन बनाए। मलेशिया की ओर से माहिरा इस्माइल और मास एलिसा को एक-एक विकेट मिला।

**क्रिकेट मैच पहले क्यों खेला जा रहा**

एशियन गेम्स में कई इवेंट के क्वालिफायर मुकाबले 23 सितंबर से पहले ही शुरू हो रहे हैं। इसीलिए विमेंस क्रिकेट के क्वालिफायर मुकाबले भी 19 सितंबर से शुरू किए गए। विमेंस क्रिकेट का फाइनल मुकाबला 25 सितंबर को खेला जाएगा।

**सभी मुकाबले टी-20 फॉर्मेट में खेले जाएंगे**

चीन के हांगझोउ शहर में इस साल 23 सितंबर से 8 अक्टूबर तक एशियन गेम्स होंगे। 4 साल में एक बार होने वाले एशियन गेम्स में इस बार फिर क्रिकेट को शामिल किया गया है। विमेंस कैटेगरी के मैच 19 सितंबर से शुरू हो चुके हैं। सभी मुकाबले टी-20 फॉर्मेट में खेले जाएंगे। मेंस इवेंट के क्वार्टरफाइनल अक्टूबर में शुरू होंगे।

**कितनी टीमें हिस्सा लेंगी?**

विमेंस इवेंट में 8 टीमें हिस्सा ले रही हैं। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश की टीमें सीधे क्वार्टरफाइनल खेलेंगी। बाकी 4 टीमों को 2 ग्रुप में बांटा गया है।

# भारत की वर्ल्ड कप जर्सी लॉन्च

## कंधों पर तिरंगे का कलर लगाया; '3 का ड्रीम' थीम सॉन्ग में रोहित-कोहली भी दिखे

खेल डेस्क, 21 सितंबर (एजेंसियां)। वनडे वर्ल्ड कप के लिए टीम इंडिया की नई जर्सी लॉन्च हो चुकी है। किट स्पॉन्सर एडिडास ने जर्सी के कंधों वाली जगह पर तिरंगे के कलर एड किए हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने '3 का ड्रीम है अपना' थीम सॉन्ग के साथ जर्सी रिवील की।

वनडे वर्ल्ड कप 5 अक्टूबर से भारत में खेला जाएगा। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने वर्ल्ड कप का ऑफिशियल सॉन्ग भी रिलीज किया।

**कंधों पर तिरंगे का कलर दिया**

एडिडास इस साल जून में ही भारत का जर्सी स्पॉन्सर बना। तब जारी हुई टीम इंडिया की वनडे जर्सी में कंधों पर सफेद कलर की 3 लाइनें बनी थीं। उन लाइनों को अब तिरंगे के कलर का कर दिया गया है, यानी सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी बनाई गई है।

**रोहित, कोहली और हार्दिक भी दिखे थीम सॉन्ग में**

सॉन्ग 'इम्पॉसिबल नहीं है ये सपना, 3 का ड्रीम है अपना' की थीम पर बनाया गया। 3 का ड्रीम यानी भारत के तीसरी बार वनडे वर्ल्ड कप जीतने के सपने को गाने की मदद से दर्शाया गया। टीम इंडिया ने 1983 और 2011 में 2 बार वनडे वर्ल्ड कप जीता है।

गाने में भारत के कप्तान रोहित शर्मा, विराट कोहली, हार्दिक पंड्या, शुभमन गिल, शार्दूल ठाकुर, रवींद्र जडेजा और मोहम्मद सिराज नजर आए।

**वॉर्म-अप मैच में नई जर्सी पहनेगी टीम इंडिया**

वर्ल्ड कप 5 अक्टूबर से शुरू हो रहा है, लेकिन टीम इंडिया वॉर्म-अप मुकाबलों में ही नई जर्सी पहन कर मैदान पर उतर जाएगी। टीम इंडिया 30 सितंबर को इंग्लैंड के खिलाफ पहला वॉर्म-अप मैच खेलेगी। 3 अक्टूबर को टीम का वॉर्म-अप मैच नीदरलैंड से होगा। इन दोनों ही मुकाबलों में भारतीय खिलाड़ी नई जर्सी पहन कर उतरेंगे।

वर्ल्ड कप में टीम इंडिया का पहला मैच 8 अक्टूबर को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होगा। यह मुकाबला चेन्नई के एमएम चिदंबरम स्टेडियम में खेला जाएगा।

**वर्ल्ड कप 5 अक्टूबर से 19 नवंबर तक चलेगा**

वनडे वर्ल्ड कप 5 अक्टूबर से शुरू होगा। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में डिफेंडिंग चैम्पियन इंग्लैंड और पिछली रनर-अप न्यूजीलैंड टीम के बीच ओपनिंग मुकाबला होगा। 12 नवंबर तक ग्रुप स्टेज के 45 मुकाबले होंगे। 15 और 16 नवंबर को 2 सेमीफाइनल होंगे, वहीं 19 नवंबर को अहमदाबाद में ही फाइनल खेला जाएगा।

# रोइंग में पुरुष टीम फाइनल में पहुंची

## लाइट वेट डबल्स स्कल में अर्जुन लाल जाट- अरविंद सिंह रेपेचेप राउंड में रहे टॉप पर

कोलंबो, 21 सितंबर (एजेंसियां)। रोइंग के लाइट वेट डबल्स स्कल में अर्जुन लाल जाट और अरविंद सिंह एशियन गेम्स के फाइनल में पहुंच गए हैं। उन्होंने रेपेचेप राउंड में 6.55.78 का समय लेकर टॉप पर रहे। अब वे 24 सितंबर को फाइनल में हिस्सा लेंगे। एशियन गेम्स चीन के हांगझू में अधिकारिक रूप से 23 सितंबर से शुरू होगा और 8 अक्टूबर तक चलेगा। वहीं कई इवेंट के क्वालिफाइंग 19 सितंबर से शुरू हो चुका है।

**वॉलीबॉल में भारतीय टीम ने एशियन गेम्स में किया उलटफेर**

भारतीय पुरुष वॉलीबॉल टीम ने एशियन गेम्स में बड़ा उलटफेर किया है। भारतीय टीम ने 3 बार की गोल्ड मेडलिस्ट साउथ कोरिया को 3-2 से हराया। यह पिछले 10 साल में भारत की साउथ कोरिया पर पहली जीत है। टीम की मौजूदा रैंकिंग 73 है, जबकि कोरिया 27वें नंबर की टीम हैं। कोरिया एशियाड के 3 गोल्ड मेडल जीते हैं। टीम पिछले सीजन में रनरअप रही थी।

# एशियन गेम्स में भारत का बड़ा उलटफेर : मेंस टीम ने 3 बार की वॉलीबॉल चैंपियन साउथ कोरिया को हराया, नॉकआउट राउंड में

हांगझोउ, 21 सितंबर (एजेंसियां)। भारतीय पुरुष वॉलीबॉल टीम ने एशियन गेम्स में बड़ा उलटफेर किया है। भारतीय टीम ने 3 बार की गोल्ड मेडलिस्ट साउथ कोरिया को 3-2 से हराया। यहां चीन के हांगझोउ शहर में चल रहे गेम्स में भारतीय रोअर्स ने 4 इवेंट के फाइनल में जगह बनाई। 4 इवेंट के फाइनल ए के रेपचेज में और एक इवेंट के फाइनल ए के लिए क्वालिफाई किया। बलराज पवार मेंस सिंगल स्कल इवेंट के सेमीफाइनल में पहुंचे।

यह पिछले 10 साल में भारत की साउथ कोरिया पर पहली जीत है। टीम की मौजूदा रैंकिंग 73 है, जबकि कोरिया 27वें नंबर की टीम हैं। कोरिया एशियाड के 3 गोल्ड मेडलिस्ट हैं। टीम पिछले सीजन में रनरअप रही थी।

भारतीय टीम ने करीब 2 घंटे 38 मिनट तक चले मुकाबले में पिछले सीजन की सिल्वर मेडलिस्ट साउथ कोरिया 3-2 (25-27 29-27 25-22 20-25 17-15) से हराया। नॉकआउट राउंड में भारतीय टीम का सामना चीनी ताइपे या मंगोलिया से होगा।

इस जीत से भारतीय टीम ने ग्रुप सी के टॉप पर रहते हुए नॉकआउट राउंड में प्रवेश किया। टीम ने एक दिन पहले कंबोडिया को 3-0 से हराया था।

इन खेलों में भारत ने अब तक वॉलीबॉल के कुल 3 मेडल जीते हैं। भारतीय टीम को एशियाड में वॉलीबॉल का आखिरी मेडल 1986 में जीता था, तब भारत ने ब्रॉन्ज जीता था। इससे पहले 1962 में सिल्वर और 1958 में ब्रॉन्ज हासिल किया था। गेम्स के पिछले सीजन में भारतीय टीम 12वें स्थान पर रही थी।

दूसरी ओर, साउथ कोरिया ने वॉलीबॉल के कुल 31 मेडल जीते हैं, इनमें पुरुष वॉलीबॉल के 3 गोल्ड मेडल भी शामिल हैं।

भारतीय रोअर्स में एशियाड में मेडल की उम्मीदों को बरकरार रखा है। भारतीय रोअर्स ने 4 इवेंट के फाइनल में जगह बनाई। 4 इवेंट के फाइनल-ए के रेपचेज में और एक इवेंट के फाइनल ए के लिए क्वालिफाई किया। बलराज पवार मेंस सिंगल स्कल इवेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश कर गए।

हीट्स रेस में भारतीय की पुरुष और महिला टीमों ने लाइटवेट डबल स्कल इवेंट के फाइनल ए के रेपचेज राउंड में प्रवेश किया। टीमें रेपचेज जीतकर फाइनल ए में उतरेंगी। वहां से जीतकर फाइनल रेस का हिस्सा बनेंगी।

पुरुषों के लाइटवेट डबल स्कल में अर्जुन लाल जाट और अरविंद सिंह ने हीट में 6:27.45 के समय के साथ दूसरे स्थान पर रहे। इसके अलावा सतनाम सिंह और परमिंदर सिंह भी 6:27.01 के समय के साथ अपनी हीट में दूसरे स्थान पर रहे। पुरुषों के दोनों ही अब रेपेचेज राउंड में हिस्सा लेंगी।

# ट्रायल छूट पर बोले विनेश फोगाट के पति

## सोमवीर ने कहा- पहलवानों में फूट डालने की रची गई साजिश, बृजभूषण का विरोध जारी रहेगा

पानीपत, 21 सितंबर (एजेंसियां)। एशियन गेम्स में बिना ट्रायल के विनेश फोगाट और बजरंग पूनिया को सीधे प्रवेश देने का मामला ठंडा नहीं पड़ रहा है। आए दिन इस मामले में कोई न कोई बड़ा बयान सामने आ रहा है। इसी बीच विनेश फोगाट के पति सोमवीर राठी ने पत्रकार वार्ता कर बड़े खुलासे और दावे किए हैं। हालांकि बजरंग और विनेश इस मामले पर पहले भी सफाई दे चुके हैं।

सोमवीर राठी ने सबसे पहले दिल्ली के जंतर मंतर पर बृजभूषण शरण के खिलाफ चल रहे धरने के समाप्त करने के सवाल पर कहा कि 28 मई को हमारे देश के सामाजिक संगठनों, खाप पंचायतों व किसान संगठनों ने पहली बार एक महिला पंचायत की घोषणा दिल्ली के नए संसद भवन के सामने की थी।

जब हम वहां पर पंचायत करने जा रहे थे तो दिल्ली पुलिस ने हमें जबरदस्ती वहां से हिरासत में लिया। इसके बाद धरने से हमारा सारा सामान उठा दिया। हमने

धरना समाप्त नहीं किया था और बृजभूषण शरण के खिलाफ हमारा धरना और विरोध लगातार जारी रहेगा। जब तक बृजभूषण शरण जेल नहीं जाएगा।

**योगेश्वर दत्त पहले खुद में झांके, फिर उठाए अंगुली**

उन्होंने कहा कि निगरानी कमेटी के सदस्यों योगेश्वर, बबीता फोगाट, मैरी कॉम से हम सभी आस लगाकर बैठे थे कि अब न्याय मिलेगा, लेकिन फेडरेशन में उसके आदमी है जो कि उसको बचा रहे हैं। सरकार उसको बचा रही है।

उन्होंने कहा कि योगेश्वर दत्त हमारे लिए बड़े भाई हैं और जिस तरह के उनके बयान सामने आ रहे हैं वह बिल्कुल भी अच्छे नहीं हैं। हम उनसे कहना चाहेंगे कि पहले अपने आप में झांक कर देखें तब औरों पर उंगली उठाएं। उन्होंने कितने पहलवानों को द्रोणाचार्य अवॉर्ड दिलवाया है, वह खुद जानते हैं।

**बबीता फोगाट पर भी जमकर बरसे**

अगर विनेश फोगाट ने पहलवान ओमप्रकाश दहिया को द्रोणाचार्य अवॉर्ड के लिए नॉमिनेट किया तो वह सरकार में बैठे थे। वो कोर्ट में जा सकते थे। उन्होंने कहा कि हमने यह सुना था कि अगर कोई भाई भी अगर राजनीति में चला गया तो वह केवल अपने भले और अपनी कुर्सी के बारे में सोचता है, उसे केवल अपना स्वार्थ दिखता है। सीधे-सीधे तौर पर सोमवीर राठी ने बबीता फोगाट को स्वार्थी बता डाला।

सोमबीर राठी ने कहा कि बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट का एशियन गेम्स के लिए बिना ट्रायल चयन पहलवानों को आपस में लड़वाने के लिए किया गया था। साथ ही कहा कि दिल्ली में धरना खत्म नहीं किया था, लेकिन पुलिस ने हिरासत में लेकर जबरन खत्म करवाया था।

# मोहाली में भारत- ऑस्ट्रेलिया वनडे आज

## दोनों टीमों ने अलग-अलग समय अभ्यास किए

## क्रिकेट स्टेडियम में सुरक्षा के चाक-चौबंद इंतजाम

चंडीगढ़, 21 सितंबर (एजेंसियां)। पंजाब में मोहाली के आईएस बिंद्रा इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 3 दिवसीय वनडे श्रृंखला का पहला मैच कल से खेला जाएगा। यह मैच डे नाइट होगा। इसके लिए दोनों टीमें चंडीगढ़ पहुंच चुकी हैं। दोनों क्रिकेट टीमें चंडीगढ़ के आईटी पार्क स्थित होटल द ललित में रुकी हुई हैं। उनकी सुरक्षा को लेकर चाक-चौबंद इंतजाम किए गए हैं।

**दोनों टीमें करेंगी अभ्यास**

भारत और ऑस्ट्रेलिया की टीम आज स्टेडियम पर पहुंचकर अभ्यास करेंगी। इसमें ऑस्ट्रेलिया की टीम 1:00 बजे से और भारत की टीम शाम 5:00 बजे से क्रिकेट का अभ्यास करेंगी। इसके लिए लोकल खिलाड़ी उन्हें नेट पर प्रैक्टिस कराएंगे।

**मैच पर बारिश का साया**

शुक्रवार को होने वाले भारत-ऑस्ट्रेलिया वनडे मैच पर बारिश

का भी खतरा मंडरा रहा है। क्योंकि मौसम विभाग की तरफ से शुक्रवार को चंडीगढ़, मोहाली और पंचकूला में बारिश के आसार बताए गए हैं। पिछले कई दिनों से ट्राईसिटी को मौसम विभाग ने आइसोलेशन जोन में रखा था। लेकिन शुक्रवार को गरज और चमक के साथ यहां पर बारिश की संभावना जताई है। इस कारण होने वाले इस मैच पर भी खतरा मंडराया हुआ है।

**स्टार खिलाड़ियों के बिना उतरेगी भारतीय टीम**

भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार खिलाड़ी विराट कोहली, कप्तान रोहित शर्मा, उप कप्तान हार्दिक पांड्या के बिना ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत मैदान में उतरेगी। इससे क्रिकेट प्रशंसकों को निराशा जरूर होगी। लेकिन प्रशंसक इस मुकाबले में भारतीय टीम को जीतते हुए देखना चाहते हैं। भारत और ऑस्ट्रेलिया की बीच 3 मैचों के मुकाबले में यह पहला मैच है।

**दोनों टीमें करेंगी प्रेस कॉन्फ्रेंस**

भारत और ऑस्ट्रेलिया दोनों की क्रिकेट टीम आज प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करेंगी। इसमें 12:15 ऑस्ट्रेलिया की टीम प्रेस को संबोधित करेंगी। उसके बाद 1:00 से अपना अभ्यास शुरू करेगी। वही भारतीय क्रिकेट टीम 5:15 मीडिया से मुखातिब होगी।

**स्टेडियम में किए बदलाव**

पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम को वर्ल्ड कप में एक भी मैच की मेजबानी न मिलने के कारण अब स्टेडियम में कुछ बदलाव किए गए हैं। इसमें खिलाड़ियों के ड्रेसिंग रूम को अपग्रेड किया गया है। वहीं दर्शकों के लिए बने हुए बॉक्स में भी कुर्सियां बदली गई है। इसके अलावा मीडिया बॉक्स में भी इंटीरियर बदला गया है।

# आर्थिक तंगी से जूझ रहा भारत का नंबर-1 टेनिस स्टार

## सुमित नागल बोले- मैं टूट रहा हूं, मेरे खाते में सिर्फ 80 हजार रुपए बचे हैं

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। भारत के नंबर-1 टेनिस स्टार सुमित नागल आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। एटीपी टूर में खेलने के लिए एक करोड़ रुपए के बजट की व्यवस्था करने के बाद नागल के बैंक खाते में लगभग 80 हजार रुपए (900 यूरो) ही बचे हैं और वे अच्छी जिंदगी नहीं जी पाने के कारण निराश हैं।

सुमित नागल एटीपी सिंगल रैंकिंग में 159वें स्थान पर हैं, जो भारतीयों में सर्वश्रेष्ठ है। नागल ने न्यूज एजेंसी पीटीआई से बातचीत में अपना दर्द बयां किया।

नागल ने कहा, 'मेरे पास बचत के नाम पर कुछ भी नहीं है और मैं टूट रहा हूं। मैं यह नहीं कह सकता कि मैं बहुत अच्छी जिंदगी जी रहा हूं जहां मुझे काम करने की जरूरत नहीं है। मैंने पिछले दो वर्षों में खास कमाई नहीं की है।'

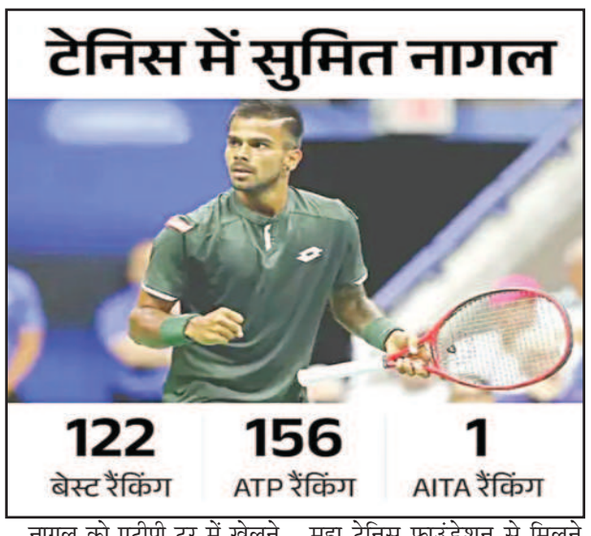


नागल को एटीपी टूर में खेलने के लिए एक करोड़ रुपए देने थे। इसके लिए उन्होंने अपनी सारी पुरस्कार राशि, आईओसीएल से मिलने वाला अपना वेतन और महा टेनिस फाउंडेशन से मिलने वाली सहायता राशि को खर्च किया।

खिलाड़ियों का यह खर्च प्रैक्टिस सेंटर में रुकने और अपने कोच या फिजियो के साथ टूर्नामेंट के लिए यात्राओं पर होता है। राशि जमा करने के बाद नागल अपना और अपने परिवार का खर्च तक नहीं चला पा रहे हैं।

नागल पिछले कुछ वर्षों से जर्मनी की नानसेल टेनिस अकादमी में अभ्यास कर रहे थे, लेकिन पैसों की कमी के कारण वे 2023 के सत्र के शुरुआती तीन महीनों में अपने पसंदीदा स्थान पर अभ्यास नहीं कर पाए। उनके मित्र सोमदेव देववर्मन और क्रिस्टोफर मार्कुइस ने जनवरी और फरवरी में उनकी मदद की थी।

नागल ने कहा कि अगर मैं अपने बैंक में जमा धनराशि की बात करूं तो मेरे पास इतनी ही राशि है, जितनी की वर्ष के शुरुआत में थी। यह 900 यूरो (लगभग 80,000 रुपए) है। मुझे थोड़ी मदद भी मिली। महा टेनिस फाउंडेशन के प्रशांत सुतार मेरी मदद कर रहे हैं और मुझे आईओसीएल से मासिक (वेतन) भी मिलता है, लेकिन मेरे पास कोई बड़ा प्रायोजक नहीं है।

नागल ने इस साल 24 टूर्नामेंट में हिस्सा लिया, जिनसे उन्होंने लगभग 65 लाख रुपए की कमाई की। उन्हें सबसे बड़ी पुरस्कार राशि अमेरिकी ओपन से मिली जहां वह क्वालिफायर के पहले दौर में हार गए थे, लेकिन इसके बावजूद उन्हें 22000 अमेरिकी डॉलर (लगभग 18 लाख रुपए) मिले। उन्होंने कहा- मैं जो भी कमाई कर रहा हूं उसे खर्च कर दे रहा हूं। मेरा वार्षिक खर्च लगभग 80 लाख से लेकर एक करोड़ रुपए तक है और यह भी तब है, जब मैं केवल एक कोच के साथ यात्रा करता हूं। मैंने जो भी कमाया, उसे खर्च भी कर दिया।

# वर्ल्ड कप में 70 मीटर की होगी बाउंड्री

## पिच पर घास भी रहेगी, आईसीसी ने सभी 10 वेन्यू के पिच क्यूरेटर्स को दिया निर्देश

नई दिल्ली, 21 सितंबर (एजेंसियां)। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने भारत में 5 अक्टूबर से शुरू हो रहे वर्ल्ड कप के सभी वेन्यू के क्यूरेटर्स को पिच पर घास छोड़ने और बाउंड्री बड़ी बनाने के निर्देश दिए हैं। काउंसिल ने कम से कम 70 मीटर की बाउंड्री बनने को कहा है। भारत के कुछ मैदानों पर 60 से 65 मीटर की बाउंड्री हैं। टीओआई की खबर के अनुसार, भारत की पिचें आमतौर पर स्पिन के लिए ज्यादा मददगार होती हैं। आईसीसी ने क्यूरेटर को पिचों पर ज्यादा घास छोड़ने के लिए कहा है, ताकि तेज गेंदबाजों को भी मदद मिले। अखबार को सूत्र ने बताया कि उत्तर, पश्चिम और पूर्वी राज्यों में अक्टूबर-नवंबर में खूब ओस पड़ती है। चेन्नई और बेंगलुरु में होने वाले मैचों में बारिश की आशंका है। ओस से स्पिनर्स का परफॉर्मेंशन कमजोर होता है, क्योंकि बॉल गीली होने पर ग्रिप करने में मुश्किल होती है, ऐसे में बॉल कम

टर्न होती है। ऐसे में आईसीसी ने स्पिनर्स की निर्भरता कम करने के लिए पिच पर घास छोड़ने को कहा है। दूसरी तरफ ज्यादा घास होने से टीमों के पास तेज गेंदबाजों को आजमाने का मौका रहता है। आईसीसी ने बैट और बॉल के बीच बैलेंस बनाए रखने के लिए हर मैदान की बाउंड्री को बड़ी करने का आदेश दिया है। सभी स्टेडियम के क्यूरेटर्स को कह दिया गया है। बाउंड्री का साइज 70 मीटर होना चाहिए। इंटरनेशनल मैचों में बाउंड्री का मिनीमम साइज 65 मीटर होता है, जबकि मैक्सिमम साइज 85 मीटर का होता है। पुराने स्टेडियमों में बाउंड्री साइज 70-75 मीटर के बीच होता है, लेकिन अब बाउंड्री की साइज को 70 मीटर से ज्यादा करना होगा।

बीसीसीआई हेड सिलेक्टर अजीत अगरकर ने एक महीने पहले एशिया कप के लिए टीम की घोषणा करते हुए ओस फैक्टर को स्वीकार किया था। वर्ल्ड कप 2023 के मुकाबले 10 शहरों में खेले जाएंगे। जिनमें अहमदाबाद (नरेंद्र मोदी स्टेडियम), बेंगलुरु (एम चिन्नास्वामी स्टेडियम), चेन्नई (एमए चिदम्बरम स्टेडियम), दिल्ली (अरुण जेटली क्रिकेट स्टेडियम), धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम), हैदराबाद (राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, उप्पल) शामिल हैं।

इनके अलावा कोलकाता (ईडन गार्डन), लखनऊ (अटल बिहारी वाजपेयी इकाना क्रिकेट स्टेडियम), मुंबई (वानखेड़े स्टेडियम), पुणे (महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम) शामिल हैं। हैदराबाद के अलावा गुवाहाटी और तिरुवनंतपुरम 29 सितंबर से 3 अक्टूबर तक प्रैक्टिस मैचों की मेजबानी करेंगे।

# टीएस को पालमुरू के लिए सभी अनुमतियां मिलेंगी : हरीश राव

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। वित्त मंत्री टी. हरीश राव ने कहा कि कृष्णा जल विवाद न्यायाधिकरण द्वारा तेलंगाना को पालमुरु रंगारेड्डी लिफ्ट सिंचाई योजना में 90 टीएमसी पानी का उपयोग करने से रोकने की आंध्र प्रदेश की याचिका को खारिज करने के साथ तेलंगाना के लिए न्याय की जीत हुई है।

तेलंगाना को अब कृष्णा जल का 90 टीएमसी मिलेगा, जो राज्य का उचित हिस्सा है। गुरुवार को संगारेड्डी में कोल्लुरु चरण-I टाउनशिप में लाभार्थियों को 2 बीएचके हाउस पट्टों को सौंपने के लिए आयोजित एक समारोह में बोलते हुए, मंत्री ने कहा कि तेलंगाना सरकार पीआरएलआईएस के लिए सभी आवश्यक मंजूरी प्राप्त करेगी और कृष्णा जल उठाकर पलामुरू में सभी जलाशयों को भर देगी। उन्होंने कहा कि ताजा फैसले से यह साबित हो गया है कि देर होने पर भी न्याय मिलेगा। आंध्र प्रदेश की याचिका में कोई सच्चाई नहीं है। मंत्री ने ट्रिब्यूनल के फैसले को तेलंगाना और उसके लोगों की जीत बताया। 2बीएचके कॉलोनी में सभी सुविधाओं का आश्वासन देते हुए, जहां राज्य सरकार ने 16,700 से अधिक घर बनाए है। 2-बीएचके कॉलोनी को विधानसभा चुनाव के बाद सभी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करके नगर पालिका बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि जो लोग यहां आ रहे हैं उन्हें भविष्य में नगरपालिका अध्यक्ष या पार्षद बनने का मौका मिलेगा। सरकार 2-बीएचके कॉलोनी में स्कूल, अस्पताल, आंगनवाड़ी, राशन की दुकानें और अन्य सुविधाएं बनाएगी। कांग्रेस अपने शासन के दौरान घर बनाने के लिए सिर्फ 60,000 रुपये देती थी।

कांग्रेस सरकार बैंक में घर के दस्तावेज जमा करके ऋण के रूप में 40,000 रुपये और देती थी। हालाँकि, बीआरएस सरकार बेघरों को पूरा घर मुफ्त दे रही थी। लाभार्थियों से यह पूछने पर कि वे अब तक कितना किराया दे रहे थे, मंत्री ने कहा कि वे आज से ऐसे सभी बोझों से मुक्त हो जाएंगे। उन्होंने कहा, घरों के मालिकों को हैदराबाद में किरायेदार ढूंढना मुश्किल होगा क्योंकि सरकार द्वारा बड़ी संख्या में घर बनाए जा रहे हैं। इस अवसर पर विधायक गुडेम महिपाल रेड्डी, अरीकेपुडी गांधी, प्रकाश गौड़, मगंती गोपीनाथ, दानम नागेंद्र और अन्य उपस्थित थे।

## गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान कृष्णा नदी में दो लोग डूबे

विजयवाड़ा, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश के बापटला जिले में गुरुवार को गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान दो लोग कृष्णा नदी में डूब गए। यह घटना बापटला जिले के रेपल्ले मंडल के पेनुमुडी गांव में उस समय घटी जब कुछ युवा मूर्ति विसर्जन कर रहे थे। मृतकों की पहचान रेपल्ले निवासी विजय (22) और वेंकटेश (25) के रूप में हुई। पुलिस ने दोनों युवकों के शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिये हैं।

# पूर्व होमगार्ड की हत्या में आठ गिरफ्तार

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। आईएस सदन पुलिस ने गुरुवार को पूर्व होमगार्ड की हत्या के आरोप में आठ लोगों को गिरफ्तार करने का दावा किया है। गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों में ख्वाजा नईमुद्दीन (54), मोहम्मद सलीम (40), ख्वाजा फरीदुद्दीन (24), मोहम्मद फहद खान (31), दप्पुला हरि प्रसाद (28), गुलाम मोहम्मद खान (29), मोहम्मद अब्दुल रहमान (33) और मोहम्मद अकबर हुसैन (40) शामिल है। इस मामले में एक आरोपी सलाउद्दीन फरार है। डीसीपी (दक्षिण पूर्व) सीएच रूपेश ने बताया कि मृत रिजवान, संतोषनगर, भानुनगर का रहने वाला था। उसे बीते 11 सितंबर को सलीम और अन्य लोगों ने अपहरण कर लिया था और एक कार में एसी गार्ड में ले गए थे, जहां उसे एक इमारत में कैद कर दिया गया था। रिज़वान ने सलीम से अलग-अलग समय में 33 लाख रुपये लिए थे और पैसे चुकाने में देरी कर रहा था। पैसे पाने में असफल होने पर, सलीम ने अपने रिश्तेदारों नईम और फरीद से संपर्क किया, जिन्होंने पीड़ित का अपहरण करने और उससे पैसे इकट्ठा करने की योजना बनाई। अपहरण के बाद, उन्होंने उसे एक इमारत में बंद कर दिया और उसकी पिटाई की जिससे वह घायल हो गया और बाद में रिजवान की मौत हो गई।शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर आठ लोगों को गिरफ्तार कर लिया। फरार सलाउद्दीन को पकड़ने की कोशिशें जारी हैं।

# दिल्ली व बेंगलुरु के नेताओं के वादे सिर्फ धोखा : केटीआर

## मंत्री ने टू-बीएचके आवंटियों को स्वामित्व प्रमाण-पत्र दिया

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। नगरपालिका प्रशासन और शहरी विकास मंत्री केटी रामा राव ने लोगों को सलाह दी कि वे उन नेताओं द्वारा किए गए वादों से धोखा न खाएं जो दिल्ली और बेंगलुरु से तेलंगाना राज्य में आए थे। गुरुवार को यहां डुंडीगल में 2 बीएचके आवंटियों को स्वामित्व प्रमाण पत्र वितरित करने के बाद सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए, केटी रामा राव ने वादों के नाम पर तेलंगाना के लोगों को धोखा देने की कोशिश करने के लिए कांग्रेस नेताओं की आलोचना की और कहा कि कांग्रेस पार्टी के वादे कार्यान्वयन के लिए व्यवहार्य नहीं थे।

उन्होंने भाजपा और कांग्रेस दोनों पार्टियों से किसी भी राज्य में सरकारी आवासों को प्रदर्शित करने के लिए कहा जो तेलंगाना सरकार द्वारा बनाए जा रहे घरों के बराबर हों और कहा कि तेलंगाना का डिग्निटी हाउसिंग कार्यक्रम देश के किसी भी शहर के लिए सबसे बड़ा स्लम पुनर्विकास कार्यक्रम है। केटीआर ने कहा कि मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव तेलंगाना में गरीबों के कल्याण के लिए बहुत बड़े पैकेज पर काम कर रहे हैं और वह जल्द ही विवरण साझा करेंगे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पारदर्शी तरीके से डबल बेडरूम घरों के लाभार्थियों की पहचान कर रही है। मंत्री ने कहा कि कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता भी गरिमापूर्ण आवास कार्यक्रम के लाभार्थियों में है। इसी क्रम में आईटी और उद्योग मंत्री केटी रामा राव ने कहा कि तेलंगाना सबसे अधिक मानव संसाधनों वाला राज्य है और भारत में विकास की तीव्र प्रगति दर्ज करने के लिए इसके कई फायदे हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव के नेतृत्व में राज्य सरकार औद्योगीकरण और रोजगार सृजन के विकास के लिए सख्ती से काम कर रही है। मंत्री ने गुरुवार को यहां जीनोम वैली में 200 करोड़ रुपये के निवेश से स्थापित की जा रही भारत सीरम वैक्सीन की एक नई इंजेक्टेबल इकाई की शुरुआत की। "राज्य सरकार के साथ मतभेद के बावजूद, केंद्र सरकार को यह घोषणा करने के लिए मजबूर होना पड़ा कि तेलंगाना व्यापार करने में आसानी के मामले में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर है। प्रति व्यक्ति आय के मामले में तेलंगाना नंबर एक है। उन्होंने कहा कि मैं दुनिया में जहां भी जाता हूं, गर्व से कह सकता हूं कि हैदराबाद दुनिया की वैक्सीन राजधानी बन गया है। अभी दुनिया में बनने वाली 33 फीसदी वैक्सीन का उत्पादन हैदराबाद की जीनोम वैली से हो रहा है। हैदराबाद में 900 करोड़ वैक्सीन का उत्पादन होता है। उन्होंने कहा कि तेलंगाना पिछले नौ वर्षों से उद्योगों के लिए शीघ्र मंजूरी और निवेश आकर्षित करने और विभिन्न कल्याण और विकास कार्यक्रमों को लागू करने के लिए राजस्व का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। केटीआर ने कहा कि तेलंगाना सरकार 2030 तक जीवन विज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र को 80 अरब डॉलर से बढ़ाकर 250 अरब डॉलर करने का लक्ष्य रख रही है। इससे रोजगार बढ़ेगा और हैदराबाद बड़े पैमाने पर जटिल विनिर्माण के लिए जीवन विज्ञान केंद्र भी बन जाएगा।

# 39वां आरपीएफ स्थापना दिवस समारोह कल

## रेल राज्य मंत्री रावसाहेब पाटिल दानवे होंगे मुख्य अतिथि

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। दक्षिण मध्य रेलवे 23 सितंबर को आरपीएफ प्रशिक्षण केंद्र, मौला-अली, सिकंदराबाद में गहन ऐतिहासिक महत्व का एक कार्यक्रम, आरपीएफ स्थापना दिवस मनाएगा। कार्यक्रम में केंद्रीय रेल, कोयला और खान राज्य मंत्री रावसाहेब पाटिल दानवे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होंगे और परेड के दौरान सलामी लेंगे। दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक अरुण कुमार जैन, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों, राज्य पुलिस, विभिन्न सरकारी विभागों, रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी और अन्य प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर की शोभा बढ़ाएंगे। आरपीएफ की स्थापना आधिकारिक तौर पर 1957 में संसद के एक अधिनियम के माध्यम से की गई थी, जिसका प्राथमिक उद्देश्य रेलवे संपत्ति को सुरक्षा प्रदान करना था। 1966 में, बल को रेलवे संपत्तियों पर गैरकानूनी कब्जे में शामिल व्यक्तियों की जांच करने, गिरफ्तार करने और मुकदमा चलाने का अधिकार प्राप्त हुआ। यह रेलवे की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, आरपीएफ को 20 सितंबर 1985 को 'संघ के एक सशस्त्र बल' का दर्जा दिया गया था। इसी दिन को स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है। आरपीएफ स्थापना दिवस बल की वृद्धि और विकास का प्रतीक है। यह एक ऐसा दिन है जब सभी कर्मी उत्सव की भावना के साथ जनता के साथ खुशियाँ साझा करने के लिए एक साथ आएंगे और उनकी सेवा करने और व्यापक सार्वजनिक भलाई के लिए काम करने की हमारी प्रतिबद्धता दोहराएंगे। परेड में 200 से अधिक आरपीएफ कर्मी आरपीएफ बैंड की मधुर धुनों पर मार्च करते हुए शामिल होंगे। इसमें 11 प्लाटून शामिल होंगे और वे रेलवे सुरक्षा बल की विविधता और क्षमताओं का प्रदर्शन करेंगे, जिसमें एक महिला प्लाटून, आरपीएसएफ का एक प्लाटून, एक सीओआरएएस कमांडो प्लाटून, सेगवे राइडर्स का एक प्लाटून, आरपीएफ कुत्तों का एक प्लाटून और सेवानिवृत्त आरपीएफ कर्मियों का एक प्लाटून शामिल होगा। कार्यक्रम के दौरान रेल राज्य मंत्री 'विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक, सराहनीय सेवा के लिए भारतीय पुलिस पदक, सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक, उत्तम जीवन रक्षा पदक' और योग्य आरपीएफ कर्मियों को 'जीवन रक्षा पदक' जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान करेंगे।

## पुलिस ने दो अंतरराज्यीय चोरों को गिरफ्तार किया

नलगोंडा, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। नलगोंडा टाउन-I पुलिस ने दो अंतरराज्यीय चोरों को गिरफ्तार किया है और 20 तोला सोने के गहने और एक किलोग्राम चांदी जब्त की है, जिसकी कुल कीमत 14.2 लाख रुपये है।

गिरफ्तार किए गए लोगों में तमिलनाडु के चेन्नई से के इमरान खान (37) और मिर्यालागुडा से ई. ईश्वर (38) शामिल हैं। एक प्रेस विज्ञप्ति में, पुलिस अधीक्षक अपूर्व राव ने कहा कि पुलिस ने खान और ईश्वर को उस समय हिरासत में ले लिया जब वे पुराने शहर क्षेत्र में संदिग्ध रूप से घूम रहे थे। पूछताछ के दौरान, उन्होंने तत्कालीन नलगोंडा जिले में किए गए अपराधों को कबूल किया। उन्होंने नलगोंडा शहर में सात संपत्ति अपराधों सहित 21 घरों में चोरी की। उन्होंने कहा, वे बंद घरों को निशाना बनाएंगे।

# महावीर को-ऑपरेटिव अर्बन बैंक ने अत्तापुर में खोली नई शाखा

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। महावीर को-ऑपरेटिव अर्बन बैंक ने अत्तापुर में अपनी नई शाखा का शुभारंभ किया। शाखा का शुभारंभ उद्योगपति व समाजसेवी गौतमचंद चोरडिया ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अग्रसेन बैंक के निदेशक व समाजसेवी ओमप्रकाश अग्रवाल, उद्योगपति एवं समाजसेवी रुपेश गोलास, उद्योगपति एवं समाजसेवी सोहनलाल दायमा थे, जबकि सम्माननीय अतिथि के रूप में समाजसेवी महेंद्र विजयवर्गीय, अत्तापुर महर्षि गौतम आश्रम के अध्यक्ष जयप्रकाश जोशी, उद्योगपति श्यामसुंदर लाहोटी उपस्थित रहे। इनके अलावा बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स की ओर से चेयरमैन ओशक कोठारी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष हरिनारायण व्यास तथा उपाध्यक्ष महावीरचंद कोठारी, अनिता जैन, दामोदर झंवर, दामोदरदास विजयवर्गीय, गौतमचंद अलीजार, सीए जयप्रकाश सारड़ा, खुशपत डी. जैन, कीर्ति व्यास, सज्जनराज जे. नहर, सीए सतीश चंद्र, गोपाल बंग के अलावा बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट के सीए डीके जैन, नेमिचंद जैन, सुधा कीमती विजयकुमार चौधरी आदि उपस्थित रहे।

## वेंकैया नायुडू ने खैरताबाद में भगवान गणपति की पूजा की

हैदराबाद, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ आज यहां खैरताबाद में 63 फीट ऊंचे दशा महाविद्या गणपति के दर्शन किए और पूजा की। बाद में इस अवसर पर बोलते हुए, वेंकैया नायडू ने कहा कि वह यहां महा गणपति के दर्शन करके बहुत खुश हैं। उन्होंने कहा कि वह विधायक बनने के बाद से ही खैरताबाद महागणपति के दर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने भगवान से तेलुगु राज्यों के सभी लोगों को खुश और समृद्ध बनाने की प्रार्थना की है। उन्होंने कहा कि भक्ति वाले प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण संतुष्टि होगी और सभी वर्गों के लोगों के बीच एकता से देश मजबूत और समृद्ध होगा।

# लोकेश ने कही जेल में चंद्रबाबू की हत्या किये जाने की साजिश की बात

अमरावती, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलुगु देशम पार्टी के महासचिव नारा लोकेश ने ट्वीट किया है कि उनके पिता और टीडीपी अध्यक्ष एन. चंद्रबाबू नायडू को जेल में उनकी हत्या करने के इरादे से गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने गुरुवार को आरोप लगाया कि जमानत देने से इनकार करना और उन्हें राजमहेंद्रवरम सेंट्रल जेल में रखना घृणित साजिश का हिस्सा था। उन्होंने कहा कि जेल में कोई सुरक्षा नहीं है और जेल अधिकारी परिसर में मच्छरों के आतंक की शिकायतों पर कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। इस संदर्भ में लोकेश ने जेल के एक कैदी जी.वी. की मौत का हवाला दिया. सत्यनारायण को डेंगू हो गया है और उन्हें डर है कि चंद्रबाबू का भी यही हश्र हो सकता है। कैदी की मौत का कारण बताते हुए जेल के उप महानिरीक्षक और राजमहेंद्रवरम जेल के प्रभारी रविकिरन ने कहा कि सत्यनारायण को 6 सितंबर को डकैती के एक मामले में जेल में डाल दिया गया था। जब उनका तापमान बढ़ रहा था और उनका प्लेटलेट काउंट कम हो गया था, तो उन्हें राजामहेंद्रवरम अस्पताल में भर्ती कराया गया था और बाद में गंभीर देखभाल के लिए 19 सितंबर को काकीनाडा सरकारी जनरल अस्पताल ले जाया गया जहां बुधवार को उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने कहा कि कीट विज्ञान विभाग से संपर्क किया गया और बुधवार और गुरुवार को जेल में फॉगिंग की गई, और कहा कि जेल में लार्वा का कोई निशान नहीं था।

लोकेश के आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के राज्यसभा सदस्य वी. विजय साई रेड्डी ने ट्वीट किया कि टीडीपी मामलों ने संदेह को जगह दी है कि उसके नेता जेल में चंद्रबाबू को नुकसान पहुंचा सकते हैं। उन्होंने आगाह किया कि कुछ टीडीपी नेता स्पष्ट रूप से चंद्रबाबू की पीठ में छुरा घोंपने और उनका पद हथियाने के इच्छुक हैं और जेल अधिकारियों को ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए।

# चंद्रबाबू की गिरफ्तारी का विरोध कर रहे टीडीपी विधायक विधानसभा से निलंबित

अमरावती, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू की कथित कौशल विकास घोटाले में गिरफ्तारी के विरोध में गुरुवार को सदन की कार्यवाही रोकने का प्रयास कर रहे तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) के 18 विधायकों को आंध्र प्रदेश विधानसभा से निलंबित कर दिया गया। विधानसभा अध्यक्ष टी. सीताराम ने मुख्य विपक्षी दल के 15 विधायकों को एक दिन के लिए सदन से निलंबित करने की घोषणा की। उन्होंने तीन अन्य सदस्यों को पूरे सत्र के लिए निलंबित कर दिया। सीताराम ने घोषणा की कि अध्यक्ष के प्रति अनादर दिखाने के लिए वह पी. केशव, ए. सत्यप्रसाद और श्रीधर रेड्डी को सत्र की शेष अवधि के लिए निलंबित कर रहे हैं। गुरुवार सुबह सदन की बैठक शुरू होते ही टीडीपी सदस्य खड़े होकर नायडू की गिरफ्तारी पर बहस की मांग करने लगे।

जब अध्यक्ष ने उनके स्थगन प्रस्ताव को खारिज कर दिया, तो वे सदन के बीचों-बीच में आ गए और बाद में अध्यक्ष के आसन को घेर लिया। तख्तियां लेकर नारे लगाते हुए विपक्षी विधायकों ने सभापति से नायडू की 'अवैध' गिरफ्तारी का मुद्दा उठाने देने की मांग की। टीडीपी विधायक और अभिनेता एन. बालकृष्ण ने कथित तौर पर वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) सरकार को चेतावनी देते हुए अपनी मूंछें घुमाईं तो हंगामा मच गया। उनके कृत्य पर कड़ी आपत्ति जताते हुए जल संसाधन मंत्री अंबाती रामबाबू ने उन्हें याद दिलाया कि वह विधानमंडल में हैं, किसी फिल्म में नहीं। अध्यक्ष ने कहा कि उनका कृत्य आसन के प्रति अनादर दिखाने जैसा है। उन्होंने विधायक को चेतावनी दी कि अगर उन्होंने भविष्य में ऐसी हरकत की तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। हंगामे के बीच अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही कुछ देर के लिए स्थगित कर दी। जब सदन की बैठक दोबारा शुरू हुई तो टीडीपी सदस्यों ने अपना विरोध जारी रखा। सरकार की ओर से पेश प्रस्ताव पर अध्यक्ष ने टीडीपी विधायकों को निलंबित करने की घोषणा की। निलंबन के बाद विधायक विधानसभा के बाहर धरने पर बैठ गये। उन्होंने कहा कि वे नायडू की 'अवैध' गिरफ्तारी के खिलाफ आवाज उठाना जारी रखेंगे। टीडीपी ने विधान परिषद में भी विरोध-प्रदर्शन किया। विधायकों ने टीडीपी सुप्रीमो की गिरफ्तारी पर बहस की मांग की। विरोध के बीच परिषद के सभापति ने सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी। इससे पहले, पार्टी विधायकों ने सत्र शुरू होने से पहले थुल्लूर पुलिस स्टेशन से राज्य विधानमंडल तक पदयात्रा निकाली। टीडीपी संस्थापक और पूर्व मुख्यमंत्री एन.टी. रामाराव को वेंकटपालम में उनकी प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, टीडीपी विधायक और विधान पार्षद विधानसभा भवन के लिए रवाना हुए। हाथों में तख्तियां लिए हुए उन्होंने कौशल विकास मामले में नायडू की 'अवैध' गिरफ्तारी की निंदा करते हुए नारे लगाए।

## आंध्र हाईकोर्ट ने हिंसा से संबंधित मामलों में 79 तेदेपा नेताओं को दी जमानत

अमरावती, 21 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने गुरुवार को पुंगनूर और अंगल्लू हिंसा मामलों में विपक्षी तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के 79 नेताओं को जमानत दे दी। अदालत ने पुलिस को अगले आदेश तक विधान पार्षद राम भूपाल रेड्डी को गिरफ्तार नहीं करने का भी निर्देश दिया। हाईकोर्ट के आदेश से चित्तूर, मदनपल्ले और कडप्पा की जेल में बंद टीडीपी नेताओं को रिहा किया जाएगा। अदालत ने उन्हें हर मंगलवार को संबंधित थानों में उपस्थित होने के लिए कहा है। अन्य 30 टीडीपी नेता पहले ही इन दो मामलों में अग्रिम जमानत याचिका दायर कर चुके हैं। हाईकोर्ट ने पुलिस को अगले आदेश तक उन्हें गिरफ्तार न करने का निर्देश दिया। टीडीपी नेताओं को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू की यात्रा के दौरान चित्तूर जिले के पुंगनूर शहर में 4 अगस्त को हुई हिंसा के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। पुलिस ने कहा था कि कम से कम 160 आरोपियों की पहचान की गई और उनमें से 70 को गिरफ्तार कर लिया गया। हिंसा तब हुई थी जब पुलिस ने टीडीपी समर्थकों को शहर में प्रवेश करने से रोकने की कोशिश की थी। पुलिस ने आरोप लगाया था कि नायडू का काफिला निर्धारित मार्ग से हट गया और शहर में प्रवेश करने की कोशिश की जिसके परिणामस्वरूप हिंसा हुई। उसी दिन अन्नमया जिले के अंगल्लू गांव में हिंसा के लिए टीडीपी नेताओं पर भी मामला दर्ज किया गया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने एंगलुर में वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं के खिलाफ हिंसा भड़काने के लिए नायडू पर हत्या के प्रयास का भी मामला दर्ज किया था। नायडू और अन्य पर भारतीय दंड संहिता की धारा 120 बी (आपराधिक साजिश), 147 (दंगा), 148 (घातक हथियारों से हमला), 153 (दंगा भड़काने के इरादे से भड़काऊ भाषण), 307 (हत्या का प्रयास), 115 (अपराध के लिए उकसाना), 109 (लोक सेवक के खिलाफ अपराध के लिए उकसाना), 323 (स्वेच्छा से चोट पहुंचाना), 324 (घातक हथियारों का उपयोग करना), धारा 149 (आपराधिक धमकी) के साथ धारा 506 के तहत मामला दर्ज किया गया था।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.